संडे स्कूल पाठ्य पुस्तक

4

brethren
sunday
school

प्रकाशक :

ब्रदरन संडे स्कूल समिति

- **Brethren Sunday School**
  Text Book-4 (Hindi)

- **All Rights Reserved**

- *Original Text Books Published in Malayalam and English by :*
  The Brethren Sunday School Committee, Kerala

- *Project Co-Ordinator :*
  Jacob Mathen

- *Language Consultant :*
  Dr. Johnson C. Philip

- *Translated by :*
  Dora Alex (Delhi)

- *Copies Available From :*
  *** SBS Camp Centre, Puthencavu,**
  Chengannur, Kerala

  *** Brethren Sunday School Committee**
  P.B. No. 46, Pathanmthitta, Kerala

- *Printed, Published and Distributed By :*
  The Brethren Sunday School Committee

प्रस्तावना

आरंभकाल से ही ब्रदरन विश्वासी लोग अपने बच्चों को परमेश्वर का वचन सिखाने को काफी महत्व देते आये हैं। जैसे ही कोई बच्चा 'मम्मी' या 'पापा' बोलने लगता है वैसे ही उसे घर वाले ''यहोवा मेरा चरवाहा है'' जैसी छोटी बाइबल आयतें सिखाना शुरू कर देते हैं, जैसे ही वह नर्सरी में जाने लगता है वैसे ही उसे संडे स्कूल भी भेजना शुरू हो जाता है।

भारत में ब्रदरन मंडलियों की संख्या जब बढ़ने लगी तब कई भाईयों को लगा कि सभी मंडलियों के लिये उपयोगी एक संडे स्कूल पाठ्यक्रम बनाया जाना चाहिये। इस विषय में तत्पर काफी सारे भाईयों ने कई साल पहले **पत्तनमथिट्टा** नामक स्थान पर गास्पल हाल में एकत्रित होकर **''ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम''** की नींव डाली। अगले कुछ सालों में उन लोगों ने कुल दस कक्षाओं का पाठ्यक्रम मलयालम भाषा में तैयार किया और तब से मलयालमभाषी मंडलियों में इनका व्यापक उपयोग होता आया है।

इस बीच कई भाई-बहनों, मंडलियों एवं **SBS India** की मदद से इन पुस्तकों का अनुवाद अंग्रेजी एवं कई भारतीय भाषाओं में हुआ जिसके कारण इन पाठ्यपुस्तकों का उपयोग और भी व्यापक हो गया। हिंदीभाषी मंडलियों की व्यापकता के कारण हिन्दी संस्करण का सारे भारत में स्वागत हुआ। इस बीच हर जगह से मांग आने लगी कि जल्दबाजी में किये गये हिंदी अनुवाद को अब संशोधित किया जाये। इस मामले में भाई **जेकब मात्तन** ने काफी व्यक्तिगत दिल्चस्पी लेकर यह कार्य बहिन **डोरा एलेक्स** को सौंपा। पुराने अनुवाद का संशोधन करने के बदले यह बहिन सारे दसों पाठ्य पुस्तकों का नया एवं आधुनिक बोलचाल की हिंदी में अनुवाद कर रही हैं। इस कार्य को **ब्रदरन संडे स्कूल समिति**

एवं **SBS India** का पूर्ण अनुमोदन प्राप्त है। बहिन **डोरा एलेक्स** ने अभी तक जितने पुस्तकों का अनुवाद किया है उन सबका मैंने अवलोकन किया एवं उनको बहुत ही सरल, सुलभ एवं सटीक पाया है, मैं इस कार्य के लिये उनका एवं भाई **जेकब मात्तन** का अभिनंदन करता हूँ।

मनुष्य जन्म से ही पापी होता है, नया जन्म पाने के बाद उसे कई साल तक परमेश्वर का वचन सिखाया जाना जरूरी है जिससे कि उसका मन रूपांतर पाकर (रोमियों 12:1, 2) वह सही रीति से सोचने लगे। मुझे पूरा यकीन है कि इस महान कार्य के लिये **ब्रदरन संडे स्कूल पाठ्यक्रम** एकदम उचित माध्यम है। हिंदी के नये संस्करण के छपने से हिंदीभाषी मंडलियों को बच्चों एवं नये विश्वासियों के प्रति अपनी आत्मिक जिम्मेदारी निभाने के लिये 10 अति उत्तम पुस्तकें उपलब्ध हो जायेंगी।

विनीत

शास्त्री जानसन सी फिलिप

विषय सूची

पाठ		पृष्ठ संख्या
1.	इब्राहीम और लूत	1
2.	लूत का छुटकारा	4
3.	इसहाक	7
4.	याकूब की घर वापसी	10
5.	याकूब के अंतिम दिन	15
6.	जासूस	18
7.	तीन विद्रोही	22
8.	बिलाम	25
9.	राहाब	28
10.	आकान	31
11.	गिबोन के निवासी	34
12.	शरण नगर	37
13.	यिप्तह	40
14.	रूत और नाओमी	43
15.	रूत और बोअज़	46
16.	ईकाबोद	49
17.	अबीगैल	51
18.	सुलैमान का मंदिर	54
19.	मीकायाह	57
20.	एस्तेर रानी	60

21. बाबुल में बंधुआई 63
22. अय्यूब का परिवार 66
23. अय्यूब की विपदाएँ.. 68
24. अय्यूब का प्रतिफल 71
25. प्रेरित.. 74
26. नीकुदेमुस 77
27. सामरी स्त्री 80
28. बैतहसदा 83
29. जन्म का अंधा 85
30. विधवा की दमड़ियाँ.. 87
31. बीज बोने वाला.. 89
32. दाख की बारी 92
33. पहाड़ी उपदेश 95
34. प्रभु भोज 98
35. प्रभु का अधिकार.. 101
36. गतसमनी 104
37. डाकू.. 106
38. पिन्तेकुस्त 109
39. जन्म का लंगड़ा 112
40. उनेसिमुस 115

पाठ 1

इब्राहीम और लूत

उत्पत्ति 14:8-25; इब्रानियों 7:1-10

याद करें : धन्य है परमप्रधान ईश्वर, जिसने तेरे द्रोहियों को तेरे वश में कर दिया है। उत्पत्ति 14:20

मुख्य बिंदु : परमेश्वर अपने लोगों को सब कष्टों से छुड़ाते हैं।

पाठ परिचय :

कुछ राजाओं ने आपस में युद्ध किया, जिनमें से एक सदोम का राजा भी था। लूत उन दिनों में सदोम में रहता था। इब्राहीम के भतीजे लूत के कारण बाइबल में इस युद्ध का वृत्तांत दिया गया है।

परमेश्वर की दृष्टि में, उनकी संतानों के जीवन की घटनाएँ महत्वपूर्ण हैं। ''यहोवा की आँखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान भी उनकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं।'' भजन संहिता 34:15। इस बात को स्मरण रखना बच्चो, कि जिस विद्यालय में आप पढ़ते हैं, जिस घर में आप रहते हैं, अथवा जब आप यात्रा करते हैं, उन सब स्थानों पर परमेश्वर की दृष्टि रहती है।

पाठ :

सदोम का राजा और जो उसके साथ थे, वे युद्ध में हार गए। विजयी राजा सब कुछ लूटकर ले गया। और उस शहर के सभी लोगों को गुलाम बनाने के लिए पकड़कर ले गया। लूत को भी उसकी धन संपत्ति के साथ ले गया।

इब्राहीम ऊर नामक नगर में रहता था, जब परमेश्वर ने उसे दर्शन देकर कहा कि यहाँ से उस देश को चला जा, जो मैं तुझे दिखाऊँगा। परमेश्वर की आज्ञानुसार इब्राहीम चल पड़ा। लूत इब्राहीम का भतीजा था। जब उसे पता चला कि परमेश्वर ने उसके चाचा से बातें की हैं;

तब उसने भी परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया और इब्राहीम के साथ चल दिया। कुछ समय तक वे एक-दूसरे के साथ प्रसन्नतापूर्वक रहे और यात्राएँ कीं। परन्तु जब दोनों की धन-संपत्ति बहुत बढ़ गई, तब वे अलग हो गए। लूत ने तराई और उपजाऊ भूमि में बसने के लिए अपने चाचा इब्राहीम को छोड़ दिया, जो परमेश्वर का भय मानने वाला और अच्छा व्यक्ति था। इस प्रकार लूत सदोम पहुँचा। परन्तु सदोम के निवासी बहुत दुष्ट थे।

बच्चो, यदि हम बुरे लोगों की संगति करेंगे, तो निश्चित रूप से खतरे में पड़ जाएँगे। लूत के साथ भी ऐसा ही हुआ।

जो व्यक्ति उस युद्ध से भागकर बच निकला था, उसने जाकर इब्राहीम को लूत के बारे में समाचार दिया। इब्राहीम दुखी हुआ और उसने परमेश्वर से प्रार्थना की। कठिन समयों में, हमें भी सबसे पहले परमेश्वर से सहायता माँगनी चाहिए। फिर इब्राहीम लूत को छुड़ाकर वापस लाने की तैयारी करने लगा।

इब्राहीम ने अपने 318 शिक्षित युद्ध कौशल में निपुण दासों को लेकर, जो उसके कुटुंब में उत्पन्न हुए थे, अस्त्र-शस्त्र धारण करके उनका पीछा किया। बच्चो, इब्राहीम को इतना साहस कैसे प्राप्त हुआ? सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर विश्वास करने के द्वारा! हमारे परमेश्वर का नाम ''सेनाओं का यहोवा'' है। परमेश्वर हमें सभी कष्टों से छुड़ाने की सामर्थ रखते हैं।

इब्राहीम ने अपने दासों के अलग-अलग दल बाँधकर, रात को उन पर चढ़ाई की। और वह सारे धन को, और अपने भतीजे लूत को और उसके धन को, और स्त्रियों को, और सब बन्धुओं को लौटा ले आया।

तब शालेम का राजा मल्कीसेदेक, जो परमप्रधान ईश्वर का याजक था, रोटी और दाखमधु ले आया। और उसने परमप्रधान ईश्वर की ओर से आशीष दी। इब्राहीम ने मल्कीसेदेक को सब वस्तुओं का दशमांश दिया। यह कार्य परमेश्वर के प्रति धन्यवादी होने को प्रकट करता है। हम और हमारा सब कुछ परमेश्वर दान है। इब्राहीम ने समस्त लूट को

सदोम के राजा को दे दिया। वह उसे अपने पास रख सकता था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। हम देखते हैं कि इब्राहीम धन के लोभ से मुक्त था (1 तीमुथियुस 6:10)।

इब्राहीम ने सदोम के राजा को समस्त लूट दे दी, साथ ही उसको स्वर्ग और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में भी बताया। (उत्पत्ति 14:23) हमें भी, प्रभु यीशु मसीह के बारे में दूसरों को बताने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। और प्रत्येक अवसर का सदुपयोग करना चाहिए।

मल्कीसेदेक = धार्मिकता का राजा

शालेम = शांति (''यरूशलेम'' भी हो सकता है)

इस घटना के समय इब्राहीम का नाम ''अब्राम'' था। कुछ समय बाद परमेश्वर ने उसका नाम ''इब्राहीम'' रखा, जिसका अर्थ है ''जातियों का पिता''।

प्रश्न :

1. लूत ने इब्राहीम का साथ क्यों छोड़ दिया?
2. कौन लूत को बन्धुआ बनाकर ले गया?
3. इब्राहीम ने लूत को कैसे छुड़ाया?
4. कौन से दो महान पुरुष इब्राहीम से मिले, जब वह विजयी होकर लौटा?
5. मल्कीसेदेक कौन था? इब्राहीम ने उसे क्या दिया?

पाठ–2

लूत का छुटकारा

उत्पत्ति : अध्याय–19

याद करें : पृथ्वी पर की नहीं, परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। कुलु. 3:1–2

मुख्य बिंदु : स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

पाठ परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा था कि किस प्रकार इब्राहीम ने लूत को बंधुआई से छुड़ाया। तब फिर लूत इब्राहीम के साथ रह सकता था। परन्तु उसने गलती की, और वापस सदोम जाकर फिर से वहाँ रहने लगा। परमेश्वर अपनी संतानों की ताड़ना करते हैं, जब वे पाप करते हैं। परन्तु यदि वे फिर भी पाप में बने रहते हैं, तो दण्ड पाएँगे। (इब्रानियों 12:6–7)। लूत के जीवन में ऐसा ही हुआ।

पाठ :

सदोम और अमोरा के लोग बहुत दुष्ट थे, और परमेश्वर के विरुद्ध भयंकर पाप कर रहे थे। (उत्पत्ति 13:31)। उनके भारी पाप के कारण (उत्पत्ति 18:20), परमेश्वर ने उन शहरों का नाश करने का निर्णय लिया। धर्मी परमेश्वर पाप को दंड दिए बगैर नहीं रह सकते। जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए, वे सब आग की झील में डाले जाएँगे (प्रकाशितवाक्य 20:15)। परमेश्वर ने किसी अन्य शहर को सदोम और अमोरा को तरह, आग और गन्धक बरसा कर नाश नहीं किया। प्रेरित पतरस कहते हैं कि परमेश्वर ने सदोम और अमोरा शहरों से जो किया, वह इस बात का उदाहरण है कि भविष्य में अधर्मियों के साथ क्या होगा (2 पतरस 2:6)। यद्यपि एक बार परमेश्वर ने कहा था, कि वे नीनवे को नाश कर देंगे, परन्तु परमेश्वर ने उस न्याय को रोक लिया, क्योंकि उस शहर के लोग पश्चाताप करके अपने दुर्मार्गों से फिर गए। परमेश्वर टूटे मन

वालों को और पश्चाताप करने वालों को क्षमा कर देते हैं। (भजन 34:18)।

परमेश्वर ने इब्राहीम को बताया कि वे सदोम और अमोरा को नाश करने वाले हैं (उत्पत्ति 18:16-38)। परमेश्वर अपने रहस्य उन लोगों पर प्रकट करते हैं जो परमेश्वर के समीप रहते हैं।

इब्राहीम ने लूत के लिए विनती की और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी। परमेश्वर के लोगों को एक दूसरे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। आपको भी अपने मित्रों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए, जो अस्वस्थ हैं, कष्ट उठाते हैं, अथवा जिन्होंने उद्धार प्राप्त नहीं किया।

लूत को बचाने के लिए दो स्वर्गदूत सदोम पहुँचे। उस समय लूत शहर के द्वार पर बैठा था। पुराने नियम के समयों में, नगर का द्वार एक महत्वपूर्ण स्थान माना जाता था, क्योंकि उस नगर के वृद्ध लोग महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करते और लोगों की शिकायत सुनने के लिए वहाँ एकत्र होते थे (व्यवस्थाविवरण 21:19; उत्पत्ति 34:20)।

स्वर्गदूतों को देखकर लूत अपने स्थान से उठा, और उनको दण्डवत् किया। उत्पत्ति 18:2 में हम पढ़ते हैं कि जब इब्राहीम ने स्वर्गदूतों को देखा तब वह उनसे मिलने के लिए दौड़ कर गया। संभवत: सदोम में रहते हुए लूत ने गलत बातें सीखी थीं; परन्तु वह अतिथि सत्कार नहीं भूला था। वह उन्हें अपने घर ले गया।

सदोम के दुष्ट लोगों ने रात को आकर लूत के घर को घेर लिया। वे लोग उन दो पुरुषों को बाहर ले जाकर उन्हें हानि पहुँचाना चाहते थे। लूत ने बाहर जाकर उनसे विनती की, कि वे ऐसी दुष्टता न करें, परन्तु उन्होंने लूत की बात न सुनी।

स्वर्गदूतों ने लूत से कहा कि वे सदोम का नाश करने वाले हैं, अत: वह अपने परिवार के साथ इस स्थान से शीघ्र निकल जाए। लूत ने अपने दामादों को समझाया कि वे भी वहाँ से निकल जाएँ, परन्तु उन दुष्ट पुरुषों ने लूत का मज़ाक उड़ाया। सदोम में रहते हुए लूत और उसके परिवार ने बहुत संपत्ति अर्जित की थी, जिस कारण वे वहाँ से निकलना नहीं चाहते थे। जब लूत विलंब करता रहा तब उन स्वर्गदूतों ने

लूत और उसकी पत्नी और उनकी दोनों बेटियों का हाथ पकड़ लिया, क्योंकि परमेश्वर की दया उन पर थी। स्वर्गदूतों ने लूत पर दया करके उसकी विनती के अनुसार उन्हें सोअर नामक स्थान पर जाने दिया। सोअर का अर्थ है ''छोटा''।

लूत और उसका परिवार जब सोअर के निकट पहुँचा तब परमेश्वर ने सदोम और अमोरा पर आकाश से गन्धक और आग बरसाई, और उन नगरों को नाश कर दिया। स्वर्गदूतों ने लूत और उसके परिवार से कहा था, कि पीछे की तरफ मत देखना; परंतु लूत को पत्नी ने आज्ञा नहीं मानी। उसने अपने पीछे की ओर देखा, और वह नमक का खम्भा बन गई। लूत ने अपनी पत्नी को और अपनी सारी संपत्ति को खो दिया, क्योंकि उसने सदोम के दुष्ट लोगों के बीच में अपना घर बसाया था।

यह पृथ्वी भी, जिस पर हम रहते हैं, अंत में आग से नाश की जाएगी। (2 पतरस 3:10)। परन्तु उससे पहले प्रभु आकर उन लोगों को अपने साथ ले जाएँगे, जिन्होंने प्रभु यीशु पर विश्वास करके उद्धार प्राप्त किया (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-17)। परन्तु जिन्होंने उद्धार प्राप्त नहीं किया, वे आग की झील में डाल दिए जाएँगे। (प्रकाशितवाक्य 20:14)।

टिप्पणी :

यह माना जाता है खारा सागर (मृत सागर) के उथले भाग पर ही पहले सदोम और अमोरा नगर बसे थे। कुछ अरबी लोग इसे लूत का समुद्र भी कहते हैं। यह 50 मील लंबा और लगभग 11 मील चौड़ा है। मृत सागर की सतह समुद्र तल से 1340 फीट नीची है। इसके पानी का घनत्व सामान्य समुद्र के पानी से बहुत अधिक होने के कारण इसमें कोई डूब नहीं सकता।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने सदोम और अमोरा को नाश क्यों किया?
2. ''नगर फाटक'' का क्या महत्व है?
3. लूत ने किस नगर में शरण ली?
4. इस पृथ्वी का अंत क्या होगा?

पाठ–3

इसहाक

उत्पत्ति 21:1–8; 22:1–19

याद करें : विश्वास ही से इब्राहीम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया, और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। इब्रानियों 11:17

मुख्य बिंदु : परमेश्वर अपने वायदे को पूरा करने में समर्थ हैं।

पाठ परिचय :

मान लीजिए कि आपके पिता आपको एक साइकिल देने का वादा करते हैं। निश्चित रूप से आप तत्परता से उस दिन की प्रतीक्षा करेंगे जब वे आपके लिए साइकिल खरीदेंगे। जब वह आपको मिल जाएगी, तब आप बहुत ही खुश होंगे। आज हम उस महान प्रतिज्ञा के विषय में सीखेंगे, जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की थी।

पाठ :

परमेश्वर ने इब्राहीम से अनेक वायदे किए, जिनमें से एक यह था कि उसकी संतान आकाश के तारों की तरह असंख्य होगी। सारा ने परमेश्वर के वायदे पर शक किया, क्योंकि वे बहुत बूढ़े हो चुके थे, परन्तु इब्राहीम ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया। परमेश्वर ने अपने समय पर उन्हें एक पुत्र दिया। परमेश्वर सदैव अपने वायदे को पूरा करते हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह हमारी इच्छानुसार हो। सर्वज्ञानी परमेश्वर जानते हैं कि हमें कब और किस वस्तु की आवश्यकता है, और वह इसे अपने समय पर प्रदान करते हैं।

जब इब्राहीम 99 वर्ष का हुआ, तब परमेश्वर ने फिर उससे कहा, कि उसे एक पुत्र प्राप्त होगा और उसका नाम इसहाक रखना। (उत्पत्ति 17:19)। हो सकता है कि आपका नाम आपके माता–पिता ने अथवा किसी रिश्तेदार ने रखा हो, परन्तु बाइबल में कुछ ऐसे नाम हैं, जो स्वयं

परमेश्वर ने रखे, जैसे–आदम, यूहन्ना और यीशु। इसहाक का नाम भी उसके उत्पन्न होने से पहले ही परमेश्वर ने रखा। इसहाक के जन्म के समय इब्राहीम की उम्र 100 वर्ष और सारा की उम्र 90 वर्ष थी।

इब्राहीम बहुत धनी था। एक दिन उसने अपने पुत्र इसहाक के लिए बड़ी जेवनार की। इसहाक अपने पिता की संपत्ति का वारिस और अपनी माता का अति प्रिय था। अक्सर इस तरह के लड़के बिगड़ जाते हैं, परन्तु इसहाक नम्र, आज्ञाकारी और परमेश्वर का भय मानने वाला था।

फिर एक दिन परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा, ''अपने एकलौते पुत्र इसहाक को, जिससे तू प्रेम रखता है, संग लेकर मोरिय्याह देश में चला जा, और वहाँ उसको एक पहाड़ के ऊपर जो मैं तुझे बताऊँगा, होमबलि करके चढ़ा।''

हमें अपनी सबसे प्रिय वस्तु को भी प्रभु को देने के लिए तैयार होना चाहिए। परमेश्वर ने भी अपने अतिप्रिय एकलौते पुत्र को हमारे लिए दे दिया। (यूहन्ना 3:16)। बिना विवाद और कुड़कुड़ाए इब्राहीम ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया।

अगले दिन इब्राहीम तड़के उठा और अपने गदहे पर काठी कसकर अपने दो सेवकों और इसहाक को संग लेकर चल दिया। बाइबल में हम लोगों के विषय में पढ़ते हैं, जो अपना महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए बहुत सवेरे उठे (देखें : यहोशू 6:12; 7:16)। तीसरे दिन इब्राहीम ने उस स्थान को दूर से देखा जहाँ उसे होमबलि चढ़ाना था। सेवकों को पीछे छोड़कर इब्राहीम और इसहाक आगे चले। इब्राहीम ने लकड़ी अपने पुत्र इसहाक पर लादी, और आग और छुरी को अपने हाथ में लिया। यह कार्य इब्राहीम के लिए कितना कठिन रहा होगा!

अपने कंधों पर लकड़ी लादकर उस पहाड़ पर चढ़ता हुआ इसहाक, हमारे प्रभु यीशु मसीह की तस्वीर है, जो अपना क्रूस उठाकर कलवरी की पहाड़ी पर चढ़े थे।

मार्ग में इसहाक ने पूछा, ''हे मेरे पिता, आग और लकड़ी तो हैं, परन्तु होमबलि के लिए भेड़ कहाँ है?'' इब्राहीम ने उसे उत्तर दिया, ''हे मेरे पुत्र, परमेश्वर स्वयं होमबलि की भेड़ का उपाय करेंगे!'' इब्राहीम

के ये शब्द, प्रभु यीशु मसीह के विषय में भविष्यद्वाणी थी। प्रभु यीशु, परमेश्वर के द्वारा तैयार किया गया मेम्ना था, जिसे हमारे पापों के लिए बलिदान होना था। परमेश्वर के द्वारा बताए गए उस स्थान पर पहुँचकर इब्राहीम ने एक वेदी बनाई और लकड़ी को चुन-चुन कर उस पर रखा। अपने पुत्र इसहाक को बान्धकर वेदी के ऊपर रख दिया। इसहाक की उम्र लगभग 20 वर्ष थी। वह विरोध कर सकता था, अथवा भाग सकता था। परन्तु उसने पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ अपने पिता को वह सब करने दिया। स्मरण रखें, कि हमारे प्रभु यीशु ने भी स्वेच्छा से अपने आपको हमारे लिए दे दिया।

यह हमें सिखाता है कि बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए। अपने माता-पिता का आदर करने की आज्ञा एक वायदे के साथ दी गई है, कि ''तेरा भला हो और तू पृथ्वी पर बहुत दिन तक जीवित रहे।'' (इफिसियों 6:1-3)।

अपने पुत्र को मारने के लिए जब इब्राहीम ने छुरी उठाई, तब यहोवा के दूत ने उसे रोक दिया। इब्राहीम ने आँखें उठाईं और एक मेढ़े को देखा जो अपने सींगों से झाड़ी में फँसा हुआ था। उस मेढ़े को होमबलि चढ़ाकर पिता और पुत्र वापस घर लौट गए। इब्राहीम के विश्वास और आज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर ने अपने वायदे को दोहराया।

टिप्पणी :

* इसहाक = हँसी अथवा जो हँसता है

* मोरिय्याह पर्वत पर बाद में वह मंदिर बना, जहाँ बलिदान चढ़ाए जाते थे। 2 इतिहास 3:1

प्रश्न :

1. इसहाक के जन्म के समय इब्राहीम और सारा की क्या उम्र थी?
2. इसहाक का बलिदान कैसे हमारे प्रभु यीशु की क्रूस की मृत्यु की तस्वीर है?
3. इब्राहीम ने किस पर्वत पर होमबलि के लिए वेदी बनाई?
4. ''अपने पिता और माता का आदर कर'' इस आज्ञा की क्या विशेषता है?

पाठ-4

याकूब की घर वापसी

उत्पत्ति, अध्याय 31-35

याद करें : मत डर, क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ मैं तेरे वंश को पूर्व से ले आऊँगा, और पश्चिम से भी इकट्ठा करूँगा। यशायाह 43:5

मुख्य बिंदु : परमेश्वर की संतानों को परमेश्वर के मार्गों को जानना चाहिए।

पाठ परिचय :

सन् 1772 में, कोहरे से भरी एक काली रात की यह घटना है। लंदन में एक निराश और हताश पुरुष अपने घर से निकला। घने कोहरे में अपना मार्ग ढूँढ़ते हुए आगे बढ़ा, और थेम्स नदी तक जाने के लिए किराए के घोड़ा-गाड़ी में चढ़ गया। उसने आत्महत्या करने का निश्चय किया था।

तांगे वाले ने सावधानी बरती परंतु घने कोहरे के कारण वह रास्ता भटक गए। 15 मिनट की दूरी पर वह नदी थी, परन्तु डेढ़ घंटे में भी वे वहाँ पहुँच न सके। कोहरे के कारण वे एक-दूसरे को देख नहीं पा रहे थे। वह पुरुष गाड़ी से उतरा और किराया देकर आगे बढ़ गया। अंधेरे में टटोलकर जब वह आगे बढ़ा तो वह यह जानकर आश्चर्यचकित हुआ कि वह अपने ही घर के दरवाजे पर खड़ा था!

घर के अंदर आकर वह घुटनों पर बैठ गया, और उसने प्रभु से माफी माँगी। वह व्यक्ति अंग्रेजी कवि विलियम कूपर थे। उनका लिखा एक गीत है ''परमेश्वर अद्भुत रीति से कार्य करते हैं'' हमारे मार्ग परमेश्वर के मार्ग नहीं हैं। हमें परमेश्वर के मार्गों को जानना चाहिए। आइए हम याकूब के जीवन से सीखें, कि उसने किस प्रकार परमेश्वर के मार्गों को समझा।

पाठ :

इसहाक के दो पुत्र थे–एसाव और याकूब। उनके उत्पन्न होने से पहले ही छोटे बेटे याकूब को परमेश्वर की ओर से विशेष आशीषों का वायदा प्राप्त हुआ। यह बात उसकी माता ने उसे बताई। अत: वह उसे अनुचित रूप से अपना बना लेना चाहता था। परमेश्वर के समय की प्रतीक्षा करने के बजाय उसने अपनी चालाकी से उन आशीषों को प्राप्त करना चाहा। याकूब ने उस अवसर का लाभ उठाया जब एसाव बहुत भूखा था। रोटी और दाल के बदले याकूब ने एसाव से उसके पहिलौठे का अधिकार ले लिया। उसने अपने पिता इसहाक को धोखा देकर उससे भी आशीषें प्राप्त कीं। ये परमेश्वर के मार्ग नहीं थे। अच्छे कार्यों के लिए गलत मार्गों का उपयोग करने की अनुमति परमेश्वर कभी नहीं देते। याकूब को अपने जीवनकाल में ही अपने धोखे का दंड मिल गया।

एसाव से डरकर याकूब बेर्शेबा से पद्दनराम को भाग गया। जब वह अपने माता-पिता से दूर हो गया और अकेला हो गया, तब वह परमेश्वर के निकट आया। उसने एक दर्शन देखा जब वह बेतेल में था, और उसका मन परिवर्तन हो गया। उसने वायदा किया कि परमेश्वर जो कुछ उसे देंगे, उसका दशवांश वह परमेश्वर को देगा।

बेतेल से चलकर वह अपने मामा लाबान के यहाँ पद्दनराम को गया। वहाँ उसने लाबान की बेटियों, लिआ: और राहेल से विवाह किया। परमेश्वर ने उसे संतान और धन दोनों दिए। जो लोग परमेश्वर को देते हैं वे प्रतिफल पाते हैं। (देखें : मलाकी 3:10)।

जब लाबान और उसके पुत्रों ने देखा कि परमेश्वर ने याकूब को आशीष दी है, तब वे याकूब से ईर्ष्या करने लगे। याकूब अपनी शिकायतों को परमेश्वर के पास ले गया। जब दूसरे लोग आपको कष्ट देते हैं तब आपको उसी प्रकार का बदला उनसे नहीं लेना चाहिए। आप केवल परमेश्वर को अपना दुख बताएँ। परमेश्वर आपकी सहायता करेंगे। बेतेल में परमेश्वर ने याकूब से वायदा किया कि वे याकूब के साथ रहकर उसकी सहायता करेंगे और उसे उसके देश में वापस पहुँचाएंगे। (उत्पत्ति

28:15)। अब परमेश्वर ने याकूब को आज्ञा दी ''अपने पितरों के देश और अपनी जन्मभूमि को लौट जा, और मैं तेरे संग रहूँगा।'' (उत्पत्ति 31:3)।

परमेश्वर की इच्छा जानने पर याकूब अपने परिवार सहित अपनी जन्मभूमि को जाने के लिए तैयार हो गया। उस समय याकूब के एक बेटी और ग्यारह बेटे थे। उसकी पत्नियों और बच्चों को ऊँटों पर चढ़कर यात्रा करनी थी। सात दिन की यात्रा करके वे गिलयाद के पहाड़ी क्षेत्र में पहुँचे और वहाँ डेरे डाले। लाबान अपने लोगों के साथ उसका पीछा करते हुए वहाँ पहुँचा। वे याकूब को रोकना चाहते थे, परन्तु परमेश्वर ने लाबान का चेतावनी दी कि यह याकूब को कोई हानि न पहुँचाए। देखो, परमेश्वर कितने दयालु हैं! याकूब के साथ वाचा बांधकर और उसे और उसके परिवार को आशीष देकर लाबान अपने घर लौट गया।

अब याकूब को एसाव का सामना करना था। याकूब ने सोचा था कि उसने एसाव से जो धोखा किया था उसके कारण एसाव अब तक उससे क्रोधित होगा। (उत्पत्ति 32:7)। उसने आँसू बहाकर परमेश्वर से प्रार्थना की। (उत्पत्ति 32:9-12)। याकूब ने अपनी पत्नियों, बच्चों और पशुओं को यब्बोक नदी के पार उतार दिया और याकूब अकेला रह गया। यब्बोक एक छोटी नदी है, जो गिलयाद की पहाड़ियों से आकर पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है और यरदन में मिल जाती है।

जिस रात याकूब अकेला था, तब परमेश्वर के एक दूत ने आकर सुबह होने तक उससे मल्लयुद्ध किया। परमेश्वर के दूत ने याकूब को आशीष दी क्योंकि उसने कहा, ''जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे, तब तक मैं तुझे जाने न दूँगा।'' उसने याकूब का नाम बदलकर इस्राएल रखा। याकूब नाम का अर्थ है ''धोखेबाज'' और इस्राएल नाम का अर्थ है ''परमेश्वर के साथ राजकुमार''। उस दिन एक धोखेबाज, परमेश्वर के साथ राजकुमार बन गया। परमेश्वर उनके जीवन को बदल देंगे, जो लोग सच्चे हृदय से प्रार्थना करते हैं, और उन्हें बहुतायत से आशीषित करेंगे।

याकूब की प्रार्थना के उत्तर में परमेश्वर ने एसाव के हृदय को कोमल कर दिया और उसने अपने भाई को प्रेम से स्वीकार किया। उसने अपने भाई की सहायता का वायदा भी किया, परन्तु याकूब ने एसाव के प्रस्तावों को अस्वीकार किया और अकेले ही आगे बढ़ा। एसाव वापस सेईर को चला गया।

शकेम में रहते हुए याकूब पर विपत्ति आई। उसके पुत्रों ने एक शहर को नष्ट कर दिया, अतः याकूब शोक और भय से भर गया। तब परमेश्वर ने याकूब से 30 मील दूर बेतेल में जाकर वहाँ एक वेदी बनाने को कहा। आपको याद होगा, कि जब याकूब अपना घर छोड़कर भाग रहा था, तब बेतेल पहुँचकर उसने एक दर्शन देखा था, और वहाँ उसने एक पत्थर का खंभा खड़ा किया था। उसने फिर मन्नत मानी थी, कि यदि परमेश्वर मेरे संग रहकर इस यात्रा में मेरी रक्षा करे, और मैं अपने पिता के घर कुशल क्षेम से लौट आऊँ, तो यह पत्थर का खंभा परमेश्वर का भवन ठहरेगा। परमेश्वर याकूब को अपना वायदा पूरा करने का अवसर दे रहे थे।

याकूब के परिवार और सेवकों के पास मूर्तियाँ थीं और ऐसे कुण्डल जिन पर अन्यजातियों के देवी देवताओं के रूप बने हुए थे, उन सबको लेकर याकूब ने मिट्टी में गाड़ दिया, क्योंकि वह जानता था कि पवित्र परमेश्वर ऐसी बातों से अप्रसन्न होते हैं। अपने घर को पवित्र करने के पश्चात् उसने बेतेल में एक वेदी बनाकर परमेश्वर की आराधना की। परमेश्वर ने फिर से उसे दर्शन देकर अपने वायदों को दोहराया। पहले की तरह ही याकूब ने उस स्थान पर पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस स्थान का नाम बेतेल (परमेश्वर का भवन) रखा। (उत्पत्ति 35:15)।

बेतेल से चलकर वे एप्राता में आए जहाँ बिन्यामीन को जन्म देते समय उसकी पत्नी राहेल की मृत्यु हो गई। एक बार राहेल ने विद्रोह करते हुए कहा था ''मुझे संतान दे, नहीं तो मैं मर जाऊँगी।'' (उत्पत्ति 30:1)। अब उसके पास पुत्र थे, परन्तु संतान का सुख प्राप्त करने से

पहले ही उसकी मृत्यु हो गई।

हमें अपने मुँह से निकलने वाली बातों के प्रति सावधान रहना चाहिए।

टिप्पणी :

बेतेल (परमेश्‍वर का भवन) पहले लूज कहलाता था। यह बेर्शेबा से करीब 48 मील की दूरी पर है। राहेल की कब्र बेतलहम से एक मील की दूरी पर है। पहले यहाँ पत्थरों से पिरामिड बना था, परन्तु वर्तमान कब्र मुसलमानों ने बनाई है।

प्रश्‍न :

1. याकूब ने बेतेल में क्या मन्नत मानी थी?
2. याकूब को हानि पहुँचाए बगैर ही लाबान क्यों घर लौट गया?
3. इस्राएल का क्या अर्थ है? याकूब कैसे इस्राएल बना?
4. राहेल की मृत्यु कहाँ पर हुई?

पाठ-5

याकूब के अंतिम दिन

उत्पत्ति अध्याय 49-50

याद करें : यहोवा के भक्तों की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल है। भजन संहिता 116:15

मुख्य बिंदु : परमेश्वर की दृष्टि में उनकी संतानों की मृत्यु अनमोल है।

पाठ-परिचय :

21 दिसंबर 1899 में श्रीमान डी.एल. मूडी ने अस्वस्थ होने के कारण अपने एक कार्यक्रम को अधूरा छोड़ा और घर वापस आए। अपने परिवार से उन्होंने कहा, ''मैं निराश नहीं हूँ। जब तक मैं उपयोगी हूँ तब तक तक जीना चाहता हूँ। परन्तु जब मेरा कार्य पूरा हो जाए तब मैं ऊपर जाना चाहता हूँ।'' बैचेनी भरी रात गुज़ारने के बाद सुबह मूडी जागे। उन्होंने कहा, ''पृथ्वी पीछे हट रही है, स्वर्ग मेरे सामने खुल रहा है!'' उनके पुत्र श्रीमान विल ने सोचा कि उनके पिता जी स्वप्न देख रहे हैं। परन्तु श्रीमान मूडी ने कहा, ''नहीं, यह स्वप्न नहीं है। मेरे बेटे, यह अति सुंदर है। यह एक अवचेतनावस्था है। यदि यही मृत्यु है, तो यह मधुर है। यहाँ वादियाँ नहीं हैं। परमेश्वर मुझे पुकार रहे हैं, और मुझे जाना ही होगा।'' अपने संतों की मृत्यु परमेश्वर की दृष्टि में अनमोल है। आइए देखें कि याकूब के अंतिम दिन कैसे थे।

पाठ :

अपने जीवन के अंतिम वर्षो में याकूब अपने परिवार के साथ मिस्र देश में रहते थे। मिस्र का राजा फिरौन भी उनका आदर करता था। अपनी उम्र के बारे में फिरौन को दिया गया उत्तर प्रकट करता है कि याकूब का अपने जीवन के प्रति क्या दृष्टिकोण था। उसने कहा था, ''मैं तो एक सौ तीस वर्ष परदेशी होकर अपना जीवन बिता चुका हूँ।''

जिसने अपना जीवन परदेशी का सा माना, निश्चित रूप से उसने

इस संसार को अपना वास्तविक घर नहीं माना। हम भी इस संसार में परदेशी हैं। यह एक धन्य बात है कि हम जानते हैं कि हमारा वास्तविक घर है। हमें इस विचार के साथ इस संसार में जीवन व्यतीत करना है कि हम यहाँ मात्र मुसाफिर और परदेशी हैं।

सत्रह वर्ष के बाद याकूब की मृत्यु मिस्र देश में हुई। इस प्रकार उसने अपनी जीवन यात्रा को समाप्त किया। उत्पत्ति 47 से 50 तक के अध्यायों में याकूब के अंतिम दिनों और मृत्यु व गाड़े जाने का विवरण दिया गया है। उसके पिता इसहाक और दादा इब्राहीम के अंतिम दिनों के विषय में केवल यही कहा गया है कि बुढ़ापे की आयु में मृत्यु हो गई। (उत्पत्ति 25:8; 35:29)।

अपना अंत निकट जानकर याकूब ने अपने पुत्र यूसुफ को बुलाकर कहा, ''मुझसे शपथ खा, कि मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम मुझे मिस्र से कनान ले जाकर मेरे बापदादों के कब्रस्तिान में रखोगे।'' यूसुफ ने शपथ खाई और कहा, ''मैं तेरे वचन के अनुसार करूँगा।''

यूसुफ के दो पुत्र थे, मनश्शे और एप्रैम। यूसुफ उन्हें अपने पिता याकूब के पास लाया कि वह उन्हें आशीष दे। उन्हें आशीष देने से पहले याकूब ने उन्हें अपने पुत्रों की तरह गोद लिया। इसी कारण जब इस्राएल के गोत्रों का उल्लेख होता है, तो बाद में एप्रैम और मनश्शे के गोत्रों को भी उनके साथ गिना जाता है। मिस्र के प्रधानमंत्री के पुत्र होने के कारण वे वहाँ ऊँची पदवी प्राप्त कर सकते थे। परन्तु याकूब अच्छी तरह जानता था कि उनके लिए मिस्र में महान गिने जाने से बेहतर परमेश्वर के द्वारा चुने हुए अपने भाइयों के साथ गिना जाना था। यूसुफ भी इससे सहमत था। अनेक वर्षों के पश्चात् मूसा ने भी परमेश्वर के लोगों के साथ दुख उठाने को मिस्र की राजगद्दी से बेहतर समझा। (इब्रा. 11:24)। याद रखें, मसीह के साथ कष्ट उठाना इस संसार की दौलत से कहीं बहुमूल्य है।

याकूब ने अपने अन्य पुत्रों को भी आशीर्वाद दिया। उसके अंतिम शब्द उन गोत्रों के विषय में भविष्यवाणी थी। उसमें सबसे महत्वपूर्ण

यहूदा को दिया गया आशीर्वाद था। उसमें शीलो के आने के विषय में कहा गया है। यह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आगमन के विषय में की गई भविष्यवाणी है। प्रभु यीशु यहूदा के गोत्र में जन्म लेने वाले थे। याकूब ने अपने पुत्रों को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर उन्हें उस देश में पहुँचाएंगे जिसका वायदा परमेश्वर ने उनके बापदादों से किया था। (उत्पत्ति 48:21) परमेश्वर के वायदों पर याकूब का विश्वास दृढ़ था।

तब याकूब ने अंतिम साँस ली। कितनी महिमामय मृत्यु थी वह! परमेश्वर की संतानों की मृत्यु, अपने प्रियजनों को छोड़कर, उस स्थान की ओर यात्रा करना है, जहाँ मसीह विद्यमान है। यह प्रभु की दृष्टि में अनमोल है।

मिस्र के वैद्यों ने याकूब के शरीर में सुंगधद्रव्य भरे। सुगंधद्रव्य भरने से मृत देह को बहुत समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। भारी विलाप के साथ याकूब के पुत्र उसके मृत शरीर को कनान ले गए और उसे मकपेला की गुफा में मिट्टी दी। यहीं पर इब्राहीम, सारा, इसहाक और रिबका को दफन किया गया था। (उत्पत्ति 23; 49:31-33)।

प्रश्न :

1. याकूब कितने वर्ष जीवित रहा?
2. एक भक्त व्यक्ति का जीवन ''परदेशी के रूप में बिताए गए वर्ष'' क्यों कहलाते हैं?
3. युसूफ के पुत्रों के क्या नाम थे?
4. उत्पत्ति 49:10 में कहा गया ''शीलो'' कौन है?

पाठ-6

जासूस

गिनती, अध्याय 13-14

याद करें :

यहोवा तेरे आने जाने में तेरी सहायता अब से लेकर सदा तक करता रहेगा। भजन 121:8

मुख्य बिंदु : प्रभु के प्रति विश्वस्त रहें।

पाठ परिचय :

कुछ लोग अपने स्वभाव और रवैए में बड़े हठीले होते हैं। क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं? वे कैसे व्यवहार करते हैं? क्या आप ज़िद करते हैं? मूसा बहुत ही हठीले समूह का अगुआ था। इस्राएली लोगों ने अनेकों अवसरों पर अनाज्ञाकारिता दिखाई। आइए सीखें कि ऐसे एक अवसर पर परमेश्वर ने उनके साथ कैसा व्यवहार किया।

पाठ :

हमने सीखा था कि इस्राएली लोग मिस्र देश में जाकर बस गए, जब यूसुफ मिस्र का शासक था। वर्षों वहाँ रहकर वे संख्या में बहुत बढ़ गए। यूसुफ की मृत्यु के पश्चात् मिस्र के नए राजाओं ने इस्राएलियों को बंधुआ मज़दूर बना दिया। अपने कष्टों से परेशान होकर उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की। परमेश्वर ने उनका रोना सुना और उनके कष्टों को देखा, और उन्हें छुड़ाने के लिए मूसा को भेजा। परमेश्वर ने मूसा के द्वारा इस्राएलियों को फिरौन की दासता से छुटकारा दिया, और वे वायदे के देश की ओर चल पड़े। जब वे मिस्र में रहने आए थे, तब वे मात्र सत्तर लोग थे। परन्तु अब वे एक बड़ी भीड़ बन चुके थे। मात्र पुरुष ही छः लाख थे। (गिनती 12:37)।

यात्रा करते हुए वे मरुभूमि और कनान की सीमा के बीच कादेशबर्ने

नामक एक स्थान पर पहुँचे। वह देश उनके सामने था जिसका वायदा परमेश्वर ने किया था। मूसा ने उनसे कहा कि निडर होकर जाओ और उस देश को अपने कब्जे में कर लो। (व्यवस्था 1:21)। यदि उन्होंने आज्ञा मानी होती, तो वे उस देश के अधिकारी हो जाते। परन्तु पूरी तरह परमेश्वर के वायदे पर निर्भर होने के बजाय उन्होंने अपनी बुद्धि पर भरोसा किया। उन्होंने पहले उस स्थान की जासूसी करने का निश्चय किया। (व्यवस्था 1:22)। परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण रूप से जानने के पश्चात् हमें उसका पालन करने से पहले अपने तर्क और बुद्धि का सहारा नहीं लेना चाहिए। परमेश्वर ने मूसा से कहा, कि प्रजा की इच्छानुसार कार्य करे (गिनती 13:1)। इस प्रकार अनेक वर्षों के पश्चात् इनके वंशजों ने शमूएल से कहा कि उन्हें एक राजा चाहिए (1 शमूएल 8:7)। यह भी परमेश्वर की सिद्ध इच्छा के अनुसार नहीं था, परन्तु परमेश्वर ने उसकी आज्ञा दे दी। यदि हम ऐसी बातों के लिए लगातार प्रार्थना करें, जो परमेश्वर की सिद्ध इच्छानुसार नहीं है, तो हो सकता है कि वह हमें मिल जाए, परन्तु वह हमारी आशीष के लिए नहीं होगा।

मूसा ने बारह गोत्रों में से एक-एक को अगुए के रूप में चुनकर कनान देश का भेद लेने के लिए भेजा। चालीस दिन के पश्चात् वे लौटकर आए और अपने साथ उस देश से अंगूर के बड़े गुच्छे, अनार और अंजीर लेकर आए। सारी प्रजा उनकी बातें सुनने के लिए एकत्र हुई।

उन जासूसों ने कहा, ''उस देश में सचमुच दूध और मधु की धाराएँ बहती हैं, परन्तु वह देश ऐसा है जो अपने निवासियों को निगल जाता है। उस देश के पुरुष बड़े डील डौल के हैं और वहाँ हमने अनाकवंशी दानवों को देखा; और हम अपनी दृष्टि में उनके सामने टिड्डे से समान दिखाई पड़ते थे। (गिनती 13; व्यवस्था 1:28)।

यह विवरण सुनकर सारी प्रजा चिल्ला उठी, और रात भर वे लोग रोते रहे और बुड़बुड़ाते रहे। ऐसा ही होता है, जब हम परमेश्वर के वचन पर विश्वास नहीं करते। हम डर जाते हैं और अनाज्ञाकारी होकर बुड़बुड़ाते हैं।

परन्तु उन बारहों जासूसों में से यहोशू और कालेब नामक दो पुरुषों ने परमेश्वर पर विश्वास किया और परमेश्वर के प्रति विश्वस्त रहे। उन्होंने कहा, ''परमेश्वर हमारे साथ हैं। हम अभी चढ़के उस देश को अपना कर लें।'' तथापि, लोगों ने उनकी बात नहीं सुनी। ऐसे स्थान पर पहुँचाने के लिए वे परमेश्वर पर दोष लगाने लगे। उन्होंने एक अगुआ चुनकर वापस मिस्र लौटने की योजना बनाई (नहेम्याह 9:17)।

मूसा और हारून सारी प्रजा के सामने मुँह के बल गिर गए और उनसे विनती की, कि परमेश्वर से विद्रोह न करें। परन्तु वे लोग मूसा और हारून को पत्थरवाह करने के लिए तैयार हो गए। मनुष्य का हृदय कितना दुष्ट है! ये वही लोग हैं, जिन्होंने मिस्र में मूसा के द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों को देखा था। लाल समुद्र के बीच सूखी भूमि से पार उतरे अधिक समय नहीं बीता था। उस दिन भी सवेरे उन्होंने मन्ना खाया था। इन सबके बावजूद अब वे परमेश्वर पर विश्वास नहीं कर रहे थे। परमेश्वर की असंख्य आशीषों का आनंद उठाकर भी यदि हम बुड़बुड़ाते हैं, तो यह भयंकर पाप है।

इस्राएल के विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा। परमेश्वर उन्हें पूरी रीति से नाश करके मूसा को आशीष देकर उसके द्वारा एक महान और सामर्थी जाति बनाना चाहते थे। परन्तु मूसा ने इस बात से इंकार किया और उन लोगों के लिए प्रार्थना की जिन्होंने उसके विरुद्ध बातें की थीं। क्या हम उन लोगों के लिए प्रार्थना करते हैं जो हमारे विरुद्ध बातें करते हैं?

परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना सुनी और इस्राएलियों को क्षमा किया। परन्तु परमेश्वर ने कहा कि यहोशू और कालेब के अलावा कोई भी उस देश को देखने नहीं पाएगा, जिसकी उम्र बीस वर्ष से अधिक है। यहोशू और कालेब को छोड़ बाकी सभी भेदिए जिन्होंने प्रजा को कुड़कुड़ाने के लिए उभारा था, यहोवा के मारने से मर गए।

भेदियों ने उस देश का भेद लेने के लिए चालीस दिन लगाए थे। अतः एक दिन पीछे एक वर्ष के हिसाब से चालीस वर्षों तक अब

इस्राएलियों को मरुभूमि में भटकना था। उन वर्षों में वे सब लोग मर मिटे जिनकी उम्र बीस वर्ष की और उससे अधिक थी। कुड़कुड़ाकर उन्होंने कहा था, ''भला होता कि हम मिस्र ही में या इस जंगल ही में मर जाते।'' (गिनती 14:2)। उनकी इच्छा के अनुसार उनके लिए हो गया। क्रोध में या नाखुश होने पर हमारे मुँह से निकलने वालों शब्दों के प्रति हमें सावधान रहना चाहिए।

यहोशू और कालेब ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया और विश्वस्त बने रहे। अत: उन्होंने उस देश में प्रवेश किया जिसका वायदा परमेश्वर ने किया था। परमेश्वर ने यहोशू को चुना कि उसकी अगुआई में इस्राएली लोग उस देश पर अधिकार प्राप्त करें।

जो लोग परमेश्वर के प्रति विश्वस्त रहते हैं वे ऊँचे उठाए जाते हैं और आशीष प्राप्त करते हैं।

टिप्पणी :

यहोशू का नाम पहले होशे था (गिनती 13:16)। होशे का अर्थ है उद्धार। और यहोशू का अर्थ है–उद्धारकर्ता। यीशु नाम का अर्थ भी उद्धारकर्ता है।

प्रश्न :

1. इस्राएलियों ने किस स्थान पर डेरे डाले थे, जहाँ से जासूस भेजे गए थे?
2. कितने जासूस देश का भेद लेने गए थे? उनमें से कितने परमेश्वर के प्रति विश्वस्त रहे?
3. जासूसों के वापस लौटने पर लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा क्यों किया?
4. परमेश्वर से विद्रोह करने का दण्ड क्या था?

पाठ–7

तीन विद्रोही

गिनती 16:1–35

याद करें : जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है। इब्रानियों 10:31

मुख्य बिंदु : परमेश्वर पाप से घृणा करते हैं।

पाठ परिचय :

बच्चो, आप जानते हैं कि जब कक्षा में अध्यापक नहीं होते तब वहाँ की स्थिति कैसी होती है। जब अध्यापक कक्षा में होते हैं तब विद्यार्थी शांत क्यों रहते हैं? क्योंकि वे अपने अध्यापक से डरते हैं। परमेश्वर चाहते हैं कि सब लोग परमेश्वर का भय मानें। परमेश्वर का भय न होने के परिणाम के विषय में आज हम सीखेंगे।

पाठ :

परमेश्वर ने अद्‌भुत रीति से इस्राएलियों को मिस्र से छुड़ाया था। परमेश्वर ने उनकी सुरक्षा की और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की, फिर भी वे अक्सर परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाते रहे। पिछले पाठ में हमने सीखा था कि भेदियों की गलत सलाह मानकर उन्होंने परमेश्वर से विद्रोह किया था। वे लोग कभी पानी के लिए, कभी माँस के लिए और कभी किसी और बात के लिए कुड़कुड़ाया करते थे। गिनती 16 में हम पढ़ते हैं कि वे अगुआ बनने के लिए कुड़कुड़ाते और विद्रोह करते हैं।

विद्रोहियों का अगुआ कोरह था, जो लेवी गोत्र का था। दातान और अबीराम और इस्राएलियों के 250 अगुए भी उसके साथ मिल गए। उनका विद्रोह मूसा और हारून के विरुद्ध था। उनका कहना था कि मूसा और हारून ने स्वयं को ऊँचे पद पर बना रखा था। ईर्ष्या अक्सर झगड़ों का कारण बनता है। यहाँ भी वही मुख्य कारण था।

विद्रोहियों की बात सुनकर मूसा मुँह के बल गिरा। वह जानता था कि उनका विद्रोह उसके प्रति नहीं परन्तु परमेश्वर के प्रति था। वह उठा और उसने विद्रोहियों से कहा, ''कल सुबह यहोवा दिखा देगा कि उसका कौन है। इसलिए, हे कोरह, तुम अपनी मण्डली समेत धूपदान में आग रखकर यहोवा के सामने धूप देना, तब जिसको यहोवा चुन ले, वही पवित्र ठहरेगा।'' उनके पास अपने पाप का पश्चाताप करने के लिए काफी समय था। यदि उन्होंने ऐसा किया होता तो परमेश्वर ने उन्हें क्षमा कर दिया होता। ''यहोवा टूटे मन वालों के समीप रहता है।'' (भजन 34:18)। उन विद्रोहियों ने पश्चाताप तो नहीं किया, बल्कि प्रजा को मूसा और हारून के विरुद्ध भड़काकर मिलापवाले तम्बू के द्वार पर इकट्ठा किया। फिर वे अगुए अपने-अपने धूपदान लेकर आए। तब परमेश्वर का क्रोध उनके विरुद्ध भड़क उठा।

परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा, ''उस मण्डली के बीच में से अलग हो जाओ, कि मैं उन्हें पल भर में भस्म कर डालूँ।'' (पद 21)। मूसा और हारून फिर से मुँह के बल गिरे और प्रजा पर दया करने की विनती की। परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी और पूरी प्रजा को नाश नहीं किया। केवल कोरह और उसके साथी नाश हुए। उनके पाँव के नीचे भूमि फट गई, और पृथ्वी ने अपना मुँह खोला और उनको निगल लिया। तब यहोवा के पास से आग निकली और उन अढ़ाई सौ धूप चढ़ाने वालों को भस्म कर डाला। परमेश्वर और उसके दासों के विरुद्ध बात करना कितना भयंकर है! कोरह के पुत्र बच गए थे। निश्चित रूप से वे अपने पिता के विद्रोह के विरुद्ध थे। परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी। वे अपने समय के अच्छे भजनकार थे। शमूएल भविष्यवक्ता भी इसी परिवार में से थे। (1 इति. 6:22-28)। परमेश्वर पाप से घृणा करते हैं परन्तु पापी से प्रेम करते हैं। और जो अपने पापों को मानकर पश्चाताप करते हैं, उन्हें क्षमा करते हैं। (नीति. 28:13)।

टिप्पणी :

* कोरह का अर्थ है गंजापन।

यद्यपि हम पद 1 में पढ़ते हैं कि पेलेत के पुत्र ओन ने भी कोरह के विद्रोह में साथ दिया था, परन्तु बाद में हम उसके विषय में कुछ नहीं पढ़ते। संभवतः उसने पश्चाताप किया।

प्रश्न :

1. विद्रोह करने वालों का अगुआ कौन था?
2. मूसा और हारून के विरुद्ध उनकी क्या शिकायत थी?
3. परमेश्वर के चुने हुए लोग कौन हैं, यह जानने के लिए विद्रोहियों की परीक्षा कैसे ली गई?
4. परमेश्वर के दासों के विरुद्ध बोलने वालों को क्या दण्ड मिला?

पाठ-8

बिलाम

गिनती, अध्याय 22-24

याद करें : रुपए का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। 1 तीमु. 6:10

मुख्य बिंदु : परमेश्वर के बच्चों को धन का लालच नहीं करना चाहिए।

पाठ परिचय :

नेशनल जियोग्राफी पत्रिका में यह खबर छपी थी कि मेक्सिको की ऐज़टेक्स नामक जंगली जाति के लोग अपने ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए मनुष्यों की बलि चढ़ाते थे। इसके लिए वे अपने गुलामों का उपयोग करते थे। बलि चढ़ाए जाने से पहले उन्हें अच्छा भोजन और सभी ऐशो-आराम दिया जाता था। वे इस बात से अंजान रहते थे कि उन दिनों के पूरा होने पर उनके साथ क्या किया जाएगा।

उसी प्रकार आज अनेक लोग शैतान के गुलाम हैं और सांसारिक ऐशो-आराम में फँसे हुए हैं। कुछ लोग धन अर्जित करने में लगे हुए हैं। वे शैतान की दुष्ट युक्तियों को नहीं समझ पाते कि वह उनकी आत्माओं को नरक की ओर ले जा रहा है। आज हम उस भविष्यवक्ता के विषय में सीखेंगे जो धन का लोभी था।

पाठ :

इस्राएली लोग यात्रा करके मोआब पहुँचे, और वहाँ अपने डेरे खड़े किए। मोआब के राजा बालाक को यह समाचार मिला। वह जानता था कि ओग और सीहोन जैसे सामर्थी राजाओं को हराने वाले इस मज़बूत राष्ट्र से वह युद्ध नहीं कर सकता। उसने सोचा कि वह बोर के पुत्र बिलाम को बुलाकर उन लोगों को शाप दिलवाएगा। उसने बिलाम को

बुलाया।

बिलाम मेसोपोटामिया में महानद के तट पर पतोर नगर में रहता था। बिलाम सच्चे परमेश्वर के बारे में जानता था परन्तु भावी कहने वाला व्यक्ति भी था। (यहोशू 13:22)।

राजा बालाक ने बिलाम को बुला लाने के लिए दूत भेजे। बिलाम ने उनसे कहा, ''आज रात को यहाँ टिको, और जो बात यहोवा मुझसे कहे, उसके अनुसार मैं तुमको उत्तर दूँगा।''

उस रात परमेश्वर ने बिलाम को दर्शन देकर उससे स्पष्ट कहा कि बालाक के लोगों के साथ न जाए। सवेरे बिलाम ने उनसे कहा, ''यहोवा मुझे तुम्हारे साथ जाने की आज्ञा नहीं देता।'' परन्तु वास्तव में बिलाम उनके साथ जाना चाहता था क्योंकि उसको उन उपहारों की चाहत थी जो राजा उसे देने वाला था। बालाक राजा ने बिलाम के पास फिर से दूत भेजे और इस बार और भी बड़े प्रतिफल का वायदा किया। बिलाम परमेश्वर की इच्छा को स्पष्ट रूप से जानता था, फिर भी उसने उनसे उस रात रुकने के लिए कहा। उस रात परमेश्वर ने उसके दुष्ट हृदय की चाहत के अनुसार उसे जाने की अनुमति दे दी।

सवेरे बिलाम उठकर बालाक के दूतों के साथ चल पड़ा, परन्तु परमेश्वर का दूत हाथ में नंगी तलवार लिए उसका विरोध करने के लिए उसके मार्ग में खड़ा हो गया। बिलाम जिस गदही पर सवार था, उस गदही ने दूत को देखा और रुक गई। भविष्यवक्ता वह नहीं देख पा रहा था, जो गदही को दिख रहा था। तीन बार बिलाम ने उसे मारा क्योंकि वह आगे नहीं बढ़ रही थी। तब एक अद्‌भुत बात हुई! जो आज तक कभी न हुई! गदही ने मुँह खोला और बिलाम से बातें कीं। इतनी अजीब बात देखकर भी बिलाम न डरा और न ही उसे कुछ आश्चर्य हुआ। वह गदही से बहस करने लगा।

कुछ समय के बाद बिलाम की आँखें खुल गईं और उसने परमेश्वर के दूत को देखा। उसने स्वर्गदूत से कहा, ''यदि तुझे बुरा लगता है, तो मैं लौट जाता हूँ।'' परन्तु परमेश्वर ने ठान लिया था कि उस भावी

कहने वाले के मुँह से अपने लोगों के लिए रखी हुई आशीषें कहलवाएँगे। अत: दूत ने बिलाम को जाने दिया।

बिलाम को देखकर राजा बालाक बहुत खुश हुआ। उसने उसका भव्य स्वागत किया। बिलाम ने सात वेदियाँ बनवाकर उन पर बलि चढ़ाए और परमेश्वर के लोगों को शाप देने के लिए तैयार हो गया। परन्तु उसके मुँह से जो वचन निकले वह आशीष के थे। (व्यवस्था. 23:5, यहोशू 24:9-10; नहे. 13:2)। बालाक उसे दो अन्य स्थानों पर ले गया कि वह इस्राएलियों को शाप दे, परन्तु बिलाम के मुँह से शाप के शब्द नहीं निकले। शैतान और उसके चेले उन लोगों को नुकसान नहीं पहुँचा सकते, जिनकी सुरक्षा परमेश्वर करते हैं।

बिलाम जिसने अधर्म का प्रतिफल प्राप्त किया, उसने बालाक को उपाय बताया जिससे इस्राएलियों पर विपत्ति आ सकती थी। बिलाम जानता था कि पाप करने पर परमेश्वर अपने बच्चों को दण्ड देंगे। (प्रका. 2:14) उसने बालाक को सलाह दी कि इस्राएलियों को बहकाए कि वे मूर्तियों को अर्पित भोजन करें और अन्यजाति मोआबियों से विवाह संबंध बनाएँ। ये दोनों ही बातें परमेश्वर के विरुद्ध किया जाने वाला पाप था। उनके इस कार्य के दण्ड के रूप में मरी फैली जिससे चौबीस हज़ार पुरुष मर गए। बिलाम भी अपने प्रतिफल का आनंद न उठा सका, क्योंकि वह मिद्यानियों के साथ युद्ध में इस्राएलियों के हाथों मारा गया। (यहोशू 13:22)।

प्रश्न :

1. बिलाम कौन था? वह कहाँ रहता था?
2. बालाक ने बिलाम को क्यों बुलवाया था?
3. परमेश्वर ने बिलाम को कैसे सिखाया कि बालाक के दूतों के साथ उसके जाने से परमेश्वर अप्रसन्न हैं?
4. बालाक से प्रतिफल पाने के लिए बिलाम ने क्या किया?

पाठ-9

राहाब

यहोशू अध्याय 2

याद करें : विश्वास ही से राहाब वेश्या आज्ञा न मानने वालों के साथ नाश नहीं हुई; इसलिए कि उसने भेदियों को कुशल से रखा था। इब्रानियों 11:31

मुख्य बिंदु : अपने कार्यों से अपने विश्वास को प्रमाणित करें।

पाठ परिचय :

कल्पना करें कि आपके शहर में शत्रु सेना का आक्रमण हो गया। अब एक लाल रस्सी का उपयोग करने से ही आप बच सकते हैं। यह बात अजीब लगती है, परन्तु वास्तव में ऐसा हुआ है। इस्राएलियों के द्वारा यरीहो नगर के ले लिए जाने पर एक स्त्री की जान लाल डोरी के कारण बच गई।

पाठ : मूसा की मृत्यु के पश्चात् परमेश्वर ने उसके दास यहोशू को चुना, और कनान देश को अपने कब्जे में करके उसे बारह गोत्रों में बाँट देने का कार्य सौंपा। यरीहो वह शहर था जिसे यरदन पार करने के बाद सबसे पहले कब्जे में लेना था। यहोशू ने परमेश्वर का भय मानने वाले दो पुरुषों को उस नगर का भेद लेने के लिए भेजा। वे यरीहो पहुँचे। उस शहर के चारों ओर ऊँची दीवार थी। शहरपनाह पर बसे एक घर में राहाब नाम की एक स्त्री रहती थी। वे भेदिए उस रात राहाब के घर में रुके। किसी ने यह खबर राजा तक पहुँचा दी। संभवत: यरीहो के निवासी इस्राएलियों की सेना से भयभीत थे और इस कारण नगर में आने वालों पर नज़र रखे हुए थे। इसी कारण उन भेदियों की खबर तुरंत ही राजा तक पहुँचाई गई। राजा के सिपाही राहाब के घर पहुँचे। राहाब ने उन भेदियों को छत पर चढ़ाकर सनई की लकड़ियों के नीचे छिपा दिया। यद्यपि वह अन्यजाति राष्ट्र से थी, परन्तु अब तक उसने इस्राएल

के परमेश्वर के बारे में सुन लिया था। भेदियों से बात करते समय उसने यहोवा का नाम अनेकों बार लिया। वह उस यहोवा पर विश्वास करती थी, जिसने इस्राएलियों के लिए महान कार्य किए। अपने इसी विश्वास के कारण उसने उन भेदियों को अपने घर में शरण दी थी। (इब्रानियों 11:31; याकूब 2:25)।

राहाब ने अपने कार्य से अपने विश्वास का प्रमाण दिया। हमें भी अपने कार्यों से अपने विश्वास को प्रमाणित करना चाहिए। (याकूब 2:14-26)। राहाब जानती थी कि यरीहो का राजा और उसका राज्य शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। उसने राजा से अधिक परमेश्वर का भय माना। उसने भेदियों से विनती की, कि उसका और उसके परिवार का प्राण बचाया जाए। उन्होंने राहाब से वायदा किया कि वह और उसके लोग बचाए जाएँगे। उन्होंने उससे कहा कि अपने घर की खिड़की पर लाल रंग के सूत की डोरी बान्ध देना। आपको याद होगा, कि जब मिस्र के पहलौठे मारे जा रहे थे, तब इस्राएलियों के घर छोड़ दिए गए थे क्योंकि उन्होंने घर के द्वार के चौखट के सिरों और अलंगों पर मेम्ने का लोहू लगाया था। यह लोहू और राहाब के घर की खिड़की पर की लाल डोरी हमारे प्रभु यीशु मसीह के लोहू के प्रतीक हैं, जो लोहू हमें उद्धार देता है। ''बिना लहू बहाए पापों की क्षमा नहीं होती।'' (इब्रा. 9:19-22)।

राजा के अधिकारियों के जाने के बाद राहाब ने उन भेदियों को खिड़की से शहरपनाह के बाहर उतार दिया। उनके कहने के अनुसार राहाब ने उस लाल डोरी को उस खिड़की पर बांध दिया। यरीहो के अधिकारियों ने उन भेदियों को यरदन तक के सारे मार्ग में ढूँढ़ा परन्तु वे नहीं मिले। वे दोनों भेदिए तीन दिन तक पहाड़ों में छिपे रहे और फिर यहोशू के पास लौट गए, और सब बातों का वर्णन किया। बड़े विश्वास के साथ उन्होंने यहोशू से कहा, ''निःसन्देह यहोवा ने वह सारा देश हमारे हाथ में कर दिया है।''

शीघ्र ही इस्राएलियों ने यरीहो को अपने कब्जे में कर लिया। अपने वायदे के अनुसार भेदियों ने राहाब और उसके साथ जितने लोग उस घर

में थे, जिसकी खिड़की में लाल डोरी बंधी थी, सबको बचा लिया। (यहोशू 6:22-23)। प्रभु यीशु मसीह के लोहू से धुले हुए सब लोग (1 यूहन्ना 1:7) इसी प्रकार नाश होने वाले संसार में से बचाए जाएँगे। क्या आप प्रभु पर विश्वास करते हैं? परमेश्वर आपके सभी पापों को क्षमा करके आपको बचाना चाहते हैं।

टिप्पणी :

यरदन नदी जहाँ मृत सागर में मिलती है, वहाँ से 10 मील उत्तर पश्चिम की तरफ यरीहो स्थित है। परमेश्वर ने कहा था कि जो यरीहो को फिर बनाएगा उसे दण्ड मिलेगा। आहाब के राजकाल में बेतेलवासी हीएल ने यरीहो को फिर से बसाया और उसका दण्ड पाया। (1 राजा 16:34)।

* माना जाता है कि यही राहाब बोअज की माता और सलमोन की पत्नी थी। (मत्ती 1:5)।

प्रश्न :

1. राहाब कहाँ रहती थी? उसका घर भेदियों के लिए सुलभ क्यों था?
2. राहाब ने परमेश्वर पर अपने विश्वास को कैसे प्रमाणित किया?
3. बचाए जाने के लिए राहाब को अपनी खिड़की पर कौन सा चिह्न रखना था? यह हमें किस बात का स्मरण दिलाता है?
4. यहोशू के पास लौटकर भेदियों ने क्या कहा?

पाठ–10

आकान

यहोशू, अध्याय 7

याद करें : क्योंकि मनुष्य के मार्ग यहोवा की दृष्टि से छिपे नहीं हैं, और वह उसके सब मार्गों पर ध्यान करता है। नीति. 5:21

मुख्य बिंदु : पाप छिप नहीं सकता।

पाठ परिचय :

क्या आपने गुप्त रूप से कुछ ऐसा गलत कार्य किया है और सोचा कि किसी को पता नहीं चलेगा?

लूसी के पिताजी ने उसके जन्म दिन पर उसे एक सुंदर गुड़िया लाकर दी। उसके भाई को उससे बड़ी ईर्ष्या हुई। एक दिन वह गुड़िया गायब हो गई। लूसी और उसके परिवार के लोगों ने उसे ढूँढ़ा पर वह गुड़िया नहीं मिली। कई हफ्ते गुज़र गए और फिर एक दिन लूसी को अपने आंगन के कोने में ढेर सारे छोटे पौधे नज़र आए। वह उन्हें उखाड़कर अपने बगीचे में लगाना चाहती थी। लूसी ने जब उन्हें उखाड़ा तब उनके नीचे मिट्टी में उसे अपनी गुड़िया दिखाई दी। उसे किसने मिट्टी में गाड़ा था? निश्चित ही उसके भाई ने। उस गुड़िया में बीज भरे हुए थे, जिनमें से अब पौधे निकल गए थे। उसके पाप ने उसे पकड़वा दिया! ऐसे ही एक दफनाए हुए रहस्य के विषय में आज हम सीखेंगे।

पाठ :

हमने सीखा कि किस प्रकार इस्राएलियों ने यरीहो नगर को अपने कब्जे में कर लिया। यहोशू ने पहले ही लोगों से कहा था कि वह नगर और जो कुछ उसमें है, वह यहोवा के लिए अर्पण की वस्तु ठहरेगी। सब चाँदी, सोना और लोहे और पीतल के पात्र यहोवा के लिए पवित्र हैं और उसी के भण्डार में रखे जाएँ। (यहोशू 6:17–19) परन्तु यहूदा गोत्र

के आकान ने कुछ अच्छी वस्तुएँ देखकर उनका लालच किया। परमेश्वर की आज्ञा को तोड़कर उसने उन वस्तुओं को ले लिया। उसने शिनार देश का एक सुंदर ओढ़ना, दो सौ शेकेल चाँदी और पचास शेकेल की सोने की एक ईंट ले ली, और अपने डेरे के भीतर जाकर भूमि में गाड़ दिया। उसने सोचा कि इतनी बड़ी भीड़ में वह पकड़ा नहीं जाएगा, परन्तु सर्वज्ञ परमेश्वर ने उसके कार्य को देखा था।

यरीहो के बाद इस्राएलियों को ऐ नामक नगर पर चढ़ाई करनी थी। यह छोटा शहर बेतेल से दो मील दूर दक्षिण पश्चिम में बसा हुआ था। (उत्पत्ति 12:8; 13:3)। यहोशू ने सोचा कि उसे बड़ी आसानी से जीता जा सकता है, अतः उसने मात्र 3000 पुरुष ही वहाँ भेजे। परन्तु उन्हें ऐ के पुरुषों के सामने से भाग जाना पड़ा। तब यहोशू और इस्राएल के वृद्ध लोग यहोवा के सन्दूक के सामने मुँह के बल गिरकर पृथ्वी पर सांझ तक पड़े रहे और प्रार्थना करते रहे। परमेश्वर ने यहोशू से कहा कि उनकी हार का कारण पाप है। विजय प्राप्त करने से पहले पाप से छुटकारा प्राप्त करना आवश्यक है। पापों की क्षमा प्राप्त किए बगैर कोई भी पवित्र परमेश्वर के सम्मुख खड़ा नहीं हो सकता।

सवेरे यहोशू इस्राएलियों को उनके गोत्र के अनुसार अपने सामने लाया और यहूदा का गोत्र पकड़ा गया। फिर उसने यहूदा गोत्र के परिवारों को समीप किया और जेरहवंशियों के घराने के एक-एक पुरुष को समीप लाया, और जब्दी पकड़ा गया। और अंत में कर्म्मी का पुत्र आकान पकड़ा गया। यहोशू ने यह कार्य चिट्ठी डालकर किया होगा। (नीति. 16:33)। आकान ने अपना पाप मान लिया और बता दिया कि सारी वस्तुएँ उसके डेरे में गड़ी हुई हैं।

तब यहोशू और लोगों ने मिलकर आकान और उसके परिवार को और जो वस्तुएँ उसने लालच करके ले लीं और उसके जानवरों और जो कुछ उसका था, सब आकोर नाम तराई में ले गए। वहाँ लोगों ने उन्हें पत्थरवाह करके मार डाला और आग में जला दिया।

आकान की अनाज्ञाकारिता ने इस्राएल को हार दिलाई थी और परमेश्वर

की प्रजा के लोग युद्ध में मारे डाले गए थे। ऐ नगर के युद्ध में आकान को आशीष मिलती यदि उसने लालच न किया होता और परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया होता। याद रखें–पाप हमेशा आपके लिए और दूसरों के लिए कष्ट लाता है।

यह परमेश्वर की महान दया है कि इस अनुग्रह के युग में हमारे पाप क्षमा हो सकते हैं यदि हम पश्चाताप करें और पापों को मान लें। (1 यूहन्ना 1:7)

''जान रखो कि तुमको तुम्हारा पाप लगेगा।'' गिनती 32:23।

टिप्पणी :

* आकान = कष्ट देने वाला

प्रश्न :

1. कौन–कौन सी वस्तुएँ आकान ने लालच करके रख लीं?
2. इस्राएली लोग ऐ नगर के लोगों से क्यों हार गए? परमेश्वर के लोगों को विजय कैसे प्राप्त होती है?
3. ऐ से युद्ध हराने पर यहोशू और इस्राएल के वृद्ध लोगों ने क्या किया?
4. आकान को क्या दण्ड मिला?

पाठ-11

गिबोन के निवासी

यहोशू, अध्याय 9

याद करें : ''हमारे प्रभु यीशु मसीह का नाम तुम में महिमा पाए।'' 2 थिस्स. 1:12

मुख्य बिंदु : संसार की तरफदारी मत करो।

पाठ परिचय :

क्या आपको कभी ऐसा निर्णय लेना पड़ा जो आपके लिए कठिन था? कुछ निर्णय आसान होते हैं, जैसे आप क्या खाना चाहते हैं, परन्तु कुछ निर्णय कठिन होते हैं, जैसे कि आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं। कभी-कभी हमारे निर्णय गलत भी हो सकते हैं। आइए देखें कि कैसे यहोशू का एक महत्वपूर्ण निर्णय गलत हो गया।

पाठ :

गिबोन के निवासियों ने सुना कि किस प्रकार इस्राएलियों ने यरीहो और ऐ नगरों पर विजय प्राप्त की। यरूशलेम के उत्तर पश्चिम में छः मील की दूरी पर बसे गिबोन पर अगला आक्रमण हो सकता था। यह अपने समय का एक बड़ा शहर था, परन्तु वहाँ के निवासी जानते थे कि वे इस्राएलियों से जीत नहीं सकते। इस कारण उन्होंने धोखा करके इस्राएलियों से वाचा बन्धवाई कि वे गिबोनियों को जीवित छोड़ेंगे। गिबोन के लोगों ने राजपूतों का भेष बनाकर, अपने गदहों पर पुराने बोरे और पुराने मदिरा के कुप्पे लादकर, पाँवों में पुरानी जूतियाँ और तन पर पुराने वस्त्र पहने और अपने भोजन के लिए फफूंदी लगी हुई रोटी ले ली। तब वे यहोशू के पास गिलगाल में आए और यहोशू और इस्राएलियों को यह सब दिखाकर विश्वास दिलाया कि वे लोग बहुत दूर देश से आए हैं।

गिबोनियों ने उनसे कहा, ''तेरे दास बहुत दूर के देश से तेरे परमेश्वर यहोवा का नाम सुनकर आए हैं। हमने वह सब सुना जो यहोवा ने मिस्र में किया और एमोरियों के राजा ओग और सीहोन से किया। अत: हमारे वृद्ध लोगों ने हमें यह कहने के लिए यहाँ भेजा है कि हम तुम्हारे दास हैं, इसलिए अब तुम हम से वाचा बांधो।''

परमेश्वर ने इस्राएलियों को स्पष्ट आज्ञा दी थी कि वे उस देश के निवासियों के साथ किसी प्रकार की वाचा न बांधें। (निर्ग. 23:32; 34:12; व्यवस्था. 7:2)। यहोशू और इस्राएल के अगुओं ने परमेश्वर से बिना सलाह लिए, उनकी कहानी को सच मानकर उनसे वाचा बांधी। और उनसे वायदा किया कि उस देश के निवासियों को जीवित छोड़ दिया जाएगा।

तीन दिन के बाद इस्राएलियों को पता चल गया कि वे गिबोनी उनके पड़ोसी ही हैं। उनके साथ बांधी गई वाचा के कारण वे उन्हें नाश नहीं कर सकते थे। परमेश्वर के लोगों को किसी भी स्थिति में उन वायदों को पूरा करना चाहिए, जो उन्होंने परमेश्वर के नाम से किए हैं। यहोशू ने उनको बुलवाकर कहा, ''तुमने हमारे साथ छल किया है, इसलिए तुम शापित हो और तुममें से हर एक दास और मण्डली और परमेश्वर के भवन के लिए लकड़हारा और पानी भरने वाला होगा।'' गिबोनियों ने इस दण्ड को स्वीकार कर लिया और वह उनके लिए आशीष का कारण बन गया। परमेश्वर के भवन के लिए किया जाने वाला हर कार्य आदर के योग्य है। तथापि, परमेश्वर की सलाह के बिना लिए गए इस निर्णय के कारण गिबोनी लोग वर्षों तक इस्राएलियों के लिए समस्या का कारण बने रहे।

नहेम्याह के दिनों में जब यरूशलेम दोबारा बनाया जा रहा था तब गिबोनी उस कार्य में सहायक थे (नहे. 3:7)। एक समय राजा शाऊल ने कुछ गिबोनियों को मार डाला और इस प्रकार उनसे की गई वाचा को तोड़ दिया। इस कार्य के लिए परमेश्वर शाऊल से क्रोधित हो गए। (2 शमू. 21)। मनुष्य वाचा तोड़ते और सहमतियाँ भूल जाते हैं। परन्तु

परमेश्वर की वाचा और परमेश्वर के वचन कभी नहीं बदलते।

परमेश्वर के लोगों को हमेशा ही परमेश्वर की इच्छा के अनुसार निर्णय लेने चाहिए और परमेश्वर की वाचा का उल्लंघन नहीं होना चाहिए, क्योंकि प्रभु यीशु आज और कल और हमेशा तक एक सा है।

टिप्पणी :

गिबोन का आधुनिक नाम ऐल-जिब है। इस्राएल के लिए भूमि के बंटवारे पर गिबोनी लोग बिन्यामीन को दिए गए भाग के सिवानों में ही रह रहे थे। (यहोशू 18:25)।

प्रश्न :

1. गिबोनियों ने बहुत दूर देश से आने की बात कहकर छल क्यों किया?
2. यहोशू ने गिबोनियों को क्या दण्ड दिया?
3. इस्राएल के किस गोत्र को उनके भाग के रूप में गिबोन मिला?
4. गिबोनियों के साथ बांधी गई वाचा को किस राजा ने तोड़ा?

पाठ–12

शरण नगर

यहोशू, अध्याय 20

याद करें : जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूँगा। यूहन्ना 6:37

मुख्य बिंदु : परमेश्वर की संतान मसीह यीशु में सुरक्षित हैं।

पाठ परिचय :

एक माँ ने चुपके से अपनी दो छोटी बेटियों की बातचीत सुनी। बड़ी ने छोटी से पूछा, ''तुम्हें कैसे पता कि तुम सुरक्षित हो?''

छोटी ने कहा, ''मैंने यीशु मसीह को दोनों हाथों से कसकर पकड़ा है, इसलिए मैं सुरक्षित हूँ।''

बड़ी ने कहा, ''अगर शैतान तुम्हारे दोनों हाथ काट दे तो?''

छोटी दुखी होकर सोचने लगी। अचानक उसका चेहरा खिल उठा। उसने कहा, ''अरे, मैं भूल गई थी। यीशु मुझे पकड़े हुए हैं, और शैतान उन्हें नहीं छू सकता! इसलिए मैं सुरक्षित हूँ।''

पाठ :

पुराने नियम के समय परमेश्वर ने अपने लोगों की सुरक्षा के लिए कुछ इंतज़ाम किए थे। जब मूसा के द्वारा परमेश्वर ने नियम और विधियाँ दी थीं तब शरण नगर के विषय में भी आज्ञा दी थी। (गिनती 35, व्यवस्था. 19:1–13)। उस समय इस्राएल ने कनान देश में प्रवेश नहीं किया था। आज्ञा यह थी कि जब वे उस देश को ले लेंगे तब उसमें छः नगरों को शरण नगर के रूप में अलग किया जाना चाहिए। जिनमें तीन शहर पूर्व दिशा की तरफ और तीन शहर यरदन नदी के पश्चिम की ओर हों। यदि कोई व्यक्ति गलती से किसी को मार डाले तो वह उन शरण नगर में भागकर जा सकता था और अपने पलटा लेने वाले के

हाथ से बच सकता था। व्यवस्थाविवरण में इस बात का एक उदाहरण दिया गया है कि कोई व्यक्ति अनजाने किसी और की हत्या कैसे कर सकता है। जैसे-कि दो व्यक्ति एक साथ जंगल में लकड़ी काटने जाएँ। जब एक अपनी कुल्हाड़ी पेड़ काटने के लिए उठाए तो कुल्हाड़ी बेंट से निकलकर उस दूसरे व्यक्ति को ऐसी लगे कि वह मर जाए, तो वह उन शरण नगरों में से किसी में भी भागकर जीवित रह सकता है।

ये शरण नगर प्रभु यीशु का प्रतीक है। जो पापी प्रभु में शरण पाता है वह बचाया जाता है। (इब्रा. 6:18; भजन 16:1; 62:7; 91:2)

जिसने भागकर शरण नगर में शरण पाई, उसे अपनी बात नगर के द्वार पर बैठे पुरनियों को बताना होता था। तब वे निर्णय लेते थे कि यह हत्या जानबूझकर की गई या अनजाने में हुई। यदि वह अनजाने में हुई हत्या मानी जाती तो उसे शरण नगर में रहने की अनुमति मिल जाती। और उस व्यक्ति को वहाँ पर तब तक रहना पड़ता, जब तक कि उस समय के महायाजक की मृत्यु न हो जाए। उसके बाद वह अपने घर लौट सकता था। हमारा महायाजक मसीह है (इब्रा. 31; 4:14) मसीह की मृत्यु के द्वारा पश्चाताप करने वाले पापी को उसके पापों से क्षमा प्राप्त होती है (इब्रा. 9:12)।

आइए उन शरण नगरों के नाम और उनके अर्थ सीखें

शकेम	=	कंधा
रमोत	=	ऊँचा
गोलान	=	आनंद
हेब्रोन	=	संगति
बेसेर	=	गढ़
केदेश	=	पवित्रता

हम प्रभु यीशु में ये सभी बातें पाते हैं, जो हमारा अनंत शरणस्थान हैं। ये हमें स्मरण दिलाते हैं कि हमें मसीह में पवित्रता, सुरक्षा और आनंद प्राप्त है। क्या आप उस सुरक्षा के लिए प्रभु यीशु के पास गए,

जो सच्चा शरण स्थान है?

प्रश्न :

1. शरण नगर कितने थे? उनके नाम बताएँ?
2. ये नगर अन्य नगरों से किस प्रकार भिन्न थे?
3. ये नगर हमें क्या स्मरण दिलाता है?
4. उन नगरों में किसे शरण मिलती थी?
5. दोषी को शरण नगर में कब तक रहना होता था?

पाठ–13

यिप्तह

न्यायियों, अध्याय 11

याद करें : हे परमेश्वर तेरे तम्बू में कौन रहेगा?

वह जो शपथ खाकर बदलता नहीं, चाहे हानि उठाना पड़े।

भजन 15:1, 4

मुख्य बिंदु : हमें ऐसे शपथ नहीं खाना चाहिए जो परमेश्वर के वचन का विरोध करते हैं।

पाठ परिचय :

एक बंजारे का ऊँट खो गया। उसने शपथ खाई कि यदि ऊँट मिल जाएगा तो वह उसे एक रुपए में बेच देगा। जब उसे वह ऊँट मिल गया तब वह अपनी शपथ पर पछताने लगा। उसने एक बिल्ली को ऊँट के गले में बांध दिया, और उसकी बोली लगाई, ''ऊँट एक रुपया, बिल्ली 100 रुपए परन्तु उन्हें अलग नहीं किया जाएगा। जो भी चाहे, एक साथ खरीद ले।'' कुछ लोग इस प्रकार अपनी शपथ को पूरा करते हैं। आइए देखें कि एक पुरुष यिप्तह ने अपनी शपथ कैसे पूरी की।

पाठ :

यहोशू की मृत्यु के पश्चात् इस्राएलियों की अगुआई करने के लिए परमेश्वर ने न्यायियों को नियुक्त किया। यिप्तह उनमें से एक था। उसके पिता का नाम गिलाद था। जब गिलाद के अन्य पुत्र बड़े हुए तो उन्होंने यिप्तह को घर से भगा दिया क्योंकि वह एक अन्य माता से उत्पन्न हुआ था। यिप्तह तोब नगर में जाकर रहने लगा। यिप्तह शूरवीर था और तोब में बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए।

उन दिनों में लूत के वंशज अम्मोनी लोग आकर इस्राएलियों से युद्ध करने लगे। तब इस्राएल के वृद्ध लोगों ने जाकर यिप्तह से कहा, ''तू

हमारे संग चलकर अम्मोनियों से लड़े, तब तू हमारी ओर से गिलाद के सब निवासियों का प्रधान ठहरेगा।'' तब यिप्तह गिलाद के वृद्ध लोगों के संग चला और उनका मुखिया बन गया।

यिप्तह परमेश्वर का भय मानता था। उसने अपनी समस्या को परमेश्वर के सम्मुख रखकर प्रार्थना की। (पद 11)। यह एक विश्वास की प्रार्थना थी। हम यिप्तह के बारे में इब्रानियों में पढ़ते हैं जहाँ विश्वास के वीरों के नाम दिए गए हैं। (इब्रानियों 11:3)।

यिप्तह ने युद्ध से बचने के लिए अम्मोनियों के राजा के पास दूत भेजे कि युद्ध न करे। राजा के आरोपों का उसने अच्छा उत्तर दिया परंतु अम्मोनी राजा युद्ध करना चाहता था। यिप्तह ने सेना इकट्ठी की और युद्ध के लिए निकल गया। उसने परमेश्वर से मन्नत मानी कि ''यदि तू अम्मोनियों को मेरे हाथ में कर दे, तो जब मैं कुशल के साथ लौटकर आऊँगा, तब जो कोई मेरे भेंट के लिए मेरे घर के द्वार से निकले, वह यहोवा का ठहरेगा और मैं उसे होमबलि करके चढ़ाऊँगा।''

जब अम्मोनियों को हराकर यिप्तह मिस्पा को अपने घर वापस आया, तब उसकी एकलौती बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उससे मिलने निकल आई। उसे देखते ही यिप्तह शोक से भर गया। उसे अपनी मन्नत याद आई। परमेश्वर के वचन के खिलाफ हमें मन्नत नहीं माननी चाहिए। यदि हम ऐसा करते हैं तो अवश्य पछताएँगे।

जब यिप्तह ने अपनी बेटी को अपने मन्नत के विषय में बताया तब उसने कहा, ''हे मेरे पिता, तू ने जो यहोवा को वचन दिया है, उसी के अनुसार मुझ से बर्ताव कर।'' कितनी आज्ञाकारी बेटी थी वह! अपने पिता का आदर करते हुए उसकी बात मानने के लिए वह तैयार हो गई। उसका जीवन हमारे लिए एक महान उदाहरण है।

टिप्पणी :

मिस्पा = उत्पत्ति 31:48-49 देखें

गिलाद = यरदन के पूर्व की ओर एक पहाड़ी क्षेत्र

यरदन के पूर्व की ओर की भूमि रूबेन और गाद और मनश्शे के आधे गोत्र के हिस्से में आई थी।

प्रश्न :

1. यिप्तह का पिता कौन था?
2. यिप्तह ने किस देश के विरुद्ध युद्ध किया?
3. यिप्तह की मन्नत क्या थी?
4. यिप्तह की बेटी किस प्रकार अपने पिता की आज्ञाकारी थी?

पाठ-14

रूत और नाओमी

रूत, अध्याय 1-2

याद करें : हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। रोमियों 8:28

मुख्य बिंदु : परमेश्वर से प्रेम करने वालों के लिए सब बातें भलाई उत्पन्न करती हैं।

पाठ परिचय :

एक दिन एलीमेलेक ने अपनी पत्नी से कहा होगा, ''नाओमी, मोआब में भोजन वस्तु उपलब्ध है। यहाँ दुर्भिक्ष समाप्त होने तक वहाँ चलकर रहते है।'' आइए देखें कि उसने ऐसे क्यों कहा होगा।

पाठ :

न्यायियों के समय में यहूदा देश में अकाल पड़ा। यहूदा के बेतलेहेम में एलीमेलेक नाम का एक पुरुष रहता था। (नासरत से 11 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में जबूलून के देश में बेतलहम नाम की एक और जगह थी।) जब अकाल भयंकर हो गया तब एलीमेलक अपनी पत्नी और दोनों पुत्रों के साथ मोआब देश में रहने चला गया। मोआब मृत सागर के पूर्व की तरफ स्थित है। बेतलेहेम और मोआब के बीच की दूरी 90 कि. मी. है। लूत के वंशज मोआबी, इस्राएलियों के रिश्तेदार थे, परन्तु उनकी आपस में मित्रता नहीं थी। परमेश्वर ने इस्राएलियों को आज्ञा दी थी कि कोई मोआबी दस पीढ़ी तक परमेश्वर की सभा में न आने पाए।

मोआब देश में रहते हुए एलीमेलेक की मृत्यु हो गई। उसके दोनों पुत्रों ने एक-एक मोआबिन से विवाह कर लिया। फिर उसके दोनों पुत्र महलोन और किल्योन की भी मृत्यु हो गई। अब विधवा नाओमी ने

वापस अपने देश जाना चाहा। अब तक बेतलेहेम में दुर्भिक्ष समाप्त हो चुका था और कटनी का समय था। वह अपनी दोनों बहुओं के साथ चल दी। कुछ दूर जाने के बाद नाओमी ने अपनी बहुओं से कहा कि वे अपने माँ-बाप के घर को लौट जाएं। ओर्पा ने अपनी सास को चूमा और वापस लौट गई। परन्तु रूत अपनी सास से अलग न हुई। उसने अपनी सास के प्रति अपने प्रेम को और अपने निर्णय को स्पष्ट कह दिया (1:16-17)।

रूत जानती थी कि अपनी बूढ़ी सास के साथ रहेगी तो उसे कोई सांसारिक लाभ नहीं होगा। परन्तु उसने उस परमेश्वर को चुन लिया था जिसकी सेवा नाओमी करती थी, इस कारण वह नाओमी के साथ रहना चाहती थी। नाओमी और रूत बेतलेहेम पहुँचीं। उनके आगमन ने हलचल मचा दी। जब वे वहाँ पहुँचीं तब जौ की कटनी होने वाली थी। रूत ने खेतों में जाकर काम करने का निश्चय किया ताकि उन्हें भोजन प्राप्त हो।

तुरंत ही रूत जौ के खेतों में पहुँची। परमेश्वर ने उसके निर्णय और इच्छा का आदर किया। उस खेत के स्वामी ने उस पर विशेष कृपा दिखाई। शाम को वह अपना बीना हुआ जौ लेकर घर गई और उसे अपनी सास को दिया। और वह अपने भोजन में से भी, जो सास के लिए बचाकर लाई थी, वह भी दिया। रूत ने अपनी सास को दिन भर की सारी बातें बताईं। आगे क्या करना है इस बात की सलाह नाओमी ने रूत को दी। आप जब अपनी बातें अपने माता-पिता को बताते हैं तब वह आपको सही सलाह देते हैं। सुलैमान ने कहा, ''हे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा को न तज।'' (नीति. 6:20; 3:1)।

टिप्पणी :

* बेतलेहेम का वास्तविक नाम एप्राता था।

* नाओमी = मनोहर

* एलीमेलेक = परमेश्वर राजा है

* बेतलेहेम = परमेश्वर का घर

प्रश्न :

1. एलीमेलेक की जन्मभूमि कौन सी थी? उसने वह स्थान क्यों छोड़ा?
2. एलीमेलेक के पुत्रों के क्या नाम थे?
3. रूत ने नाओमी का साथ क्यों नहीं छोड़ा?
4. बेतलेहेम पहुँचकर रूत ने कौन सा कार्य किया?

पाठ-15

रूत और बोअज़

रूत, अध्याय 2-4

याद करें : तुम जानते हो कि तुम्हारा छुटकारा चाँदी, सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। परन्तु मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ। 1 पतरस 1:18-19

मुख्य बिंदु : अपने पास आने वाले को प्रभु कभी त्यागते नहीं हैं।

पाठ परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा कि किस प्रकार रूत खेतों में काम करने गई। जिस खेत में वह गई थी वह बोअज़ का था। वह उसके ससुर का कुटुंबी था। बोअज़ बहुत धनी पुरुष था। इन बातों की जानकारी के बिना ही रूत उसके खेत में गई थी। यह उसके लिए परमेश्वर की योजना थी। हमें याद रखना चाहिए कि हमारे जीवन की छोटी-छोटी बातों पर भी परमेश्वर का नियंत्रण होता है। मत्ती 10:30 में हम पढ़ते हैं "तुम्हारे सिर के बाल भी गिने हुए हैं।"

पाठ :

बोअज़ खेत में आया जब रूत वहाँ काम कर रही थी। बोअज़ दयालु और परमेश्वर का भय मानने वाला व्यक्ति था। वह अपने दास-दासियों से प्रेम करता था। वे भी उससे प्रेम करते और उसका आदर करते थे। बोअज़ ने रूत को देखा। लवने वालों ने रूत के बारे में अच्छी बातें कही। क्योंकि उनके प्रति उसका व्यवहार अच्छा रहा था। बोअज़ ने रूत से दयापूर्वक बातें कीं। रूत ने उसे दण्डवत् किया और कहा, "क्या कारण है कि तू ने मुझ परदेशिन पर अनुग्रह की दृष्टि करके मेरी सुधि ली है?" महान और धनी बोअज़ ने कोमलता और दयालुता के साथ रूत से व्यवहार किया। वह प्रभु यीशु का प्रतीक है। बोअज़ ने जो रूत के लिए किया उसमें हम वह तस्वीर देखते हैं जो

प्रभु यीशु अपने पास आने वालों को देते हैं। निम्नलिखित कुछ बातें हैं जो बोअज़ ने रूत के लिए किया :

1. बोअज़ ने रूत से कहा कि वह उसके खेत में कटनी के अंत तक सिला बीन सकती है। उसने लवने वालों से कहा कि वे उसके लिए कुछ छोड़ भी दिया करें। हमारे प्रभु भी अपने सेवकों को कार्यक्षेत्र देते हैं और उन्हें उनके कार्य मेहनताना भी देते हैं।
2. बोअज़ ने रूत से कहा कि वह उसकी दासियों के संग रहे। प्रभु यीशु अपने लोगों के साथ हमें संगति देते हैं।
3. बोअज़ ने उसे भोजन दिया और अपने सेवकों को आज्ञा दी कि उसे परेशान न करें। हमारा प्रभु हमें प्रतिदिन को रोटी और सुरक्षा भी देते हैं।
4. अंत में बोअज़ ने रूत को अपनी पत्नी बनाकर अपनी धन संपत्ति का भागीदार बनाया। हमारा प्रभु भी अंत में हमें अपनी महिमा में ले जाएँगे और अपनी दुल्हन के रूप में हमेशा के लिए अपने साथ रखेंगे।

नाओमी ने रूत से कहा कि बोअज़ उनका छुड़ाने वाला कुटुम्बी है। इस्राएल में यह एक व्यवस्था थी कि जब कोई पुरुष संतानहीन मर जाए तो उसके भाई को उसकी विधवा से विवाह करना होता था। (व्यवस्था. 25:5)। बाद में यह रीति बन गई कि यदि मृतक का कोई भाई न हो तो नजदीकी रिश्तेदार उस विधवा से विवाह करता था। इस प्रकार का रिश्तेदार छुड़ानेवाला कुटुम्बी कहलाता था। यह जानकर अपनी सास की सलाह पर रूत बोअज़ के पास गई।

बोअज़ नगर के फाटक पर जाकर बैठ गया जहाँ नगर के वृद्ध और मुख्य लोग बैठकर महत्वपूर्ण बातों पर चर्चा करते थे। बोअज़ ने दस वृद्धों को बुलाया कि उसकी बात के गवाह बनें। अक्सर किसी बात के लिए दो या तीन गवाह काफी होते थे परंतु वहाँ पर बहुत सारे लोग आ गए। उनकी उपस्थिति में बोअज़ ने कहा कि वह रूत से विवाह करना चाहता है। सभी लोगों और वृद्ध लोगों ने उनके लिए आशीष के वचन

कहे। अत: उन दोनों का विवाह हो गया और इस प्रकार परमेश्वर ने रूत को आशीष दी जिसने जीवते परमेश्वर पर विश्वास करने के कारण अपने देश और अपने लोगों को छोड़ दिया था। परमेश्वर ने नाओमी को भी शांति और आनंद से भर दिया।

बोअज़ और रूत को एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम ओबेद था। ओबेद राजा दाऊद का दादा बना। आप जानते हैं कि प्रभु यीशु दाऊद के कुल में उत्पन्न हुए थे। अत: मोआबिन रूत हमारे प्रभु की परदादी बनीं। जो परमेश्वर पर पूर्ण रूप से विश्वास करते हैं; परमेश्वर उन्हें ऊँचा उठाते हैं।

टिप्पणी :

बोअज़ = ताकतवर पुरुष

प्रश्न :

1. रूत सिला बीनने किसके खेत पर गई?
2. बोअज़ ने रूत पर क्या कृपा दिखाई?
3. छुड़ानेवाला-कुटुम्बी का क्या अर्थ है?
4. रूत के पहले पति का क्या नाम था?
5. रूत और राजा दाऊद का क्या रिश्ता है?

पाठ–16

ईकाबोद

1 शमूएल, अध्याय 2–4

याद करें : यदि कोई परमेश्वर के मंदिर को नाश करेगा, तो परमेश्वर उसे नाश करेगा; क्योंकि परमेश्वर का मंदिर पवित्र है। (1 कुरि. 3:17)।

मुख्य बिंदु : परमेश्वर की सेवा की उपेक्षा न करें।

पाठ परिचय :

''शमूएल बालक बढ़ता गया और यहोवा और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे'' (2:26) यह शमूएल बालक के विषय में कहा गया था। शमूएल बड़ा होकर इस्राएल में न्यायी और भविष्यवक्ता बना।

पाठ :

शमूएल के बचपन में इस्राएल का न्याय एली करता था जो याजक भी था। परन्तु उसके पुत्रों के विषय में लिखा है कि ''एली के पुत्र लुच्चे थे, उन्होंने यहोवा को न पहिचाना।'' (2:12) उनका पिता परमेश्वर का याजक था, परन्तु वे परमेश्वर का भय नहीं मानते थे और दुष्टता का जीवन व्यतीत करते थे। एली के पुत्रों, होप्नी और पीनहास के कारण इस्राएल राष्ट्र पर बड़ी विपत्ति आई।

उन दिनों में पलिश्ती लोग इस्राएलियों से युद्ध करने आए। युद्ध में इस्राएली लोग हार गए। उनकी हार का कारण उनका पाप था। मंदिर में परमेश्वर की वाचा का संदूक था, जहाँ परमेश्वर की उपस्थिति प्रकट होती थी। लोगों ने सोचा कि यदि उस संदूक को युद्ध भूमि में ले जाएँ तो वे निश्चित ही युद्ध जीत जाएँगे। अपने पापों से पश्चाताप करके परमेश्वर के पास आने के बजाय उन्होंने विजय के लिए गलत मार्ग चुना। वाचा के संदूक को छावनी में लाते ही सारे इस्राएली इतने बल से

ललकार उठे, कि भूमि गूंज उठी। परन्तु यह उनका अंधविश्वास था। इस्राएली फिर से युद्ध में हार गए। परमेश्वर का संदूक शत्रुओं ने छीन लिया। एली के दोनों पुत्र मारे गए।

एली फाटक के पास कुर्सी पर बैठा युद्ध भूमि से समाचार आने की बाट जोह रहा था। समाचार सुनते ही वह कुर्सी पर से पछाड़ खाकर गिर पड़ा। उसकी गर्दन टूट गई और उसकी मृत्यु हो गई। एली एक अच्छा व्यक्ति था परन्तु उसने अपने दोनों पुत्रों को उनकी दुष्टता के लिए ताड़ना नहीं दी।

एली के पुत्र पीनहास की पत्नी परमेश्वर का भय मानने वाली स्त्री थी। उसका प्रसव समय निकट था। जब उसने युद्ध भूमि का समाचार सुना तब वह बहुत दुखी हो गई। उसने एक पुत्र को जन्म दिया और तुरंत ही उसकी मृत्यु हो गई। परन्तु अपनी मौत से पहले उसने अपने पुत्र का नाम ''ईकाबोद'' रखा, जिसका अर्थ है ''महिमा जाती रही''। वह जानती थी कि उनके मध्य परमेश्वर की उपस्थिति ही इस्राएल की महिमा है।

परमेश्वर के लोगों का परमेश्वर से दूर जाने का परिणाम कितना भयंकर होता है। एली के दुष्ट पुत्रों के कारण उनके परिवार पर और इस्राएल राष्ट्र पर भी विपत्ति आई। परमेश्वर का संदूक छीन लिया गया और युद्ध में बहुत से इस्राएली मारे गए। यदि आप एली के पुत्रों की तरह बनेंगे तो आप भी कष्ट उठाएँगे और आपके कारण दूसरों पर भी कष्ट आएगा। परंतु यदि आप शमूएल की तरह परमेश्वर और मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला जीवन जीएँगे तो परमेश्वर से आशीष प्राप्त करेंगे और आपके द्वारा दूसरों के जीवन भी आशीषित होंगे।

प्रश्न :

1. शमूएल कैसा बालक था?
2. एली के समय में परमेश्वर की वाचा का संदूक कहाँ रखा था?
3. एली की क्या गलती थी?
4. 'ईकाबोद' का क्या अर्थ है?
5. यह नाम किसे और कब दिया गया?

पाठ–17

अबीगैल

1 शमूएल, अध्याय 25

याद करें : यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरंभ है, और परम पवित्र ईश्वर को जानना ही समझ है। नीति. 9:10

मुख्य बिंदु : ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो, निर्बुद्धियों की तरह नहीं परन्तु बुद्धिमानों की तरह चलो। इफि. 5:15

पाठ परिचय :

हमने रूत के बारे में पढ़ा, जिसने परमेश्वर पर अपने विश्वास का प्रतिफल प्राप्त किया। बाइबल में हम अन्य स्त्रियों के विषय में पढ़ते हैं जो नम्र, बुद्धिमान और परमेश्वर का भय मानने वाली थीं। अबीगैल उनमें से एक थी। उसका पति नाबाल, बहुत धनी पुरुष था, परन्तु वह कठोर और दुष्ट था।

पाठ :

शाऊल के बाद अगला राजा बनने के लिए दाऊद का अभिषेक हो चुका था। परन्तु वह शाऊल के डर से जंगलों में भटक रहा था। जब नाबाल अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा था, तब दाऊद ने अपने दस जवानों को उसके पास भेजा कि कुछ भोजन वस्तु लेकर आएँ। दाऊद और उसके लोगों ने नाबाल के जानवरों और चरवाहों को शत्रुओं से सुरक्षा दी थी। इसलिए दाऊद ने सोचा कि नाबाल भी उसके लिए भला करेगा। परन्तु नाबाल ने दाऊद के लोगों का अपमान करके खाली हाथ लौटा दिया। दाऊद क्रोध से भर गया। वह अपने 400 योद्धाओं को लेकर चला कि नाबाल और जो कुछ उसका है सबको नाश कर दे।

नाबाल की पत्नी अबीगैल ने सुना कि उसके पति ने दाऊद के लोगों से क्या व्यवहार किया है। वह जानती थी कि परमेश्वर ने दाऊद

को राजा होने के लिए चुना है। उसने तुरंत ही रोटी, दाखमधु, माँस और अन्य भोजन वस्तुएँ लेकर गदहों पर लदवाईं। और अपने दासों को आगे-आगे दाऊद के पास भेज दिया और स्वयं भी उनके पीछे चली। वह गदहे पर चढ़ी पहाड़ की आड़ में उतर रही थी तब उसने देखा कि दाऊद और उसके 400 जवान तलवारें लेकर उनकी तरफ आ रहे थे। दाऊद को देखकर अबीगैल तुरंत गदहे पर से उतर गई और भूमि गिरकर उसे दण्डवत् किया। उसने अपने पति की गलती को अपने ऊपर ले लिया और उससे क्षमा माँगी। यहाँ अबीगैल अपने दोषी पति और दाऊद की तलवार के बीच खड़ी हुई। हमारे प्रभु यीशु ने भी यही किया। वह हमारे और परमेश्वर की तलवार के बीच खड़े हुए। हमारे और परमेश्वर के बीच मध्यस्थता करते हुए प्रभु ने हमारे पापों का दण्ड अपने ऊपर ले लिया, ताकि हम उस दण्ड से बच सकें।

दाऊद ने अबीगैल की विनती को सुना और उसकी भेंट को स्वीकार किया। फिर दाऊद अपनी छावनी में लौट गया। अबीगैल ने सारी बातें जब नाबाल को बताई तब वह बहुत डर गया। दस दिन के पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। दाऊद ने परमेश्वर का धन्यवाद किया कि परमेश्वर ने उसे हत्या के पाप से बचाया।

कुछ समय के पश्चात् दाऊद ने अबीगैल से विवाह कर लिया। वह खुशी से जंगलों में भटकने वाले दाऊद की पत्नी बन गई, क्योंकि वह जानती थी कि उसका पति परमेश्वर की ओर से अभिषिक्त राजा है। ''यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे।'' (2 तीमु. 2:12)।

टिप्पणी :

अबीगैल = आनंद का स्रोत

नाबाल = मूर्ख

प्रश्न :

1. नाबाल कैसा पुरुष था?

2. दाऊद नाबाल से क्यों क्रोधित हुआ?
3. अबीगैल ने कैसे दाऊद को बदला लेने से रोका?
4. अपनी बुद्धि और हिम्मत के लिए अंत में अबीगैल को क्या प्रतिफल मिला?

पाठ–18

सुलैमान का मंदिर

1 राजा, अध्याय 5–6

याद करें : जिसमें तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो। इफि. 2:22

मुख्य बिंदु : अपने हृदय को अपवित्र मत करो, क्योंकि वह परमेश्वर का मंदिर है।

पाठ परिचय :

परमेश्वर का दास, राजा दाऊद परमेश्वर के लिए एक मंदिर का निर्माण करना चाहता था। इस कार्य के लिए उसने बहुत सा सामान भी जमा कर लिया था। (इति. 22:14) परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, ''तू मेरे नाम का भवन न बनाने पाएगा, क्योंकि तू ने भूमि पर, मेरी दृष्टि में बहुत लोहू बहाया है। परन्तु तेरा पुत्र मेरे नाम का भवन बनाएगा।''

पाठ :

दाऊद की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र सुलैमान इस्राएल का राजा बना। उसे युद्ध करने की आवश्यकता नहीं थी। क्योंकि चारों तरफ शांति छाई थी। सुलैमान ने शांति के उन वर्षों का उपयोग परमेश्वर का मंदिर बनवाने के लिए किया।

उस समय सोर का राजा हीराम था। लबानोन के पहाड़ देवरारू की लकड़ियों के लिए मशहूर थे, वह हीराम के राज्य की सीमा में था। सुलैमान ने परमेश्वर का मंदिर बनाने के लिए हीराम से देवदारू खरीदने की बात की। हीराम ने सुलैमान की इच्छा के अनुसार उसे देवदारू और सनोवर की लकड़ी दी। और उसने सुलैमान से कहा, ''आज यहोवा धन्य है, जिसने दाऊद को उस बड़ी जाति पर राज्य करने के लिए एक बुद्धिमान पुत्र दिया है।'' हीराम ने दाऊद और सुलैमान से मित्रता करने

के कारण परमेश्वर के बारे में सुना होगा। आपको भी अपने मित्रों को परमेश्वर के बारे में बताना चाहिए।

इस्राएलियों को मिस्र से निकले 480 वर्ष बीत चुके थे, जब सुलैमान ने मंदिर का निर्माण आरंभ किया। इसे मोरिय्याह पर्वत पर यबूसी ओर्नान के खलिहान पर बनाया गया। यह स्थान यरूशलेम का एक भाग था, और यहीं पर परमेश्वर ने सुलैमान के पिता दाऊद को दर्शन दिया था। यही वह स्थान है जहाँ इसहाक की बलि चढ़ाने के लिए इब्राहीम से कहा गया था। यह मंदिर बहुत बड़ा नहीं था, परन्तु बहुत ही सुंदर था। मंदिर के दो मुख्य भाग थे-पवित्र स्थान और अति पवित्र स्थान। इस मंदिर को बनाने में सात वर्ष लगे। इसकी दीवारों और फर्श पर सुंदर लकड़ी लगी हुई थी। अनेक भाग सोने से मढ़े हुए थे। मंदिर वह स्थान है जहाँ परमेश्वर रहते हैं। परमेश्वर हमारे दिल में रहते हैं, इस कारण हम परमेश्वर का मंदिर हैं। 1 कुरि. 3:16।

इस मंदिर के निर्माण के लगभग 400 वर्ष के पश्चात् 587 ईसा पूर्व में बाबुल के राजा नबूकदनेसर के जल्लादों के प्रधान नबूजरदान ने इस मंदिर को आग लगाकर फूंक दिया। (2 राजा 25:9) और सोना, चाँदी और पीतल को बाबुल ले गया। परमेश्वर ने इस मंदिर को नाश करने की अनुमति दी क्योंकि इस्राएलियों ने पाप किया था और पवित्र स्थान को अपवित्र किया था। हमारा हृदय परमेश्वर का मंदिर है। यदि हम उसे अपवित्र करेंगे तो दण्ड अवश्य मिलेगा।

टिप्पणी :

जिस स्थान पर सुलैमान का मंदिर था, अब वह हारान-ए-शरीफ कहलाता है। अब यह मुसलमानों का एक पवित्र स्थान है। अब उस स्थान पर जो इमारत है उसे Dome of the Rock या कुब्बत अस-सखराह कहते हैं।

प्रश्न :

1. परमेश्वर ने दाऊद से क्यों कहा कि वह परमेश्वर का मंदिर न

बनाए?

2. मंदिर के लिए लकड़ी किस राजा ने दी?
3. मंदिर के मुख्य भाग कौन से हैं?
4. आज के युग में परमेश्वर का मंदिर क्या है?

पाठ–19

मीकायाह

1 राजा 22; 2 इतिहास 18

याद करें : यदि ये मेरी शिक्षा में स्थिर रहते, तो मेरी प्रजा के लोगों को मेरे वचन सुनाते; और वे अपनी बुरी चाल और कर्मों से फिर जाते। यिर्मयाह 23:22

मुख्य बिंदु : दुष्ट लोगों का साथ न देना।

पाठ परिचय :

क्या आपके मित्र बुरे हैं? बुरे लोगों की मित्रता का परिणाम अच्छा नहीं होता। आज हम एक राजा के विषय में सीखेंगे जो गलत संगति में पड़ गया।

पाठ :

सुलैमान की मृत्यु के पश्चात इस्राएल दो भागों में बँट गया। यहूदा और बिन्यामीन एक तरफ और बाकी दस गोत्र मिलकर एक भाग हो गए और इस्राएल कहलाए। इस्राएल पर शासन करने वाले लगभग सभी राजाओं ने वह किया जो परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था। उनमें अहाब राजा सबसे अधिक दुष्ट था। उसकी पत्नी ईज़ेबेल एक दुष्ट स्त्री थी। अहाब के दिनों में यहूदा पर यहोशापात राज्य करता था। वह परमेश्वर का भय मानता और उसके मार्गों पर चलता था। परमेश्वर ने यहोशापात को आशीष दी और वह दृढ़ हो गया।

एक दिन यहोशापात अहाब से मिलने दस गोत्रों की राजधानी शोमरोन गया। अहाब ने यहोशापात और उसके लोगों के लिए बड़े भोज की तैयारी की। तब उसने यहोशापात से कहा कि वह गिलाद के रामोत से युद्ध करने में उसकी सहायता करे। यहोशापात ने अपनी सेना लाकर युद्ध में अहाब की सहायता करने का वादा किया।

अहाब ने बाल के 400 भविष्यवक्ताओं को इकट्ठा किया। वे परमेश्वर के सच्चे नबी नहीं थे। वे ऐसे नबी थे जो राजा को प्रसन्न करने के लिए कुछ भी कह सकते थे।

उनकी बात सुनकर यहोशापात समझ गया कि वे सच्चे नबी नहीं हैं। उसने अहाब से पूछा, ''क्या यहाँ यहोवा का और भी कोई नबी नहीं है, जिस से हम पूछ लें?'' अहाब ने कहा, ''हाँ, एक पुरुष और है, जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछ सकते हैं। परन्तु मैं उससे घृणा रखता हूँ। क्योंकि वह मेरे विषय में कल्याण की नहीं, बल्कि हानि ही की भविष्यवाणी करता है। वह यिम्ला का पुत्र मीकायाह है।'' यहोशापात के जोर देने पर अहाब ने मीकायाह को बुलवा लिया। जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था, उसने मीकायाह से कहा कि जिस प्रकार अन्य भविष्यवक्ता राजा के विषय शुभ वचन कहते हैं, उसी प्रकार तू भी कहना। मीकायाह ने कहा, ''यहोवा के जीवन की शपथ, जो कुछ यहोवा मुझ से कहे, वही मैं कहूँगा।''

पहले मीकायाह ने राजा से कहा कि वह युद्ध के लिए जा सकता है, परन्तु अहाब समझ गया कि वह यह बात दिल से नहीं कह रहा। इसलिए अहाब ने मीकायाह से कहा, ''यहोवा का स्मरण करके मुझ से सच ही कह।'' तब मीकायाह ने एक दृष्टांत के रूप में उस बात का वर्णन किया जो अहाब और इस्राएल के साथ होने वाला था। पहले उसने एक दर्शन के विषय में कहा, कि परमेश्वर अपने सिंहासन पर से अहाब के सर्वनाश की योजना बना रहे हैं। फिर उसने कहा कि समस्त इस्राएल बिना चरवाहे की भेड़-बकरियों की तरह दिखाई दे रहे हैं। अंत में उसने कहा कि परमेश्वर ने अन्य नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाली आत्मा पैठाई है। यह सुनकर सिदक्कियाह ने जो नबियों में मुख्य था, मीकायाह के पास जाकर उसके गाल पर थप्पड़ मारा। राजा अहाब ने मीकायाह को बन्दीगृह में डलवा दिया। जो लोग परमेश्वर पर सच्चा विश्वास करते हैं और परमेश्वर के वचन सुनाने की हिम्मत करते हैं, उन्हें अक्सर निन्दा सहना और कष्ट उठाना पड़ता है।

अहाब और यहोशापात युद्ध के लिए गए। अहाब ने सोचा था कि वह विजयी होकर लौटेगा। परन्तु उसे भय भी था, अतः वह भेष बदलकर युद्ध क्षेत्र में गया। आप भेष बदलकर मनुष्यों को धोखा दे सकते हैं, परमेश्वर को नहीं। उस युद्ध में अहाब की मृत्यु हो गई। जैसा एलिय्याह के द्वारा परमेश्वर ने कहा था (1 राजा 21:19) कुत्तों ने उसका लोहू चाटा। परमेश्वर की धार्मिकता, पश्चाताप न करने वाले पापी को दण्ड मुक्त नहीं करती।

टिप्पणी :

मीकायाह - यहोवा की तरह कौन है? 1 राजा 20:35-43 में जो नबी है, वह मीकायाह हो सकता है।

प्रश्न :

1. गिलाद के रामोत से युद्ध करने कौन से राजा गए?
2. किन दो राजाओं ने परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहा?
3. अहाब, मीकायाह से क्यों घृणा करता था?
4. मीकायाह को परमेश्वर का वचन सुनाने का क्या प्रतिफल प्राप्त हुआ?
5. दुष्ट राजा अहाब के साथ क्या हुआ?

पाठ–20

एस्तेर रानी

एस्तेर, अध्याय 1–3

याद करें : क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिए राजपद मिल गया हो? (एस्तेर 4:14)

मुख्य बिंदु : परमेश्वर अपने दासों को आशीष देते हैं, जो भला करते और उनके नाम के कारण कष्ट उठाते हैं।

पाठ परिचय :

पाठ 18 के अंत में हमने सीखा था कि बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशलेम पर चढ़ाई करके मंदिर को नाश कर दिया था। उस समय वह हज़ारों यहूदियों को बंधुआ बनाकर अपने साथ बाबुल ले गया था। अनेक वर्षों के बाद वहाँ का राजा क्षयर्ष बना। वह 127 देशों पर एक साथ राज्य करता था। उसका राज्य भारत से लेकर ईथियोपिया तक फैला हुआ था। और यहूदी लोग इन सभी देशों में फैल गए थे।

पाठ :

अपने राज्य के तीसरे वर्ष में क्षयर्ष ने अपनी महिमा और ऐश्वर्य का प्रदर्शन करने के लिए एक बड़ी जेवनार की। सब हाकिम और कर्मचारी, सब सेनापति और प्रान्तों के प्रधान और हाकिम और शूशन के लोग उसके सम्मुख आ गए। यह जेवनार सात दिन तक रही। जेवनार के आखिरी दिन राजा ने वशती रानी को बुलाया ताकि वह देश देश के लोगों और हाकिमों को अपनी सुंदरता दिखाए। एक भली स्त्री के लिए ऐसा करना असंभव था, इस कारण वशती ने आने से इंकार कर दिया। क्षयर्ष शराब के नशे में था, इसलिए वह क्रोध से भर गया। क्रोध में ही उसने वशती से रानी होने का पद छीन लिया क्योंकि उसने राजा की आज्ञा नहीं मानी थी।

लगभग चार वर्षों के पश्चात् राजा ने नई रानी की खोज की। सभी

लड़कियों में से क्षयर्ष राजा ने एस्तेर को पसंद किया, जो एक यहूदी परिवार से थी। वह अति सुंदर थी और उसके व्यवहार के कारण सब उसे पसंद करते थे। पहले उसका नाम ''हदस्सा'' था। वह मोर्देकै की चचेरी बहिन थी, परन्तु एस्तेर के माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् मोर्देकै ने उसे अपनी बेटी की तरफ पाला था। मोर्देकै राजमहल का कर्मचारी था। राजा के कर्मचारियों में हामान नामक एक व्यक्ति था जो बहुत दुष्ट था। वह चाहता था कि सब लोग झुककर उसे दण्डवत करें, परन्तु मोर्देकै ऐसा नहीं करता था क्योंकि वह जीवते परमेश्वर की आराधना करने वाला यहूदी था। इस कारण हामान उससे बहुत क्रोधित था और चाहता था कि मोर्देकै और उसके साथ यहूदी जाति के सब लोगों को भी मार डाला जाए। उसने एक युक्ति निकाली और राजा के पास जाकर कहा, ''तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहने वाले देश-देश के लोगों के मध्य में तितर-बितर और छिटकी हुई एक जाति है, जिसके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं। वे राजा के कानून पर नहीं चलते, इसलिए उन्हें जीवित रहने देना राजा के लिए लाभदायक नहीं है।''

हामान ने राजा को उस जाति का नाम नहीं बताया था, और न ही राजा को यह समझ आया कि यह उसकी रानी एस्तेर के लोग हैं। हामान ने राजा से कहा, ''यदि राजा को स्वीकार हो तो उन्हें नष्ट करने की आज्ञा लिखी जाए, और मैं राजा के भण्डार के लिए दस हज़ार किक्कार चाँदी दूँगा।'' तब राजा ने अपने हाथ से अंगूठी उतार कर दे दी और जो चाहे सो करने की अनुमति भी दे दी। तुरंत ही हामान ने राजा के लेखकों को बुलाकर यह आज्ञा लिखवाई कि समस्त प्रान्तों के यहूदी लोग मार डाले जाएँ। और उन चिट्ठियों पर राजा के अंगूठी से छाप लगाई गई। उसने मोर्देकै के लिए एक फाँसी का खंभा भी बनवाया।

जब मोर्देकै को इस आज्ञा की जानकारी मिली, तब उसने अपने वस्त्र फाड़े, और राख डालकर, नगर में जाकर ऊँचे शब्द से चिल्लाकर रोने लगा। राजाज्ञा की बात सुनकर सभी यहूदी बड़ा विलाप करने, उपवास करने और प्रार्थना करने लगे। जब एस्तेर को इस बात का समाचार मिला तब वह शोक से भर गई। उसने अपनी सहेलियों के साथ

मिलकर तीन दिन का उपवास किया।

यह एक नियम था कि यदि कोई बिना बुलाए राजा की उपस्थिति में आए तो वह मार डाला जाए। परन्तु एस्तेर ने अपनी जाति के लिए स्वयं को खतरे में डाला और राजा की उपस्थिति में पहुँच गई कि अपने लोगों के लिए विनती करे।

राजा ने एस्तेर को देखा तो प्रसन्न हुआ, और उस पर दया दिखाई और उसकी विनती सुनी। राजा ने तुरंत ही यहूदियों की सुरक्षा की आज्ञा निकाली और हामान को उसी फाँसी पर लटकवा दिया जो उसने मोर्दकै के लिए बनवाया था।

यहूदी लोग आज भी अपने राष्ट्र के छुटकारे का त्योहार मनाते हैं जिसे ''पूरीम'' कहते हैं। निश्चित रूप से परमेश्वर अपने लोगों को प्रतिफल देते हैं, जो भला करते और उसके नाम से कष्ट उठाते हैं। दुष्टों को भी उनका दण्ड प्राप्त होगा।

टिप्पणी :

एस्तेर = तारा

* यद्यपि एस्तेर की पुस्तक में हम ''परमेश्वर'' शब्द नहीं पाते, परन्तु आरंभ से अंत तक परमेश्वर के लोगों को दी गई सुरक्षा देखते हैं। नए नियम में पूरीम पर्व का उल्लेख नहीं है परन्तु यूहन्ना 5:1 में यहूदियों के पर्व का उल्लेख है।

प्रश्न :

1. वशती कौन थी?
2. मोर्दकै और एस्तेर में क्या रिश्ता था?
3. हामान मोर्दकै से क्यों क्रोधित था?
4. मोर्दकै को दण्ड देने के लिए हामान ने क्या किया?
5. एस्तेर ने अपनी जाति की रक्षा कैसे की?

पाठ-21

बाबुल में बंधुआई

2 इति. 36; दानिय्येल-1

याद करें : क्या तू हमको फिर न जिलाएगा, कि तेरी प्रजा तुझमें आनंद करे? भजन 85:6

मुख्य बिंदु : बचपन से ही अच्छे निर्णय लो।

पाठ परिचय :

यहोयाकीम, यहोयाकीन, और सिदक्कियाह यहूदा के अंतिम तीन राजा हुए। यहोयाकीम ने ग्यारह वर्ष और यहोयाकीन ने तीन महीने राज्य किया। तब यहोयाकीन के चाचा सिदक्कियाह ने ग्यारह वर्ष राज्य किया। यहोयाकीम ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया। भविष्यवक्ता यिर्मयाह के द्वारा परमेश्वर ने उसे चेतावनी दी, परन्तु उसने ध्यान नहीं दिया। (यिर्म. 36)

पाठ :

यहोयाकीम के राज्य के तीसरे वर्ष में नबूकदनेस्सर ने पहली बार यरूशलेम पर आक्रमण किया। बाबुल की सेना के सामने नगरवासियों ने समर्पण कर दिया। धन-दौलत लूटकर लोगों को बन्धुआ बनाकर वे उन्हें बाबुल ले गए।

दस वर्ष के पश्चात् जब यहोयाकीम का भाई सिदक्कियाह यहूदा का राजा था, उस समय नबूकदनेस्सर ने फिर यरूशलेम पर आक्रमण किया। उसने सिदक्कियाह की आँखें निकाल दीं और उसे बांधकर बाबुल ले गया। उन्होंने यरूशलेम की इमारतों और मंदिर को आग लगाकर नष्ट कर दिया। और बहुत सारे लोगों को बंदी बनाकर ले गया। इस तरह इस्राएल की तरह यहूदा भी बन्धुआई में चला गया।

पहली बन्धुआई में लाए हुए लोगों में से नबूकदनेस्सर ने राजपरिवार

के कुछ जवानों को चुना। ये जवान बुद्धिमान, स्वस्थ और सुंदर थे। बाबुल के राजा के राजभवन में रहने के योग्य थे। उन्हें बाबुल की भाषा और साहित्य की शिक्षा दी गई। इन युवकों में दानिय्येल और उसके मित्र हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह भी थे। उनके नाम बदलकर क्रमशः बेलतशस्सर, शद्रक, मेशक और अबेदनगो रखा गया। उन्हें राजा की मेज़ पर से भोजन और दाखमधु दिया गया, जिसे पहले मूर्तियों को अर्पित किया जाता था।

परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह राजा का भोजन खाकर और दाखमधु पीकर अपवित्र नहीं होगा। दानिय्येल ने अपने आसपास के रीति रिवाज़ों का पालन नहीं किया। वह परमेश्वर की संतान था और हर एक बात में परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता था। दानिय्येल ने अपना फैसला अपने मित्रों को बताया। उन्होंने भी उसके निर्णय में उसका साथ दिया। उन चारों ने मिलकर खोजों के प्रधान से विनती की कि उन्हें सादा शाकाहारी भोजन दिया जाए। दस दिन शाकाहारी भोजन खाने के पश्चात् जब उनकी जाँच हुई तब वे उन सब जवानों से स्वस्थ और सुंदर दिखे जिन्होंने राजा का भोजन खाया था। परमेश्वर ने उनकी विशेष देखभाल की क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का आदर किया था।

दानिय्येल ने उस अच्छे निर्णय का पालन अपने जीवन भर किया। वह उस साम्राज्य में सबसे ऊँचे पद पर पहुँचा। वह मनुष्यों के बीच महान हुआ और परमेश्वर ने उसे ''अति प्रिय'' कहा। (दानि. 9:23) प्रभु आपकी सहायता करें कि दानिय्येल की तरह आप भी अच्छे निर्णय ले सकें।

टिप्पणी :

दानिय्येल = परमेश्वर न्यायी है

बेलतशस्सर = बेल का राजकुमार (बेल= बाबुल की देवी)

हनन्याह = यहोवा दयालु है

शद्रक = सूर्य देवता से ज्ञान प्राप्त

मीशाएल	= परमेश्वर के जैसा
मेशक	= ''शेशक'' (देवी) के नाम से लिया हुआ नाम
अजर्याह	= यहोवा संभालने वाला
अबेदनगो	= नेगो का दास

प्रश्न :

1. कौन सा राजा यहूदा को बंधुआई में ले गया?
2. नबूकदनेस्सर के पहले आक्रमण के समय कौन यरूशलेम में राजा था?
3. उन चार युवकों के नाम बताओ जिन्हें बाबुल ले जाया गया?
4. दानिय्येल ने अपने मन में क्या निर्णय लिया था?

पाठ–22

अय्यूब का परिवार

अय्यूब, अध्याय 1

याद करें : मुझे तो निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है, और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। नीति. 19:25

मुख्य बिंदु : कष्टों में परमेश्वर के विरुद्ध न कुड़कुड़ाएँ।

पाठ परिचय :

लगभग 4000 वर्ष पूर्व, ऊज़ देश में अय्यूब नाम का एक भक्त पुरुष रहता था। यह इब्राहीम, इसहाक और याकूब के जीवन काल का लगभग समय था। अय्यूब अति धनी और महान पुरुष था। वह निर्दोष और सीधा था और परमेश्वर का भय मानता और बुराई से अलग रहता था।

पाठ :

अय्यूब ने उस जमाने में भक्त जीवन व्यतीत किया जब न व्यवस्था दी गई थी और न बाइबल थी। अय्यूब के जीवन से हम सीखते हैं कि किसी भी परिस्थिति में कोई भी व्यक्ति परमेश्वर की संतान के रूप में जीवन व्यतीत कर सकता है।

अय्यूब के सात पुत्र और तीन पुत्रियाँ थीं। उसने आपसी प्रेम और परमेश्वर के भय में उनका पालन पोषण किया। बड़े होने पर भी वे एक दूसरे से प्रेम करते थे। अय्यूब के बेटे बारी–बारी से एक दूसरे के घर में खाने–पीने को जाया करते थे, और अपनी तीनों बहिनों को भी अपने साथ खाने–पीने के लिए बुलवाते थे। जब जेवनार के दिन पूरे हो जाते तब अय्यूब बड़ी भोर को उठकर उनकी गिनती के अनुसार होमबलि चढ़ाता था, क्योंकि वह सोचता था कि हो सकता है कि उन्होंने अपने हृदयों में कोई पाप किया हो।

हो सकता है कि अय्यूब की पत्नी ने भी बच्चों को इस प्रकार पालने में सहयोग किया हो। वह एक अच्छी माता रही होगी परन्तु उसका विश्वास अपने पति की तरह नहीं था। जब कष्ट आए तब उसने परमेश्वर के विरुद्ध बातें कीं। कष्टों में ही हमेशा विश्वास परखा जाता है। कष्टों में परमेश्वर के विरुद्ध कुड़कुड़ाना नहीं चाहिए।

पद 5 में हम पढ़ते हैं कि अय्यूब अपने पुत्रों को पवित्र करता था। जो ज्ञान उसे प्राप्त था उसके आधार पर ही वह ऐसा करता था। परन्तु आज हमारे पास परमेश्वर का वचन लिखित रूप में है जो हमें बताता है कि हम कैसे पवित्र बन सकते हैं। 1 यूहन्ना 1:7 में हम पढ़ते हैं कि ''उसके पुत्र प्रभु यीशु का लोहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।'' क्या आप उस लोहू से शुद्ध हुए हो?

टिप्पणी :

* अय्यूब = पश्चाताप करना, लौटना (परमेश्वर के पास)

* यहेजकेल में नूह और दानिय्येल के साथ अय्यूब का उल्लेख है (परमेश्वर के तीन पवित्र पुरुष)।

* याकूब 5:11 अय्यूब के धीरज के विषय में बताता है। अपनी विपत्तियों के दिनों के पश्चात् वह 140 वर्ष और जीवित रहा।

* इस पुस्तक में अंक तीन और सात का उल्लेख अनेक बार देखते हैं।

प्रश्न :

1. अय्यूब किस देश का था?
2. अय्यूब के चरित्र के विषय में आप क्या जानते हैं?
3. उसके कितने पुत्र और पुत्रियाँ थीं?
4. उसने उनका पालन-पोषण कैसे किया?
5. जेवनार के अंत में अय्यूब अपने बच्चों के लिए क्या करता था?

पाठ–23

अय्यूब की विपदाएँ

अय्यूब अध्याय 1, 2

याद करें : वह मुझे घात करे; तो भी मैं उस पर विश्वास रखूँगा। अय्यूब 13:15

मुख्य बिंदु : कष्टों में विजयी हों।

पाठ परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा कि अय्यूब और उसका परिवार एक अच्छा और भक्ति का जीवन व्यतीत कर रहे थे। शैतान को यह सहन न हुआ। परमेश्वर के लोगों की गलती निकालना उसका काम है। इब्रानी भाषा में ''शैतान'' शब्द का अर्थ है ''जो इंतज़ार में बैठा है'' यूनानी भाषा ने शैतान शब्द का अर्थ है ''दोष लगाने वाला''। प्रेरित पतरस कहते हैं कि वह गर्जनेवाले सिंह की तरह इस खोज में रहता है कि किसको फाड़ खाए। (1 पतरस 5:8)।

पाठ :

परमेश्वर जानते थे कि शैतान अय्यूब को ध्यान से देख रहा है। उसने परमेश्वर की उपस्थिति में अय्यूब पर दोष लगाया। उसने कहा कि ''क्या अय्यूब बिना लाभ के परमेश्वर का भय मानता है? उसको आपने जीवन की सुखसुविधाएँ भरपूरी से दी हैं इसलिए वह आपका भय मानता है।''

शैतान ने जो कहा, वह सही नहीं था। इस बात को सिद्ध करने के लिए परमेश्वर ने शैतान को अनुमति दी कि अय्यूब की परीक्षा करे।

शीघ्र ही शैतान ने ऐसी कार्यवाही की, कि अय्यूब को बहुत से नुकसान एक साथ उठाने पड़े ताकि उसे गहरा दुःख पहुँचे। अय्यूब के पास 7000 भेड़ें, 3000 ऊँट, 1000 बैल और 500 गदहियाँ थीं। साथ ही

बहुत सारे दास थे। तुरंत ही अय्यूब के ऊपर एक के बाद एक विपत्ति आने लगी। कुछ ही घंटों के भीतर ही उसकी भेड़ बकरियाँ आग गिरने से मर गईं; कसदी लोग ऊँटों को और बैलों और गदहियों को धावा करके ले गए। शैतान ने चालाकी से कार्य किया कि सब कुछ एक साथ नष्ट हो जाए और हर एक घटनास्थल से केवल एक सेवक बचकर अय्यूब को तबाही का समाचार सुनाने आए। शैतान ने एक के बाद एक तबाही के बीच अंतराल नहीं रखा ताकि अय्यूब को सदमा लगे और वह विद्रोह करे। जब अय्यूब को इन सब तबाही का समाचार मिला तब उसने कुछ भी नहीं कहा। परन्तु जब चौथे सेवक ने उसके पुत्रों की मृत्यु का समाचार दिया, तब वह अपने दुख पर काबू न रख सका। फिर भी वह भूमि पर गिरा और परमेश्वर को दण्डवत किया। अपने गहरे शोक में भी अय्यूब ने परमेश्वर की महिमा की और कहा, ''यहोवा ने दिया और यहोवा ही ने लिया, यहोवा का नाम धन्य है।'' उसने परमेश्वर के विरुद्ध कोई बात न कही, जैसा शैतान चाहता था।

शैतान जान गया था कि उसकी हार हो गई है। वह फिर परमेश्वर की उपस्थिति में पहुँचा। उसने परमेश्वर से अय्यूब के शरीर को दुख पहुँचाने की अनुमति ली। उसने अय्यूब को पाँव के तलवे से लेकर सिर की चोटी तक बड़े-बड़े फोड़ों से पीड़ित किया। तब अय्यूब खुजलाने के लिए एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया। वह कितनी तकलीफदेह अवस्था से गुजर रहा था। उसकी पत्नी ने उसे आश्वासन देने के बजाय उससे कहा, ''क्या अब भी तू अपनी खराई पर बना है? परमेश्वर की निंदा कर, और चाहे मर जाए तो मर जा।'' परन्तु उस भयंकर पीड़ा में भी अय्यूब ने अपनी पत्नी से सही बात की और परमेश्वर की स्तुति की। अय्यूब ने कहा, ''क्या हम जो परमेश्वर के हाथ से सुख लेते हैं, दुख न लें?'' इन सब कष्टों के बावजूद अय्यूब ने अपने मुँह से कोई पाप नहीं किया।

प्रश्न :

1. अय्यूब के विषय में शैतान ने परमेश्वर से क्या कहा?

2. कितने सेवक तबाही का समाचार अय्यूब के पास लाए?
3. अपने पुत्रों की मृत्यु का समाचार सुनकर अय्यूब ने क्या कहा?
4. अय्यूब की पत्नी ने उसे क्या सलाह दी?

पाठ–24

अय्यूब का प्रतिफल

अय्यूब, अध्याय 42

याद करें : हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है। रोमियों 5:3-4

मुख्य बिंदु : यदि हम प्रभु के लिए दुख उठाते हैं, तब परमेश्वर उसके योग्य प्रतिफल हमें देंगे।

पाठ परिचय :

क्या आप कल्पना कर सकते हो, कि वह अनुभव कैसा होगा यदि आप परमेश्वर की आवाज को अपने कानों से सुनें? अय्यूब जानता था कि यदि वह परमेश्वर की आवाज को सुन सकता, तो परमेश्वर उससे क्या कहते। उसे निश्चय था कि परमेश्वर उस से कहते, ''अय्यूब, तुम एक अच्छे व्यक्ति और एक विश्वस्त दास हो। यह गलत है कि तुम्हें कष्ट उठाना पड़ रहा है।'' परन्तु परमेश्वर ने वास्तव में जो कहा, वह आश्चर्यचकित करने वाली बात है।

पाठ :

अय्यूब के कष्टों के विषय में सुनकर उसके तीन मित्र, एलीपज, बिलदद और सोपर उससे मिलने आए।

अय्यूब की तरह वे भी जीवते परमेश्वर को जानते और उसका भय मानते थे।

यह अच्छी बात थी कि वे अपने उस मित्र से मिलने आए, जो कष्ट उठा रहा था। परन्तु जब उन्होंने देखा कि अय्यूब का रोग और उसका दुख कितना गहरा था, तब वे सात दिन और सात रात उसके संग भूमि पर बैठे रहे और किसी ने उससे एक भी बात न कही।

उन्होंने सोचा कि अय्यूब ने पाप किया है इस कारण उस पर ये कष्ट आए हैं। इस तरह से की गई उनकी बातचीत अय्यूब को सांत्वना न दे सकी। जब कोई बीमार हो या कष्ट में हो, तब ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि उसका कारण उनका पाप है। पाप के कारण रोग आते हैं, परन्तु सारे रोगों का कारण पाप नहीं होता। यह अय्यूब के जीवन से हम समझ सकते हैं।

अय्यूब ने अपने पक्ष में उनको उत्तर दिया। अय्यूब के वार्तालाप से यह स्पष्ट है कि अपने कष्टों में भी वह परमेश्वर के समीप था। वह कह सका, ''चाहे वह मुझे घात करे, तौभी मैं उस पर भरोसा रखूंगा।'' अंत में परमेश्वर ने आंधी में से अय्यूब से बात की। परमेश्वर ने अय्यूब से कहा कि परमेश्वर के मार्ग मनुष्य की समझ से परे हैं। परमेश्वर के शब्द सुनकर अय्यूब टूट गया और उसने परमेश्वर के व्यक्तित्व के विषय में नई ज्योति पाई। उसने कहा, ''मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं। इसलिए मुझे अपने ऊपर घृणा आती है और मैं धूल और राख में पश्चाताप करता हूँ।''

परमेश्वर ने अय्यूब के मित्रों से कहा, ''अब तुम सात बैल और सात मेढ़े छांटकर मेरे दास अय्यूब के पास जाकर अपने लिए होमबलि चढ़ाओ, तब मेरा दास अय्यूब तुम्हारे लिए प्रार्थना करेगा।'' उन्होंने ऐसा ही किया। परमेश्वर ने अय्यूब की प्रार्थना को ग्रहण किया। जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की, तब परमेश्वर ने उसे सम्पन्न किया और जितना अय्यूब के पास पहले था, उसका दुगना परमेश्वर ने उसे दिया।

अय्यूब की परीक्षा के समय अय्यूब के मित्रों और संगियों ने उसे छोड़ दिया था। अब वे सब उससे मिलने आए और उसे एक-एक सिक्का और सोने की एक एक बाली दी।

परमेश्वर ने उसे फिर से सात बेटे और तीन बेटियाँ देकर उसके परिवार को आशीषित किया। जब अय्यूब रोगी था और मरने पर था, तब उसने आशापूर्ण शब्द कहे। अय्यूब 19:25-26 में हम पढ़ते हैं, ''मुझे तो

निश्चय है कि मेरा छुड़ानेवाला जीवित है और वह अन्त में पृथ्वी पर खड़ा होगा। और अपनी खाल के नष्ट हो जाने के बाद भी मैं शरीर में होकर परमेश्वर का दर्शन पाऊँगा।'' प्रभु यीशु के इस संसार में जन्म लेने से लगभग 2000 वर्ष पूर्व कहे गए अय्यूब के ये वचन, प्रभु यीशु के दोबारा आगमन की भविष्यवाणी है। जब तुरही फूँकी जाएगी, तब सब विश्वासी अविनाशी शरीर के साथ जी उठेंगे। (1 कुरि. 15:53)।

परमेश्वर ने अय्यूब को 140 वर्ष और पृथ्वी पर दिए। और वह अपने चार पीढ़ी तक अपना वंश देखने पाया।

कष्ट उठाने वाले विश्वासियों के लिए अय्यूब एक उत्तम उदाहरण है।

टिप्पणी : अय्यूब की बेटियों के नाम :

यमीमा = प्रकाश (दुख के अंधकार के पश्चात्)

कसीआ (अगर) सुगंधित पौधा (भजन 45:8)

केरेन्हप्पूक = संपन्नता का सींग

प्रश्न :

1. अय्यूब को सांत्वना देने के लिए आए मित्रों के नाम बताओ।
2. अय्यूब के मित्रों ने उसके कष्टों का क्या कारण बताया?
3. क्या हुआ जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की?
4. अपने कष्टों के बाद अय्यूब को क्या आशीषें मिलीं?
5. प्रभु यीशु के द्वितीय आगमन के बारे में अय्यूब की भविष्यवाणी के शब्द क्या हैं?

पाठ–25

प्रेरित

यूहन्ना 1:35–42 लूका 5:1–11 मत्ती 10:24

याद करें : यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो। यूहन्ना 13:35

मुख्य बिंदु : परमेश्वर उन लोगों का उपयोग करते हैं जो स्वयं को पूर्ण रूप से समर्पित करते हैं।

पाठ परिचय :

दो मित्र थे जो परमेश्वर से प्रेम करते थे। परमेश्वर ने भी उनसे बहुत भलाई की थी, अतः वे भी परमेश्वर के लिए कुछ विशेष कार्य करना चाहते थे। वे परमेश्वर को एक तोहफा देना चाहते थे जिससे परमेश्वर प्रसन्न हों। उन्होंने सोचा कि परमेश्वर के पास तो सब कुछ है फिर ऐसा क्या है जो वे परमेश्वर को दे सकते हैं। बहुत सोचने पर उन्हें एक विचार आया। वे कुछ ऐसा परमेश्वर को देने वाले थे जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो जाएँगे। क्या आप जानना चाहते हैं कि वह क्या था? आज के पाठ को ध्यान से सुनने पर आप यह जान जाएँगे।

पाठ :

प्रेरित शब्द का अर्थ है ''जो भेजा गया है''। एक राजा अथवा सम्राट के द्वारा विशेषाधिकार देकर भेजा गया व्यक्ति प्रेरित कहलाता था। हमारे प्रभु यीशु जब इस संसार में थे, तब उनके अनेक चेले थे। उनमें से प्रभु ने बारह लोगों को प्रेरित नियुक्त किया, ''ताकि वे उसके साथ साथ रहें, और वह उन्हें भेजे कि वे प्रचार करें, और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार रखें।'' (मरकुस 3:14–15) स्वयं प्रभु ने उन्हें प्रेरित कहा। (लूका 6:13)। बच्चो आप को उनके नाम याद रखना चाहिए। वे थे :

पतरस, अंद्रियास, याकूब, यूहन्ना, फिलिप्पुस, बरतुल्मै, मत्ती, थोमा, हलफई का पुत्र याकूब, शमौन जेलोतेस, याकूब का बेटा/भाई यहूदा और यहूदा इस्करियोती।

हम प्रेरित पौलुस के बारे में जानते हैं। वह उन बारहों में से नहीं था जिन्हें प्रभु ने अपने कार्य के आरंभ में चुना था। वह तरसुस का रहने वाला शाऊल था जिसे परमेश्वर ने स्वर्ग से दर्शन देकर अपने लिए प्रेरित होने के लिए चुन लिया था। इसी कारण वह प्रेरित पौलुस के नाम से जाना गया। इसके अतिरिक्त नए नियम में प्रेरित शब्द को सामान्य अर्थ में कुछ लोगों के लिए प्रयोग किया गया है। (देखें–गलतियों 1:2; 2:9 यूहन्ना 7:5)।

अंद्रियास और संभवत: यूहन्ना भी यूहन्ना बपतिस्मादाता के पहले चेलों में से थे। इस संसार में अधिकांश लोग अन्य लोगों से महान होना चाहते हैं। परन्तु यूहन्ना बपतिस्मादाता वैसा नहीं था। वह अपनी बड़ाई नहीं चाहता था। वह चाहता था कि उद्धारकर्त्ता प्रभु यीशु की बड़ाई और आदर हो। उसने अपने चेलों को प्रोत्साहित किया कि वे प्रभु यीशु के पीछे हो लें। उसने अपने शिष्यों को बताया कि ''प्रभु यीशु परमेश्वर का मेम्ना हैं जो संसार के पाप उठा ले जाता है।'' यूहन्ना बपतिस्मादाता के शब्दों को सुनकर उसके दो चेले प्रभु यीशु के पीछे हो लिए, जिनमें से एक अंद्रियास था।

अंद्रियास ने अपने भाई पतरस को प्रभु यीशु के बारे में बताया। पतरस प्रभु के पास आ गया। संभवत: प्रभु यीशु के बारे में यूहन्ना से सुनकर उसका भाई याकूब भी प्रभु यीशु के पास आया। हमें भी दूसरों को प्रभु के बारे में बताना चाहिए ताकि वे भी प्रभु यीशु पर विश्वास करें।

प्रभु यीशु ने पतरस और उसके साथियों को अपने पीछे हो लेने के लिए बुलाया। पीछे हो लेने का अर्थ है, प्रभु यीशु के लिए जीवन व्यतीत करना और प्रभु के साथ कार्य करना। अपना कुछ धन या थोड़ा समय प्रभु को देना काफी नहीं है। हमें स्वयं को पूर्ण रूप से परमेश्वर को

समर्पित करना होगा। हम पढ़ते हैं कि याकूब और यूहन्ना अपना सब कुछ छोड़कर प्रभु यीशु के पीछे हो लिए। ऐसा प्रतीत होता है कि वे सम्पन्न लोग थे परन्तु वे अपनी संपत्ति को त्यागकर प्रभु यीशु के शिष्य बन गए।

प्रेरित मत्ती को चुंगी-चौकी से बुलाया गया था। (मत्ती 9:9)। जब पतरस प्रभु यीशु के पास आए, तब फिलिप्पुस बुलाया गया। हम नहीं जानते कि अन्य शिष्य कब बुलाए गए। परन्तु बुलाए जाने पर उन्होंने आज्ञा मानी और प्रभु के पीछे हो लिए।

कुछ समय के बाद प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को यह प्रचार करने के लिए भेजा, कि स्वर्ग का राज्य निकट है। प्रभु ने उन्हें सामर्थ दी ताकि वे आश्चर्यकर्म कर सकें, रोगियों को चंगा करें और दुष्टात्माओं को निकाले। जब हम पूर्ण रूप से स्वयं को प्रभु के लिए समर्पित करते हैं तब ही प्रभु हमारा उपयोग कर सकते हैं। प्रभु हमारी सहायता करें कि हम सब अपने आप को प्रभु यीशु को समर्पित करें।

टिप्पणी :

नए नियम में यूनानी भाषा के ''अपोस्टोलोस'' शब्द का 80 बार प्रयोग हुआ है।

नतनएल का दूसरा नाम बरतुल्मै हो सकता है। यह माना जाता है कि सलोमी, यीशु की माता मरियम की बहिन थी, और याकूब और यूहन्ना सलोमी के पुत्र थे। (तुलना करें : मरकुस 15:40; 16:1; मत्ती 27:56)।

प्रश्न :

1. 'प्रेरित' शब्द का क्या अर्थ है?
2. बारह शिष्यों के नाम बताएँ।
3. यूहन्ना का कौन सा शिष्य प्रभु के पीछे हो लिया?
4. प्रभु यीशु का शिष्य बनने से पहले मत्ती क्या कार्य करता था?

पाठ–26

नीकुदेमुस

यूहन्ना 3:1–16; 7:50–53; 19:39

याद करें : परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना 3:16

मुख्य बिंदु : मात्र प्रभु यीशु मसीह ही उद्धार का मार्ग हैं।

पाठ परिचय :

घने अंधकार में यरूशलेम की सड़कों पर एक व्यक्ति चुपचाप चला जा रहा था। कौन था वह? वह नीकुदेमुस नाम का एक सुनामी व्यक्ति था। वह कहाँ जा रहा था? आज हम उसके बारे में ही सीखेंगे।

नीकुदेमुस एक फरीसी था। वह यहूदियों का सरदार और इस्राएल का शिक्षक था। जब उसने प्रभु यीशु के द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के बारे में सुना, तब वह प्रभु से मिलना चाहता था। परन्तु वह अपने मित्रों से डरता था इस कारण वह रात के समय प्रभु से मिलने आया।

हम नीकुदेमुस के बारे में केवल यूहन्ना की पत्री में ही पढ़ते हैं। तीसरे अध्याय के पहले भाग में हम प्रभु यीशु और नीकुदेमुस के बीच के वार्तालाप को देखते हैं। प्रभु यीशु एक अच्छे शिक्षक थे। उन्होंने लोगों को दिन प्रतिदिन के जीवन से संबंधित दृष्टांतों के द्वारा परमेश्वर के राज्य के सत्यों की शिक्षा दी। वे भेड़, रोटी, खेत, बैल, मछली और जाल जैसे सामान्य वस्तुओं का उदाहरण देते थे। तथापि, उन्होंने एक फरीसी को जो मूसा की व्यवस्था का शिक्षक था, उसे मूसा की पुस्तक में से पीतल के सर्प का उदाहरण दिया।

नीकुदेमुस प्रभु यीशु के द्वारा किए गए आश्चर्यकर्मों के विषय में बात कर रहा था, परन्तु प्रभु ने उसे परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर विश्वास करने के बारे में कहा। मनुष्य की बुद्धि के अनुसार, वह सोचता

है कि उसे उद्धार प्राप्त करने के लिए कुछ कार्य करना होगा। परन्तु उद्धार के लिए परमेश्वर का मार्ग है–'विश्वास करके नया जन्म पाओ।'' नीकुदेमुस एक फरीसी था, और फरीसी लोग सतर्कतापूर्वक व्यवस्था का पालन करते थे। फिर भी प्रभु यीशु ने उससे कहा कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए उसे नया जन्म पाना होगा। संसार का सबसे अच्छा व्यक्ति भी अपनी योग्यता के कारण स्वर्ग नहीं जा सकता, क्योंकि हर एक मनुष्य जन्म से पापी है। वैसे ही कोई भी मनुष्य इतना अधिक पापी नहीं है कि प्रभु यीशु उसका उद्धार नहीं कर सकते।

नीकुदेमुस ने प्रभु यीशु से पूछा कि मनुष्य जब बूढ़ा हो गया, तो कैसे दोबारा जन्म ले सकता है।

प्रभु यीशु ने नए जन्म के बारे में उस से चार बातें कहीं।

1. यह क्या नहीं है : – शरीर से नहीं।

2. यह क्या है : – जल से (परमेश्वर का वचन) और आत्मा से (पवित्र आत्मा)

3. यह कैसे होता है : – ऊँचे पर उठाए गए मनुष्य के पुत्र पर विश्वास करने से।

4. यह कैसे जाना जा सकेगा :– जिस प्रकार हम हवा की सामर्थ का अनुभव करते हैं, यद्यपि हम उसे देख नहीं सकते, उसी प्रकार उद्धार प्राप्त करने पर हम आत्मा की सामर्थ का अनुभव करेंगे। प्रभु यीशु ने गिनती 21 में दिए गए पीतल के सर्प का उदाहरण दिया। उन्होंने नीकुदेमुस से कहा कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर उठाया जाएगा। और ''जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह नष्ट न होगा, परन्तु अनंत जीवन प्राप्त करेगा।''

यद्यपि नीकुदेमुस प्रभु पर विश्वास करता था, फिर भी प्रभु यीशु के क्रूस की मृत्यु तक उसने इस बात को रहस्य ही रखा था। प्रभु की मृत्यु होने पर नीकुदेमुस प्रभु की मृत देह पर लगाने के लिए सुगंधित वस्तुएँ लाया और अरिमतिया के यूसुफ के साथ मिलकर प्रभु की देह को कब्र

में रखा। यहूदियों और रोमी सरकार ने जिसे अपराधी की तरह क्रूस पर चढ़ाया था उस प्रभु यीशु के लिए खड़े होने की सामर्थ और विश्वास अब नीकुदेमुस में था। हमें भी प्रभु पर अपने विश्वास के बारे में शर्मिंदा नहीं होना चाहिए। प्रभु यीशु के शब्दों को स्मरण रखना: ''जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी, जब आएगा, तो उस से लजाएगा।'' (लूका 9:26)।

टिप्पणी :

नीकुदेमुस (यूनानी भाषा) = लोगों पर विजयी। ऐसा कहा जाता है कि पतरस और यूहन्ना ने नीकुदेमुस को बपतिस्मा दिया। ''नीकुदेमुस रचित सुसमाचार'' नाम की एक पुस्तक भी लिखी गई।

प्रश्न :

1. नीकुदेमुस कौन था?
2. उद्धार के लिए परमेश्वर का मार्ग क्या है?
3. नीकुदेमुस ने कैसे व्यक्त किया कि वह वास्तव में प्रभु यीशु का चेला था?

पाठ–27

सामरी स्त्री

यूहन्ना 4:1-32

याद करें : वह समय आता है, वरन अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे। यूहन्ना 4:23

मुख्य बिंदु : गवाह बनें।

पाठ परिचय :

जब आपको बहुत प्यास लगती है तब ठंडे पानी के समान कुछ और स्वादिष्ट नहीं लगता। परंतु वह पानी कुछ ही समय के लिए आपको तृप्त करता है, क्योंकि कुछ समय के बाद आपको फिर से प्यास लगती है। परंतु प्रभु यीशु ने कहा कि वह ऐसा पानी दे सकते हैं, जिसे पीने वाला फिर से प्यासा न होगा! प्रभु यीशु अनंत जीवन रूपी पानी के बारे में कह रहे हैं। क्योंकि अनंत जीवन रूपी पानी हमारे जीवन की आवश्यकताओं और इच्छाओं को लगातार तृप्त करता है।

पाठ :

पिछले पाठ में हमने सीखा था कि किस प्रकार प्रभु यीशु ने नीकुदेमुस से बातें कीं और उससे कहा कि उसे नया जन्म पाना अवश्य है। इस अध्याय में हम सीखेंगे कि प्रभु ने एक पापिनी, सामरी स्त्री से क्या कहा।

जब प्रभु यीशु इस संसार में थे, तब वे पलिश्तीन देश के अनेक प्रदेशों में परमेश्वर का वचन सिखाने के लिए, पैदल चलकर जाते थे एक दिन वे सामरिया से चलकर जा रहे थे। प्रभु थककर सूखार नामक स्थान पर एक कूएँ पर बैठ गए। प्रभु वहाँ न केवल पानी पीकर अपनी प्यास बुझाना चाहते थे, बल्कि एक पापिनी स्त्री को बचाना भी चाहते थे, क्योंकि प्रभु जानते थे कि वह स्त्री वहाँ आने वाली थी। आज भी, प्रभु

यीशु लोगों के जीवनों को परिवर्तित करना चाहते हैं।

सामरी स्त्री कूएँ पर दोपहर के समय आई जब अक्सर लोग वहाँ नहीं आते थे। प्रभु यीशु ने उससे पानी माँगा। सामरी स्त्री ने उससे कहा, ''तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों माँगता है?'' प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''यदि तू जानती कि वह कौन है जो तुझसे पानी माँगता है, तो तू उससे माँगती और वह तुझे जीवन का जल देता।'' वह जानना चाहती थी कि यह कैसे संभव है, और प्रभु क्या कहना चाह रहे थे। प्रभु यीशु ने उससे कहा, कि वे उसे जीवन का वह जल दे सकते हैं जो उसे अनंत जीवन देगा। तुरंत ही उस स्त्री ने प्रभु से वह जीवन का जल माँगा।

तब प्रभु ने उसे यह समझने में मदद की कि वह एक पापिनी है। तुरंत ही उसने प्रभु को एक भविष्यवक्ता कहा। फिर वह प्रभु से आराधना के सही स्थान के विषय में बातें करने लगी। प्रभु यीशु ने कहा, ''वह समय आता है, वरन अब भी है, जिसमें सच्चे भक्त पिता की आराधना आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिए ऐसे ही आराधकों को ढूँढ़ता है। परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।'' (यूहन्ना 4:23-24)।

अंततः प्रभु यीशु ने उसे बताया कि वही ख्रिस्त और मसीह हैं, और उस स्त्री ने प्रभु पर विश्वास किया। फिर वह अपना घड़ा वहीं छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी कि उसे मसीह मिल गया है। उसकी गवाही सुनकर अनेक सामरी लोग आए और प्रभु यीशु पर विश्वास किया। उस स्त्री ने प्रभु को जानने के तुरंत बाद ही दूसरों को प्रभु के बारे में बताना शुरू किया। बच्चो, क्या आप अपने मित्रों को उद्धारकर्त्ता प्रभु के बारे में बताते हैं?

टिप्पणी :

सूखार : सामरिया के दक्षिणी तरफ यरूशलेम से 65 मील दूर स्थित है।

मसीह/अभिषिक्त : पुराने नियम में दो बार उल्लेखित है (दानि. 9:25-26)

मसीह (इब्रानी भाषा)

ख्रिस्त (यूनानी भाषा में मसीह)

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु सामरी स्त्री से कहाँ पर मिले?
2. प्रभु यीशु ने उससे बातचीत कैसे आरंभ की?
3. उसने प्रभु से क्या पूछा?
4. जब उस स्त्री को पता चला कि यीशु ही मसीह हैं, तब उसने क्या किया?

पाठ-28

बैतहसदा

यूहन्ना 5:1-14

याद करें : देख, तू चंगा हो गया है; फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि कोई भारी विपत्ति तुझ पर आ पड़े। यूहन्ना 5:14

मुख्य बिंदु : परमेश्वर का वचन हमें पाप करने से बचाएगा।

पाठ-परिचय :

हमारे प्रभु यीशु जब इस संसार में थे, तब उन्होंने रोगियों और कष्ट उठाने वालों पर दया करके बहुत से आश्चर्यकर्म किए।

उन्होंने भूखों को भोजन खिलाया ओर रोगियों को चंगा किया। हमें भी दूसरों पर दया करके उनकी सहायता करनी चाहिए।

पाठ :

प्रभु यीशु यहूदियों के पर्व के लिए यरूशलेम गए। यरूशलेम शहर के भीतर जाने के लिए अनेक द्वार थे। नहेम्याह अध्याय 3 में हम इनके नाम पढ़ते हैं। भेड़ फाटक, मछली फाटक इत्यादि। इनमें से भेड़ फाटक उत्तर दिशा की तरफ था। कहा जाता है कि बलिदान के लिए भेड़ों और मेम्नों को मंदिर में लाने के लिए इस द्वार का प्रयोग किया जाता था। भेड़ फाटक के पास ही एक कुण्ड था जो बैतहसदा कहलाता था और उसके पाँच ओसारे थे। इन ओसारों में बहुत से बीमार लोग पड़े रहते थे। वे उस कुण्ड के पानी के हिलने की प्रतीक्षा करते रहते थे, क्योंकि नियुक्त समय पर परमेश्वर के स्वर्गदूत कुण्ड में उतरकर पानी को हिलाया करते थे। पानी हिलते ही जो कोई पहले उतरता, वह चंगा हो जाता था। वहाँ एक मनुष्य था जो अड़तीस वर्ष से रोगी था।

प्रभु यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और यह जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा है, उससे पूछा, ''क्या तू चंगा होना चाहता

है?'' उसने कहा, ''हे प्रभु, मेरे पास कोई मनुष्य नहीं, कि जब पानी हिलाया जाए, तो मुझे कुण्ड में उतारे।'' प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''उठ, अपनी खाट उठा और चला जा।'' वह मनुष्य तुरंत चंगा हो गया और अपनी खाट उठाकर चलने लगा। जब एक पापी प्रभु यीशु के पास विश्वास से आता है, तब तुरंत ही उद्धार पाता है और अपने पाप से शुद्ध हो जाता है। (1 यूहन्ना 1:7)।

यह देखकर यहूदी लोगों ने उस मनुष्य को परेशान किया। परन्तु प्रभु यीशु ने उससे भेंट की और उससे कहा, ''देख, तू चंगा हो गया है, फिर से पाप मत करना, ऐसा न हो कि इससे भी भारी कोई विपत्ति तुझ पर आ पड़े।'' प्रेरित यूहन्ना कहते हैं, ''हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम पाप न करो।'' (1 यूहन्ना 2:1)। परमेश्वर का वचन हमें पाप से बचाएगा यदि हम उसे पढ़ें और मानें। पाप से बचने के लिए हमें प्रतिदिन प्रार्थना करनी चाहिए।

टिप्पणी :

बैतहसदा = दया का घर

प्रश्न :

1. यरूशलेम के कुछ द्वारों के नाम बताएँ।
2. बैतहसदा किस द्वार के पास था और उसकी क्या विशेषता थी?
3. प्रभु ने जिस रोगी को चंगा किया वह कितने वर्षों से वहाँ पड़ा था?
4. दूसरी बार मिलने पर प्रभु ने उसे क्या आज्ञा दी?

पाठ–29

जन्म का अंधा

यूहन्ना, अध्याय 9

याद करें : प्रभु यीशु ने कहा, ''मैं इस जगत में न्याय के लिए आया हूँ, ताकि जो नहीं देखते, वे देखें।'' यूहन्ना 9:39

मुख्य बिंदु : परमेश्वर की संतानों को परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए।

पाठ–परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा कि प्रभु यीशु ने एक मनुष्य को चंगा किया जो 38 वर्षों से रोगी था। आज हम सीखेंगे कि प्रभु ने एक ऐसे व्यक्ति को दृष्टि दी जो जन्म से ही अंधा था। जिसे कुछ नहीं दिखता उसको दिन प्रतिदिन कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। और न ही वह व्यक्ति सृष्टि के सौंदर्य को देख पाता है। आत्मिक रूप से अंधे व्यक्ति की स्थिति इससे भी बदतर होती है। सभी मनुष्य जन्म से पापी होते हैं, अतः वे आत्मिक रूप से तब तक अंधे रहते हैं, जब तक कि परमेश्वर उनकी आँखें न खोलें। मात्र प्रभु यीशु ही आत्मिक रूप से अंधे व्यक्ति को दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

पाठ :

शिष्यों ने उस अंधे व्यक्ति को देखकर सोचा कि उसके अंधेपन का कारण उसका पाप अथवा उसके माता–पिता का पाप होगा। अक्सर माना जाता है कि रोग पाप का परिणाम होता है। अय्यूब जब कष्ट उठा रहा था, तब उसके मित्रों ने भी यही सोचा था। यह सच है कि पाप के कारण ही रोग और मृत्यु ने इस संसार में प्रवेश किया। परन्तु हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि हर कष्ट का कारण पाप होता है। प्रभु यीशु ने कहा, कि यह व्यक्ति अंधा जन्मा ताकि परमेश्वर के कार्य उसमें प्रगट हों।

प्रभु यीशु ने भूमि पर थूका और वह मिट्टी उस अंधे की आँखों पर लगाई, और उससे कहा, ''जा, शीलोह के कुण्ड में धो ले।'' प्रभु की आज्ञा मानते हुए वह अंधा चला गया और देखता हुआ लौट आया। उसने आज्ञा मानी क्योंकि उसने प्रभु के वचनों पर विश्वास किया।

जब लोगों ने देखा कि अंधा देखने लगा है, तब वे आश्चर्य से भर गए। इस बात से उनके बीच में बहुत विवाद भी हुए। यद्यपि यह अंधा अशिक्षित था, फिर भी उसने फरीसियों को बुद्धिमानी के साथ उत्तर दिया। जब फरीसी उससे बहस करने आए तब उसने कहा, ''मैं एक बात जानता हूँ, कि मैं अंधा था, और अब देखता हूँ।'' हो सकता है कि आप अपने उद्धार के बारे में दूसरों से बहस नहीं कर सकते। परन्तु आप कह सकते हैं कि ''मैं पापी था, परंतु अब जानता हूँ कि मेरे पाप क्षमा हो चुके हैं।'' हमारे अपने अनुभव से कोई इंकार नहीं कर सकता।

पहले उस व्यक्ति ने सोचा कि प्रभु यीशु एक भविष्यवक्ता हैं (पद 17) परंतु प्रभु ने उस पर प्रकट किया कि वह परमेश्वर का पुत्र है। तुरंत ही उसने विश्वास किया और प्रभु की आराधना की। (पद 38)। पहले उसे दृष्टि प्राप्त हुई, फिर उसकी आत्मिक आँखें खुल गईं।

टिप्पणी :

शीलोह = भेजा हुआ

फरीसी = अलग किया हुआ

प्रश्न :

1. अंधे मनुष्य को देखकर चेलों ने प्रभु यीशु से क्या पूछा? प्रभु ने उन्हें क्या उत्तर दिया?
2. प्रभु यीशु ने उस अंधे को कैसे चंगा किया?
3. जन्म के अंधे को उत्तर न दे पाने पर यहूदियों ने क्या किया?
4. उसने क्या किया जब उसे पता चला कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है?

पाठ-30

विधवा की दमड़ियाँ

मरकुस 12:41-44 (लूका 21:1-4 भी पढ़ें)

याद करें : परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है। 2 कुरि. 9:7
मुख्य बिंदु : हर्ष से देने वाले बनो।

पाठ-परिचय :

अपने क्रूस पर चढ़ाए जाने से चार-पाँच दिन पहले प्रभु यीशु यरूशलेम के मंदिर में बैठे थे। यह हेरोदेस का मंदिर कहलाता था। वहाँ एक स्थान था जो स्त्रियों का आंगन कहलाता था। स्त्रियाँ केवल उस स्थान तक ही जा सकती थीं। इस आंगन की दीवारों के सहारे पीतल की दान-पेटियाँ रखी हुई थीं। आराधना करने आने वाले लोग इन पेटियों में अपना दान डाला करते थे।

पाठ :

प्रभु यीशु मंदिर के भंडार के सामने बैठकर लोगों को दान डालते देख रहे थे। चेले भी आस पास ही थे। बहुत से धनवानों ने बहुत कुछ डाला। इतने में एक कंगाल विधवा ने आकर दो दमड़ियाँ डालीं। यह देखकर प्रभु ने अपने चेलों को अपने पास बुलाकर उनसे कहा कि इस कंगाल विधवा ने भंडार में सबसे अधिक डाला है।

महत्वपूर्ण बात कहते समय प्रभु अक्सर कहते थे, ''मैं तुमसे सच कहता हूँ।'' प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा, ''मैं तुमसे सच कहता हूँ कि मंदिर के भंडार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सबसे बढ़कर डाला है। क्योंकि सबने अपने धन की बढ़ती में से डाला है, परन्तु इसने अपनी घटी में से, जो कुछ उसका था, अर्थात् अपनी सारी जीविका डाल दी है।''

उस कंगाल विधवा ने अपना सब कुछ प्रभु के लिए दे दिया। हमें

भी अपनी संपत्ति ही नहीं बल्कि अपना जीवन भी प्रभु को समर्पित करना चाहिए। वह आपके दिल के द्वार पर खड़े होकर कहते हैं, ''देख मैं द्वार पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ। यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूँगा, और वह मेरे साथ।'' (प्रका. 3:20)। इन शब्दों का अर्थ है करीबी संगति और सहभागिता। क्या आप प्रभु यीशु की संगति का आनंद उठाते हैं? क्या प्रभु आपके मित्र और साथी हैं?

टिप्पणी :

पद 42 में कही गई ''दमड़ी''

अंग्रेजी में - माइट mite

यूनानी में - लेप्टन lepton

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु जिस मंदिर में थे वह क्या कहलाता था?
2. विधवा के दान के विषय में प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से क्या कहा?
3. उसके दान को प्रभु ने इतना महत्व क्यों दिया?

पाठ-31

बीज बोने वाला

मत्ती 13:3-8; 18:2, 3 (मरकुस 4:1-20; लूका 8:4-15 भी पढ़ें)

याद करें : जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे जयजयकार करते हुए लवने पाएँगे। भजन 126:5

मुख्य बिंदु : वचन पर चलने वाले बनो।

पाठ परिचय :

छोटी कहानियों और दृष्टांतों के द्वारा प्रभु यीशु ने, परमेश्वर के राज्य के सत्य के विषय में, लोगों को शिक्षा दी। बीज बोने वाले का दृष्टांत उनमें से एक है।

पाठ :

इस दृष्टांत में प्रभु ने कहा कि बीज चार प्रकार की भूमि पर गिरा।

1. मार्ग के किनारे
2. पथरीली भूमि पर
3. झाड़ियों में
4. अच्छी भूमि पर

1. जो बीज **मार्ग के किनारे** गिरा, उन बीजों को पक्षियों ने चुग लिया।

2. जो बीज **पथरीली भूमि** पर गिरे, वहाँ उन्हें बहुत मिट्टी नहीं मिली। इस कारण वे जल्द उग जाए। परन्तु सूरज निकलने पर वे जल गए, और जड़ न पकड़ने से सूख गए।

3. कुछ बीज **झाड़ियों** में गिरे। झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा दिया।

4. कुछ बीज **अच्छी भूमि पर** गिरे और फल लाए। कोई सौ गुना, कोई साठ गुना और कोई तीस गुना।

प्रभु यीशु ने स्वयं इस दृष्टांत का अर्थ चेलों को बताया। बीज परमेश्वर का वचन या सुसमाचार है। (याकूब 1:21 में वचन की तुलना बीज से की गई है।)

बीज बोने वाला वचन का प्रचारक है। जिस प्रकार बीज चार विभिन्न प्रकार की भूमि पर गिरता है, उसी प्रकार वचन के सुनने वाले चार विभिन्न प्रकार से वचन को स्वीकार करते हैं।

1. कुछ लोग वचन को कानों से सुनते तो हैं परन्तु वह उनके हृदय तक नहीं पहुँचता। शैतान उसे ले जाता है और वे लोग उस संदेश को भूल जाते हैं।

2. कुछ लोग वचन को सुनते ही आनंद के साथ उसे स्वीकार कर लेते हैं, परन्तु वह उनके हृदयों में जड़ नहीं पकड़ता। लूका कहते हैं कि, वे कुछ समय तक विश्वास करते हैं, परन्तु परीक्षाएँ आती हैं तो भटक जाते हैं।

3. तीसरे समूह में वे लोग आते हैं, जो परमेश्वर के वचन को सुनते हैं, परन्तु इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा उस वचन को दबा देता है।

प्रभु कहते हैं, ''इसलिए तुम अपने प्राण के लिए चिन्ता करके यह न कहना कि हम क्या खाएँगे और क्या पीएँगे; और न अपने शरीर के लिए, कि क्या पहिनेंगे।'' (मत्ती 6:25)।

4. चौथे समूह में वे लोग हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते हैं और उस पर विश्वास करते हैं। वचन उनमें बना रहता है, और वे ढेर सारा फल लाते हैं। गलतियों 5:22-23 में हम आत्मा के फल देखते हैं: प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई विश्वास, नम्रता और संयम। (रोमियों 6:22) भी देखें।

बच्चो, जब आप संडे स्कूल में पढ़ते हैं, तब आपके हृदयों में परमेश्वर के वचन का बीज बोया जा रहा है। प्रभु आपकी सहायता करें कि आप सौ गुना फल लाएँ।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु, परमेश्वर के राज्य के सत्यों को लोगों को कैसे समझाते थे?
2. किस तरह के स्थानों पर बीज गिरे?
3. बीज बोने वाला कौन है?
4. झाड़ियों में गिरे बीज का क्या होता है?
5. अच्छी भूमि का क्या अर्थ है?

पाठ–32

दाख की बारी

मत्ती 21:33–42 (मरकुस 12:1–9 लूका 20:9–18 भी देखें)

याद करें : राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया है। भजन 118:22

मुख्य बिंदु : परमेश्वर चाहते हैं कि हम उनके एकलौते पुत्र को स्वीकार करें और आदर करें।

पाठ परिचय :

यह पाठ उस दृष्टांत के बारे में है जो प्रभु ने इस्राएल राष्ट्र के विषय में कहा। प्रभु यीशु जब मंदिर में लोगों को शिक्षा दे रहे थे, तब यहूदी महायाजकों और प्राचीनों ने प्रभु से पूछा, ''तू किस अधिकार से यह करता है?'' प्रभु जानते थे कि ये ही लोग जो प्रभु के अधिकार पर प्रश्न कर रहे थे, उन्हें क्रूस पर भी चढ़ाने वाले थे। अत: उन्होंने यह दृष्टांत कहा।

पाठ :

प्रभु ने अपने दृष्टांत को आरंभ करते हुए कहा, ''एक गृहस्वामी ने एक दाख की बारी लगाई।'' बाइबल में इस्राएल राष्ट्र की तुलना एक दाख की बारी से की गई है, जिसे परमेश्वर ने लगाया। (यशा. 5:1–7; भजन 80:8–16)। पलिश्तीन देश जो परमेश्वर ने अपनी प्रजा इस्राएल को दिया, वहाँ दाख के उपज की बहुतायत थी। वहाँ रहने वाले यहूदियों को दाख की बारी का दृष्टांत समझना आसान था। दाख की बारी लगाने की कठिनाइयों के विषय में भी वे जानते थे।

इस दाख की बारी का मालिक परमेश्वर हैं। अच्छे मालिक ने वह सब कुछ किया जो बारी के लिए आवश्यक था उसने बारी लगाई, उसके चारों ओर बाड़ा बाँधा, उसमें रस का कुंड खोदा, और गुम्मट

बनाया। फिर किसानों को उसका ठेका देकर परदेश चला गया।

जब फल का समय निकट आया, तो उसने अपने दासों को उसका फल लेने के लिए किसानों के पास भेजा। परन्तु किसानों ने उसके दासों को पकड़ के किसी को पीटा और किसी को मार डाला। यह पुराने समय के भविष्यवक्ताओं का अनुभव रहा, जो परमेश्वर का संदेश लेकर इस्राएल में आए। (मत्ती 23:29-37; प्रेरितों 7:52)।

गृहस्वामी ने बार-बार अपने दासों को किसानों के पास भेजा, ताकि वह उन्हें समय और अवसर दे कि वे सही सोचें और सही व्यवहार करें। परन्तु उन्होंने हरेक के साथ वैसा ही किया। अंत में बारी के स्वामी ने अपने पुत्र को उन के पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। हम इब्रानियों 1:1 में पढ़ते हैं, ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें कर, इन अंतिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं।'' हमारे प्रभु यीशु मसीह, परमेश्वर का एकलौता पुत्र हैं। उसी को परमेश्वर ने इस संसार में भेजा।

उन दुष्ट किसानों ने कहा, ''यह तो वारिस है। आओ, इसे मार डालें और इसकी मीरास ले लें।'' अत: उन्होंने उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकाल दिया और मार डाला। जब हमारे प्रभु यीशु इस संसार में आए तब उनके अपने लोगों ने न केवल उनका तिरस्कार किया, बल्कि उन्हें क्रूस पर चढ़ा दिया।

परमेश्वर के पुत्र ने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए क्रूस पर अपना प्राण दिया। जो कोई भी उनका तिरस्कार करेगा, वह दण्ड से न बचेगा। यूहन्ना 3:36 में हम पढ़ते हैं, ''जो पुत्र की नहीं मानता, वह जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।''

टिप्पणी : यहूदियों ने प्रभु की कीमत तीस चांदी के सिक्के की लगाई थी। कहा जाता है कि रोमी सम्राट वेस्पासियन ने अपने यहूदी बंधकों की कीमत लगाई थी, 30 यहूदी बंधक 1 चाँदी के सिक्के में।

प्रश्न :

1. गृहस्वामी ने दाख की बारी के लिए क्या-क्या किया?
2. इस्राएल राष्ट्र रूपी दाख की बारी को किसने लगाया?
3. किसानों का क्या उत्तरदायित्व था?
4. फल पाने की आस में गए दासों का क्या अनुभव था?
5. इस्राएल के किसानों को क्या दण्ड मिला?

पाठ–33

पहाड़ी उपदेश

मत्ती, अध्याय 5-7 (लूका 6:20-49 भी देखें)

याद करें : इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है। मत्ती 5:48

मुख्य बिंदु : परमेश्वर का वचन सुनें।

पाठ परिचय :

हमने सीखा था कि प्रभु यीशु ने अपने सार्वजनिक सेवा कार्य के आरंभ में ही बारह शिष्यों को चुन लिया था। वे उन्हें अपने साथ गलील प्रदेश के अनेक भागों में ले गए, जहाँ प्रभु ने परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया और रोगियों को चंगा किया।

एक दिन प्रभु अपने चेलों को लेकर एक पहाड़ पर गए और वहाँ बैठकर लोगों को उपदेश देने लगे। पहाड़ पर से दिए गए इन उपदेशों को, हम ''पहाड़ी उपदेश'' कहते हैं।

पाठ :

पहाड़ी उपदेश बाइबल की महानतम हिस्सों में से एक है। आज के पाठ में हम इस उपदेश के कुछ ही बातों को सीख सकेंगे। इस पहाड़ी उपदेश को हम चार मुख्य भागों में बाँट सकते हैं।

1. धन्य हैं जो परमेश्वर के राज्य में हैं (5:1-16)

हम उन्हें धन्य और प्रसन्न लोग मानते हैं जिनके पास धन, शिक्षा, सौंदर्य या बुद्धि होती है। परन्तु प्रभु की दृष्टि में धन्य वे लोग हैं जो ''मन के दीन हैं'', ''शोक करते हैं'', ''नम्र हैं'', ''जिनके मन शुद्ध हैं'' मेल करवाने वाले हैं और जो धर्म के कारण सताए जाते हैं''।

2. प्रभु यीशु की शिक्षाओं और व्यवस्था में संबंध (5:17-48) व्यवस्था सर्वोत्तम है और बदली नहीं जा सकती। परन्तु व्यवस्था के शब्दों

को नहीं बल्कि अर्थ को हमें पकड़े रहना है। यहाँ हम पाँच बातें देखते हैं :

* हत्या न करना ही काफी नहीं है, परन्तु क्रोध पर काबू पाना आवश्यक है जो हत्या का कारण होता है। (पद 21-22)।

* व्यभिचार न करना ही काफी नहीं है, परन्तु अशुद्ध विचारों से बचना आवश्यक है जो व्यभिचार की प्रेरणा देता है। (पद 27-32)

* हर एक बात में ईमानदार होना आवश्यक है, ताकि शपथ/कसम खाना न पड़े। (पद 33-37)।

* बदले की भावना नहीं होनी चाहिए (पद 38-42)

* सबसे प्रेम करें, सबके साथ मेल रखें। (पद 43-48)

3. व्यावहारिक जीवन में शिष्यों का रवैया (6:1-7:12)

यहाँ हम तीन बातें सीखते हैं :

A. दिखावा न करें (6:1-18)

B. परमेश्वर पर विश्वास करें और चिन्ता न करें (6:19-34)

C. अपने भाई से अच्छा व्यवहार करें (7:1-12)

4. परमेश्वर के वचन के प्रति शिष्यों का रवैया (7:13-27)

A. सकरे मार्ग से प्रवेश करना (पद 13-14)

B. फलों से पहचाना जाना (पद 15-20)

C. बुद्धिमान मनुष्य (पद 21-27)

टिप्पणी :

प्रार्थना (मत्ती 6:9-13) इसे हम शिष्यों की प्रार्थना कह सकते हैं। यद्यपि पुराने नियम में अनेक प्रार्थनाएँ हम देख सकते हैं, परन्तु उनमें से किसी में भी हम परमेश्वर के लिए ''पिता'' संबोधन नहीं पाते। तथापि, नए नियम में प्रभु यीशु यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर हमारे स्वर्गीय पिता है। वे हमें परमेश्वर को पिता कहने का अधिकार भी देते हैं।

(देखें-यूहन्ना 1:12)। जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उनको, जो उसके नाम पर विश्वास करते हैं।

प्रभु यीशु ने नहीं कहा था कि ''हम प्रार्थना करें''। उन्होंने कहा, ''इस प्रकार प्रार्थना करें। हमें उन शब्दों को दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न :

1. ''पहाड़ी उपदेश'' का क्या अर्थ है?
2. इस उपदेश में कौन सी महत्वपूर्ण बातें प्रभु ने कहीं?
3. प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को कौन सी प्रार्थना सिखाई?

पाठ–34

प्रभु भोज

लूका 22:6–20; मरकुस 14:22–25

(मत्ती 26:17–19; 1 कुरि. 11:23–30 भी देखें)

याद करें : इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो। 1 कुरि. 10:31

मुख्य बिंदु : फसह का मेम्ना, प्रभु यीशु एक बार सदा के लिए बलिदान चढ़ाया गया।

पाठ परिचय :

फसह के बारे में सबसे पहले हम निर्गमन 12 में पढ़ते हैं। मिस्र के पहिलौठे जब मारे गए, तब परमेश्वर की आज्ञानुसार, इस्राएल के हर एक परिवार ने एक मेम्ना मारकर उसका लोहू चिन्ह के रूप में अपने द्वार के चौखटों पर लगाया था। नाश करने वाला दूत उस लोहू को देखकर उन घरों को लांघ गया। इसी से शब्द लांघ जाना या Passover (फसह) आया है उसी रात इस्राएलियों ने मिस्र देश छोड़ दिया था। परमेश्वर ने यह भी आज्ञा दी थी कि वह मेम्ना आग के ऊपर भूनकर कड़वे साग पात और अखमीरी रोटी के साथ खाया जाए। (निर्गमन 12:8)

अबीब (अप्रैल) महीने के 14वें दिन को इस्राएली लोग फसह का पर्व मनाते थे। (लैव्य. 23:5; गिनती 9:1–14)। यह फसल का पर्व और अखमीरी रोटी का पर्व भी कहलाता है। फसह के पर्व के अगले दिन ही अखमीरी रोटी का पर्व आरंभ होता है जो सात दिनों तक चलता है। जब अखमीरी रोटी और फसह का पर्व आया तब प्रभु–यीशु और उनके शिष्य यरूशलेम में थे। किसी ने उन्हें एक सजी–सजाई बड़ी अटारी दी, जहाँ शिष्यों ने फसह का भोजन तैयार किया। प्रभु अपने शिष्यों के साथ भोजन करने बैठे। तब प्रभु ने कहा, ''मुझे बड़ी लालसा थी कि दुख भोगने से पहले यह फसह तुम्हारे साथ खाऊँ।'' आप जानते हैं कि प्रभु

यीशु परमेश्वर का मेम्ना हैं जो जगत के पाप उठा ले जाता है। मूसा के दिनों से जितने मेम्ने बलि किए गए, वे सब प्रभु यीशु का प्रतीक थे। फसह की उस रात को सिपाही प्रभु यीशु को पकड़कर ले गए और अगले दिन उन्हें क्रूस पर चढ़ाया गया। प्रभु यीशु, फसह का मेम्ना एक बार हमेशा के लिए बलिदान चढ़ाया गया। अब किसी मेम्ने के बलि की आवश्यकता नहीं है।

प्रभु भोज :

उसी रात स्वयं प्रभु ने प्रभु भोज की स्थापना की। और प्रभु की मृत्यु और पुनरुत्थान के पश्चात से ही प्रभु के लोग इसे मनाते आ रहे हैं। फसह खाने के पश्चात प्रभु ने रोटी ली और धन्यवाद करके तोड़ी और शिष्यों को यह कहते हुए दी, ''यह मेरी देह है जो तुम्हारे लिए दी जाती है। मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। इसी रीति से प्रभु ने कटोरा भी यह कहते हुए दिया, ''यह कटोरा मेरे उस लहू में जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है, नई वाचा है।'' हम पढ़ते हैं कि आरंभिक कलीसिया सप्ताह के पहले दिन रोटी तोड़ने के लिए एकत्रित होती थी। (प्रेरितों 20:7)।

प्रेरित पौलुस 1 कुरिन्थियों 11 में लिखते हैं कि उन्हें प्रभु भोज के विषय में परमेश्वर से विशेष प्रकटीकरण प्राप्त हुआ है। उनके शब्दों से हम प्रभु भोज के विषय में चार महत्वपूर्ण सत्यों को सीखते हैं।

1. यह प्रभु की आज्ञा है (पद 23)

2. यह यादगार है (पद 24-25)

3. यह हमें प्रभु की मृत्यु और उनके दोबारा आगमन का स्मरण दिलाता है। (पद 26)

4. यह प्रभु के लोगों की एकता और सहभागिता को दिखाता है (1 कुरि. 10:16-18)।

प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करके उद्धार पाए हुए लोग प्रभु भोज में भाग लेते हैं। पौलुस कहते हैं कि दो बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

1. अनुचित रीति से भाग न लें (पद 27)।

2. अपने आप को जाँच कर इसमें भाग लें। (पद 28)।

अतः परमेश्वर की संतानों को चाहिए कि वे स्वयं को जाँचें और सप्ताह के पहले दिन परमेश्वर के भय और भक्ति के साथ प्रभु भोज में भाग लें।

प्रश्न :

1. ''फसह'' शब्द का क्या अर्थ है?
2. सबसे पहले कब और कहाँ फसह मनाया गया?
3. प्रभु ने अपने शिष्यों के साथ अंतिम फसह कहाँ मनाया?
4. अब फसह के मेम्ने की बलि की आवयश्कता क्यों नहीं है?
5. किन्हें प्रभु भोज मनाना चाहिए?

पाठ–35

प्रभु का अधिकार

मत्ती 8 (मरकुस 4:35–5–20; लूका 8 भी देखें)

याद करें : यीशु ने उनके पास आकर कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।'' मत्ती 28:18

मुख्य बिंदु : प्रभु यीशु सब पर अधिकार रखते हैं।

पाठ परिचय :

हमने सीखा है कि प्रभु यीशु परमेश्वर का एकलौता पुत्र हैं। वह इस संसार में मनुष्य के रूप में आए ताकि पापियों को बचाएं। यद्यपि वह इस संसार में मनुष्य होकर रहे, फिर भी परमेश्वर होने के कारण वह सब पर अधिकार रखते थे।

पाठ :

आज के पाठ में हम सीखेंगे कि किस प्रकार प्रभु ने रोग पर, सृष्टि पर और शैतान पर अपनी सामर्थ का प्रयोग किया।

1. रोग पर अधिकार :

(पद 1–17) यहाँ हम देखते हैं कि प्रभु तीन अलग–अलग रोगियों को चंगा करते हैं। उन में से एक कोढ़ी था, एक लकवे का मारा था और एक को बुखार था।

पतरस की सास और उस कोढ़ी को प्रभु ने छू कर चंगा किया, परन्तु सूबेदार के सेवक को अपने शब्दों से स्वस्थ किया। प्रभु का स्पर्श और शब्द चंगा कर सकता है। एक बार प्रभु ने अपने शब्दों से लाजर को जीवित कर दिया था, जिसे मरे चार दिन हो चुके थे।

लकवा ग्रस्त रोगी सूबेदार का सेवक था। सूबेदार एक अन्यजाति

व्यक्ति था, परन्तु वह जीवते परमेश्वर का भय मानता था। एक सूबेदार 100 सिपाहियों पर अधिकार रखता था। वह अधिकार समझता था और उसने प्रभु यीशु के अधिकार पर विश्वास किया। सूबेदार की विनती पर प्रभु ने उसके सेवक को चंगा कर दिया और साथ ही उसके विश्वास की प्रशंसा भी की।

2. सृष्टि पर अधिकार : पद 23–27 यहाँ हम देखते हैं कि हवा और समुद्र प्रभु की आज्ञा का पालन करते हैं।

प्रभु अपने शिष्यों के साथ गलील की झील के पार जा रहे थे। तब झील में एक बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढकने लगी। प्रभु यीशु नाव के निचले भाग में सो रहे थे। चेले बहुत डर गए और उन्होंने प्रभु को जगाया। प्रभु ने उठकर आँधी और पानी को डाँटा, और सब शान्त हो गया। तब प्रभु ने शिष्यों को उनके विश्वास की कमी के लिए डाँटा। समस्त सृष्टि अपने सृष्टिकर्त्ता की इच्छा और अधिकार में रहती है। परन्तु मनुष्य, जिसे स्वतंत्र इच्छा शक्ति दी गई है, वह अपने सृष्टिकर्त्ता की आज्ञा नहीं मानता।

शैतान पर अधिकार : पद 28–34 वे झील के उस पार गदरेनियों के देश में पहुँचे। वहाँ उन्हें एक मनुष्य मिला जो कब्रों में रहता था। वह बड़ी संख्या में दुष्टात्माओं से ग्रस्त था। वह इतना प्रचण्ड था कि उस मार्ग से कोई नहीं जा सकता था। परन्तु प्रभु यीशु को देखकर वे दुष्टात्माएं डर गईं क्योंकि वे जानती थीं कि प्रभु यीशु कौन हैं। और प्रभु ही अंत में उनका न्याय करने वाले हैं (प्रका. 20:10)। वहाँ सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था। दुष्टात्माओं ने प्रभु से विनती की कि उन्हें उन सूअरों में भेज दें। प्रभु ने कहा ''जाओ''! और वे सब दुष्टात्माएं उस मनुष्य में से निकलकर उन सूअरों में समा गईं।

उस नगर के लोगों ने निकलकर देखा कि वह मनुष्य जिसमें पहले दुष्टाताएं थीं वह प्रभु यीशु के पाँवों के पास कपड़े पहने और सचेत बैठा था। तब गिरासेनियों के आसपास के सब लोगों ने प्रभु यीशु से विनती कि वहाँ से चले जाएँ। क्योंकि उन पर बड़ा भय छा गया था।

प्रश्न :

1. सूबेदार के विश्वास के बारे में प्रभु यीशु ने क्या कहा?
2. प्रभु यीशु कहाँ थे और क्या कर रहे थे जब तूफान आया?
3. दुष्टात्माएं प्रभु यीशु को देखकर क्यों डर गईं?

पाठ–36

गतसमनी

मत्ती 26:36–47

याद करें : हमने प्रेम इसी से जाना कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए, और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए। यूहन्ना 3:16

मुख्य बिंदु : जागते रहो और प्रार्थना करो।

पाठ परिचय :

दो सप्ताह पहले हमने सीखा था कि प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों के साथ फसह का पर्व मनाया। उसके बाद वे जैतून के पहाड़ पर गए। फिर वे गतसमनी नामक एक बागीचे में गए, जो जैतून पहाड़ की ढलान पर, किद्रोन नाले के पास था, और जो उनके प्रार्थना करने और आराम करने का स्थान था (यूहन्ना 18:2)।

वहाँ पहुँचने पर प्रभु ने उनसे कहा, ''यहीं बैठे रहना, जब तक मैं वहाँ जाकर प्रार्थना करूँ।'' (पद 36)। फिर प्रभु पतरस और जब्दी के दोनों पुत्रों को अपने साथ लेकर गए। और उदास और व्याकुल होने लगे क्योंकि प्रभु जानते थे कि उनका समय आ गया है। उन्होंने चेलों से कहा, ''मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरा प्राण निकला जा रहा है। तुम यहीं ठहरो और मेरे साथ जागते रहो।'' फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुँह के बल गिरे और यह प्रार्थना की, ''हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ; वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।''

फिर उसने चेलों के पास आकर उन्हें सोते हुए पाया और पतरस से कहा, ''क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो; आत्मा तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है।'' दूसरी और तीसरी बार भी प्रार्थना के बाद लौटने पर प्रभु ने उन्हें सोते हुए पाया। तब प्रभु ने उनसे कहा, ''अब सोते रहो!''

इसका अर्थ था कि समय समाप्त हो चुका।

तुरंत ही यहूदा के साथ आए हुए लोगों ने प्रभु यीशु को पकड़ लिया। तब सारे चेले भाग गए। ये वही चेले थे जो प्रभु के साथ तीन वर्ष रहे और उन आश्चर्यकर्मों को देखा जो प्रभु ने किए थे। अब वे अपनी जान बचाकर भाग गए थे।

टिप्पणी :

गतसमनी = तेल की चक्की

प्रश्न :

1. गतसमनी बागीचा कहाँ पर स्थित था?
2. किन तीन चेलों को प्रभु अलग ले गए?
3. उन्हें सोते हुए पाकर प्रभु ने पतरस से क्या कहा?
4. प्रभु के पकड़े जाने पर चेलों ने क्या किया?

पाठ-37

डाकू

लूका 23:32-43

याद करें : जो कुछ पिता मुझे देता है, वह सब मेरे पास आएगा, और जो मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूँगा। यूहन्ना 6:37

मुख्य बिंदु : सबसे बुरे पापी को भी प्रभु क्षमा करते हैं जब वह पश्चाताप करता है।

पाठ परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा था कि महायाजकों और पुरानियों के द्वारा भेजे गए लोगों ने प्रभु यीशु को पकड़ लिया। वे लोग प्रभु को पिलातुस हाकिम के पास ले गए। पिलातुस हाकिम ने प्रभु में कोई दोष नहीं पाया, फिर भी उसे क्रूस पर चढ़ाने की आज्ञा दे दी। उन्होंने प्रभु को गुलगुता नामक स्थान पर क्रूस पर चढ़ाया। प्रभु के साथ ही दो डाकू भी क्रूस पर चढ़ाए गए। एक को दाहिनी तरफ और दूसरे को बाईं तरफ क्रूसों पर चढ़ाया। क्रूस की मृत्यु बहुत भयंकर होती है। रोमी लोग जघन्य अपराधियों को क्रूस पर चढ़ाते थे। परन्तु रोमी नागरिकों को नहीं।

प्रभु यीशु के जन्म के सैकड़ों वर्ष पूर्व ही भविष्यवक्ताओं ने उनकी मृत्यु के बारे में कहा था। (भजन 22:16; यशायाह 53:12; मरकुस 15:28 देखें)।

प्रभु के साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए दो डाकुओं में से एक ने प्रभु का मज़ाक उड़ाया और मर कर नरक चला गया। परन्तु दूसरे डाकू ने अपने पापों से पश्चाताप किया और प्रार्थना की, ''हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।'' प्रभु ने उसे उत्तर दिया, ''मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।''

पापियों के लिए उद्धार का मार्ग है, प्रभु यीशु पर विश्वास करना

(इफि 2:9) अपने कार्यों के द्वारा नहीं। इस पाठ से हम सीखते हैं कि कोई भी पापी प्रभु यीशु पर विश्वास करने के द्वारा स्वर्ग जा सकता है। लोग अक्सर सोचते हैं कि अच्छे कार्य करने के द्वारा, धार्मिक अनुष्ठानों के द्वारा या चर्च में सदस्यता पाने के द्वारा हम स्वर्ग जा सकते हैं। क्रूस पर मरते हुए डाकू ने मात्र प्रभु पर अपने विश्वास के कारण स्वर्ग लोग प्राप्त किया। उसके शब्दों में हम तीन महत्वपूर्ण चिह्न देखते हैं जो उद्धार के लिए आवश्यक हैं।

1. **पश्चाताप :** उसने दूसरे डाकू से कहा कि हम अपने कार्यों का दण्ड पा रहे हैं। यदि कोई व्यक्ति मान लेता है कि वह पापी है और दण्ड का अधिकारी है, तो यह निश्चित रूप से पश्चाताप का चिन्ह है।

2. **अंगीकार :** उसने प्रभु से कहा, ''हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए तो मेरी सुधि लेना।'' रोमियों 10:9 कहता है, ''यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।''

3. **समर्पण :** उसने प्रभु से कहा, ''मेरी सुधि लेना''। इसका अर्थ यह है कि उसे प्रभु पर विश्वास था। प्रभु ने भी उससे वायदा किया, ''मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।''

टिप्पणी :

गुलगुता = खोपड़ी का स्थान

कलवरी = खोपड़ी (लतीनी भाषा में)

स्वर्गलोक = बगीचा

यहूदी लोग अदन की वाटिका को स्वर्गलोक कहते हैं, और उस स्थान को भी जहाँ धर्मी लोग अपनी मृत्यु पश्चात् जाते हैं। नए नियम में इस शब्द का प्रयोग 3 बार हुआ है। (2 कुरि. 12:3; प्रका. 2:7 और लूका 23:43)।

प्रश्न :

1. प्रभु यीशु को किस स्थान पर क्रूस पर चढ़ाया गया?
2. कौन सी भविष्यवाणी पूरी हुई जब प्रभु के साथ डाकू भी क्रूस पर चढ़ाए गए?
3. पश्चातापी डाकू ने प्रभु से क्या विनती की?
4. प्रभु यीशु ने डाकू से क्या वायदा किया?

पाठ-38

पिन्तेकुस्त

(पवित्र आत्मा का आना)

प्रेरितों के कार्य, अध्याय 2

याद करें : हम सब ने क्या यहूदी हो क्या यूनानी, क्या दास हो क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया। 1 कुरि. 12:13

मुख्य बिंदु : कलीसिया, मसीह की देह है।

पाठ परिचय :

अपने जी उठने के पश्चात् लगभग 40 दिनों तक प्रभु यीशु अनेक बार अपने शिष्यों के सामने प्रकट हुए। फिर प्रभु उनके देखते हुए स्वर्ग पर उठा लिए गए। अपनी मृत्यु से पहले प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा था कि वह पवित्र आत्मा को भेजेंगे जो उनका सहायक होगा। (यूहन्ना 14:26; 16:13)। अपने स्वर्गारोहण से पहले उन्होंने फिर से यह बात कही। प्रभु ने उनसे कहा कि यरूशलेम में रहें और इस प्रतिज्ञा के पूरे होने की प्रतीक्षा करें।

पाठ :

लगभग 120, प्रभु के चेले प्रतिदिन प्रार्थना के लिए एकत्र होते थे। (प्रेरितों 1:15)। पिन्तेकुस्त के दिन भी वे एक घर में इकट्ठे थे। फसह के बाद सब्त से पचासवाँ दिन पिन्तेकुस्त कहलाता है। (लैव्य. 23:15-16) लैव्यव्यवस्था 23:16 के अनुसार यह पिन्तेकुस्त का दिन रविवार था। उस दिन जब वे लोग प्रतीक्षा में थे, तब अचानक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और सारा घर गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और अन्य अन्य भाषा बोलने

लगे। वे उनकी भाषाओं में बोल रहे थे, जो अलग अलग देशों से आकर वहाँ एकत्रित थे। अपने स्वर्गारोहण से पहले प्रभु यीशु ने शिष्यों को आज्ञा दी थी कि पृथ्वी की छोर तक उनकी गवाही देना और सुसमाचार सुनाना। अन्य-अन्य भाषाओं का दान देने के द्वारा परमेश्वर ने उन पर फिर से यह प्रकट किया कि सुसमाचार सब जातियों के लिए है।

परन्तु कुछ लोगों ने उनका मज़ाक उड़ाकर कहा कि वे मदिरा के नशे में हैं। तब पतरस ने खड़े होकर लोगों से बातें कीं।

पूरे संसार में प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार पिछले बीस शताब्दियों से सुनाया जा रहा है, परन्तु सबसे पहला सुसमाचार संदेश पतरस ने दिया था। उसके संदेश के तीन मुख्य बिंदु थे :

1. पहली बात जो पतरस ने कही वह यह थी कि प्रभु के शिष्य नशे में नहीं थे। फिर पतरस ने यह स्पष्ट किया कि उन्होंने जो कुछ देखा और सुना, वह पवित्र आत्मा के आने के विषय में योएल भविष्यवक्ता की भविष्यवाणी की पूर्णता है। (योएल 2:28-32 पढ़ें)।

2. उसने उन्हें परमेश्वर के वचन के आधार पर प्रभु यीशु मसीह के विषय में बताया। उसने पुराने नियम से संदेश दिया।

लिखित वचन के विरोध में आत्मा कभी कुछ नहीं कहता।

3. पश्चाताप करके प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लेने के लिए पतरस ने उन्हें प्रोत्साहित किया।

उस दिन पतरस का संदेश सुनने वालों में से 3000 लोगों ने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया। फिर वे सब एक साथ मिलकर परमेश्वर का वचन सुनने, संगति रखने, प्रार्थना में और प्रभु भोज मनाने में लौलीन रहे। वे बड़े आनंद और आशा से भरे हुए थे और जो लोग उद्धार पाते जा रहे थे उन्हें प्रभु प्रतिदिन उस कलीसिया में मिला देते । कलीसिया सभी विश्वासियों से मिलकर बनी है। यह मनुष्य का कार्य नहीं है परन्तु स्वयं प्रभु का, जो लोगों को उद्धार देते और उन्हें कलीसिया में जोड़ते हैं।

टिप्पणी :

पिन्तेकुस्त = पचासवाँ दिन (लैव्य. 23:15-16) पिन्तेकुस्त और कटनी का पर्व एक समान हैं।

प्रश्न :

1. पिन्तेकुस्त का क्या महत्व है?
2. कितने चेले एक साथ इकट्ठे हुए थे जब पवित्र आत्मा आए?
3. पतरस का संदेश सुनकर कितने लोगों ने उद्धार प्राप्त किया?
4. विश्वासियों ने एक साथ मिलकर क्या किया?
5. कलीसिया में कौन लोग जोड़े जाते हैं? यह कार्य कौन करता है?

पाठ-39

जन्म का लंगड़ा

प्रेरितों के कार्य, अध्याय 3

याद करें : और उसी के नाम ने, उस पर विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो, सामर्थ दी है। प्रेरितों. 3:16

मुख्य बिंदु : प्रभु की महिमा करो।

पाठ परिचय :

पिछले पाठ में हमने सीखा था कि पवित्र आत्मा के आने के पश्चात् आरंभिक मसीही लोग प्रभु यीशु की गवाही देने के लिए आनंद, स्तुति और सामर्थ से परिपूर्ण थे।

पाठ :

एक दिन पतरस और यूहन्ना मंदिर में गए। मंदिर में अनेक द्वार थे। उनमें से एक 'सुंदर' कहलाता था। कुछ लोग मिलकर एक जन्म के लंगड़े को उस द्वार पर बैठा देते थे, ताकि वह आने-जाने वालों से भीख माँग सके। जब उसने पतरस और यूहन्ना को मंदिर में जाते देखा, तो उनसे भीख माँगी। पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी ओर ध्यान से देखकर कहा, ''हमारी तरफ देख!''

वह उनसे कुछ पाने की आशा करते हुए उनकी ओर ताकने लगा। तब पतरस ने कहा, ''चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं, परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूँ। यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।'' और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया, और तुरंत उसके पाँवों और टखनों में बल आ गया और वह उछलकर खड़ा हो गया। फिर वह चलता और कूदता हुआ पतरस और यूहन्ना के साथ मंदिर में गया। सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति

करते देखकर, उसको पहचान लिया।

जब वह पतरस और यूहन्ना के साथ था, तब सब लोग बहुत आश्चर्य करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उनके पास दौड़े आए। लोगों की भीड़ देखकर, पतरस ने उस अवसर का लाभ उठाया और उनको प्रभु यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाया। साथ ही यह भी स्पष्ट कह दिया कि हमारी शक्ति या भक्ति ने नहीं, परन्तु प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ से यह मनुष्य चलने फिरने लगा है।

पतरस का संदेश, संक्षिप्त रूप में -

1. तीन बातें जो यहूदियों ने की (पद 13-15)

a. पकड़वा दिया

b. इन्कार किया

c. मार डाला

2. तीन बातें जो परमेश्वर ने की :

a. प्रभु यीशु को भेजा (पद 26)

b. उसे मृतकों में से जिलाया (पद 15)

c. महिमा की (पद 13)

3. तीन बातें जो सुनने वालों को करना था :

a. प्रभु की सुनना - (पद 22)

b. पश्चाताप करना

c. मन फिराना - (पद 19)

मनुष्यों ने उनके उद्धार के लिए भेजे गए परमेश्वर के पुत्र का तिरस्कार किया और उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा देकर सब कुछ के ऊपर ठहरा दिया। इसलिए मन फिराओ और प्रभु के पास लौट आओ, कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ।

टिप्पणी :

"सुंदर द्वार": संभवत: यह द्वार मंदिर के पूर्व की ओर जैतून पर्वत के सामने था। यह द्वार पीतल से बना हुआ और सोने चाँदी से मढ़ा हुआ था। यह अन्यजातियों के आँगन से यहूदियों के आंगन में जाने का प्रवेश द्वार था।

प्रश्न :

1. पतरस और यूहन्ना एक साथ कहाँ जा रहे थे?
2. पतरस ने उस लंगड़े को क्या दिया?
3. उस लंगड़े ने चंगा होने के बाद क्या किया?
4. पतरस ने अपने भाषण में कौन सी तीन बातें कहीं, जो यहूदियों ने प्रभु यीशु के साथ किया?
5. परमेश्वर की आज्ञानुसार हम सुननेवालों को क्या करना चाहिए?

पाठ-40

उनेसिमुस

फिलेमोन

याद करें : मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैंने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैंने विश्वास की रखवाली की है। 2 तीमु. 4:7

मुख्य बिंदु : प्रभु के अनुग्रह में बने रहो।

पाठ परिचय :

बाइबल के छियासठ पुस्तकों में से 5 ऐसी हैं जिनमें मात्र एक ही अध्याय है। फिलेमोन की पत्री उनमें से एक है। अन्य चार पुस्तकें हैं : ओबद्याह, 2 यूहन्ना, 3 यूहन्ना और यहूदा।

पाठ :

यह पत्री वह पत्र है जो पौलुस ने फिलेमोन को लिखा। फिलेमोन कुलुस्से का एक धनी व्यक्ति था जिसने पौलुस के सेवा कार्य के द्वारा उद्धार प्राप्त किया था। उन दिनों में धनवान लोग गुलामों को रखते थे। उन गुलामों को किसी बात की आज़ादी नहीं थी। उनेसिमुस, फिलेमोन के घर में गुलाम रहकर कार्य करता था, परन्तु वह अपने स्वामी का घर छोड़कर रोम भाग गया। उस समय पौलुस रोम में कैदी बनकर रह रहा था। उनेसिमुस वहाँ पौलुस से मिला, और सुसामचार सुना और उसने उद्धार प्राप्त किया। अपने नए जन्म के बाद उनेसिमुस अपने मालिक फिलेमोन से सुलह करना चाहता था। पौलुस भी उससे यही चाहता था। तब पौलुस ने फिलेमोन के नाम यह पत्र लिखा और तुखिकुस के हाथ से भेज दिया जो उनेसिमुस को वापस फिलेमोन के पास लेकर जा रहा था (कुलु. 4:7-9)। यह पत्री एक आदर्श पत्र है।

यह चार भागों में विभाजित है :

1. अभिवादन

2. फिलेमोन के प्रेम की सराहना

3. उनेसिमुस के लिए पौलुस का अनुनय

4. अंतिम अभिवादन और आशीर्वाद

पत्र के आरंभिक भाग से हमें फिलेमोन के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है। पौलुस उसे ''सहकर्मी'' कहते हैं। स्थानीय कलीसिया के लिए आराधना का स्थान फिलेमोन का घर था। उसने अपना घर प्रभु के लोगों के लिए खोल दिया था। उसकी पत्नी अफफिया भी एक विश्वासिनी थी। पौलुस अरखिप्पुस का भी अभिवादन करते हैं जो स्पष्टत: फिलेमोन का पुत्र था।

चौथे पद में प्रेरित पौलुस कहते हैं कि वह सदा अपनी प्रार्थनाओं में फिलेमोन को स्मरण करते हैं। यह एक सौभाग्य है कि प्रभु के लोग एक दूसरे के लिए प्रार्थना करें।

हम नहीं जानते कि उनेसिमुस ने क्या गलती की। पौलुस के पत्र से यह पता चलता है कि पहले वह अपने स्वामी के कुछ काम का नहीं था, और उसने फिलेमोन की कुछ हानि की थी, और उस पर अपने स्वामी का कर्ज था और वह अपने स्वामी से दूर चला गया। परन्तु पौलुस फिलेमोन से कहते हैं; ''उसे इस प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे।'' ''यदि उस पर तेरा कुछ आता है तो मेरे नाम पर लिख ले।''

गुलामों से जानवरों की तरह व्यवहार किया जाता था। परंतु प्रभु यीशु के लहू के द्वारा छुड़ाए गए गुलाम से पौलुस अपने पुत्र की तरह व्यवहार करते हैं। पौलुस, जो एक अपराधी गुलाम और उसके मालिक के बीच खड़े होकर, उस गुलाम के पक्ष में वकालत कर रहे हैं, वह प्रभु यीशु का प्रतीक है। प्रभु यीशु हमारे और परमेश्वर के बीच मध्यस्थता करते हैं। (1 तीमु. 2:5)।

टिप्पणी :

फिलेमोन की पत्री सन 60 और 65 के बीच रोम से लिखी गई थी। कहा जाता है कि सम्राट नीरो के राज्य के समय फिलेमोन की मृत्यु एक

शहीद के रूप में हुई। और कुलुस्से में फिलेमोन का घर 5वीं शताब्दी तक रहा।

कहा जाता है कि फिलेमोन ने उनेसिमुस को आज़ाद कर दिया था और बाद में उनेसिमुस इफिसुस की कलीसिया का एक प्राचीन बन गया।

प्रश्न :

1. बाइबल की कौन-कौन सी पुस्तकों में मात्र एक अध्याय है?
2. फिलेमोन कौन था? उसके बारे में कौन सी अच्छी बातें कही गई हैं?
3. फिलेमोन और उनेसिमुस में क्या संबंध था?
4. पौलुस ने उनेसिमुस के बारे में फिलेमोन को क्या लिखा?